



# विश्वामित्र की स्वोज



यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र

विद्या  
प्रकाशत मन्दिर  
दिल्ली-६

संस्करण प्रथम १९९१

© प्रकाशक

मूल्य बी रुपये

प्रकाशक  
पुरक

ॐ श्री प्रकाशक मन्दि, हरियाणु शिखी ६  
अपदीय प्रिन्टिण एजेंसी द्वारा  
हरिद्वार प्रेष दिस्ती ।

## मैं इतना ही कहूँगा—

'विस्वामित्र की खोज' नामक इस संग्रह में मेरी कहानियाँ संकलित हैं। अपनी इन कहानियों के बारे में कुछ विशेष न कह कर केवल मुझे इतना ही कहना है कि इस संग्रह की सभी कहानियाँ मेरी अपनी दृष्टि से मेरी स्पष्ट और बहु-वर्णित कहानियाँ हैं। टेक्नीक सैनी तथा भाव भूमि की दृष्टि से इस संग्रह की मेरी प्रत्येक कहानी अपने-अपने ढंग की है। ध्येय की भावभूमि पर मैंने अपनी इन कहानियों में एक नई बीज देने का प्रयास किया है।

घाटा है मिथ्य मिथ्य प्रकार का इस ग्रहण करण वाले पाठकों को हम एक संग्रह में ही सब कुछ मिल जायेगा।

संरिखा के संपादक प्रकाशक भाई थी त्रिदशनाम की का विशेष प्रयास है किन्तु "विस्वामित्र की खोज" नामक कहानी को इस संग्रह में सम्मिलित करने की याचा थी।

साले की होनी  
बीकानेर } }

पारबेन्द्र प्रसाद 'बगल'

बकसी ने मुँह सिकोड़ कर कहा "घरे खुप भी रह जानती हूँ तेरी इन मनगड़न्त कहानियों को पहचानती हूँ तुम्हारे स्वभाव को । जब कभी तू रात भर बायब रहता है, ऐसी ही गड़ी हुई बाँछें सुनाता है । पर धाम ।"

"हे बकसी ! भरम का मेरे पास कोई इलाज नहीं, पर जो कहता हूँ सोमाह धाना सच कहता हूँ । एक नूबसूरत औरत की प्रेम क्या है । सुनना चाहती है तो सुन ?

बकसी ने कुछ बेर तक सोचा और बाद में स्वीकृति-सूचक स्वर हिला दिया । बकसा भेद भरी मुस्कान के साथ बोला, "हे बकसी ! सामने वाले घसीघान बँगसे में तुने एक नूबसूरत बोंड़े को देखा होया ?"

बकसी ने जल्मुकता से कहा "हाँ-हाँ ! मपर हे बकसे ! इतर कई दिन से के दिखलाई नहीं पड़ रही हैं ।

"इसी का भेद तो तुम्हे बताने का रहा हूँ । कल धाम से ही मेरी तबीयत कुछ बेचैन थी । रम फुट सा रहा था । यहाँ की हर चीज मेरी बेचैनी को बढ़ा रही थी । साधारण में यहाँ से उड़ा और उठी के छत वाले पैड़ पर जा बठा । बिड़की की राह में कमरे की प्रत्येक वस्तु को घण्टी तरह बेस सकता था । तभी मैं सुनता हूँ तो क्या सुनता हूँ कि छत कमरे में लाँठी की वह नयानक घामाज हो रही है जिसमें मोठ के म्ठके साफ नजर आते थे । छत मोठ का वह रोमांचक संकेत था जिसके ध्यान करने पर से बदन के रोंपटे बड़े हो जाते हैं ।

"हे बकसी ! कमरे के ध्यल्लि को इतने जोर से लाँठी हुई कि मुझे महसूस हुआ कि उसका कलजा मुँह को धा जादेगा पर उसकी पली तला ने धाकर उसे संमाता । उठकी पीठ पर धपता कोमल हाप रखा और धाँधों में बर्दे ( वह दर बिस्तुम बनावटी था ) लाकर बोली, 'धरँबर ! जब तक तुम अपने के सन्देह को नहीं धून जाओगे तब तक मोठ तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ेगी ।

धरँबर ने बोसने की कीर्तिका की दर क्कल्लार घानेवासी धामी

## चकवे-चकवी की घात

पहली रात—

रात का अंधियारा संसार पर जैसे-जैसे छाता गया वैसे-वैसे चकवी का मन बेचम होता गया। उसने एक बार चारों ओर देखा—धूम्रता, अंधियारा और भय। वह तड़प उठी, “चकवा अब तक क्यों नहीं आया ?”

सभी पंखों की फड़फड़ाहट सुनाई पड़ी। चकवी चौकड़ी हो गई। देखा चकवा आया बीड़ा बसा आ रहा है। चकवा उसके सामने की घास पर आकर बैठ गया—बुधबाप। चकवी ने पूछा “हे चकवी! आज तेरा रण डंप बदला हुआ कैसा है? रोम की तरह प्यार क्यों नहीं करता ?”

चकवे ने संजी भाह छोड़ कर कहा, “आज मेरा मन उदास है प्रिये चकवी। वह बुनिया बड़ी मजीब और मक्कारी छ चरी हुई है और इत पर ये औरतें है राम।

धीरे-धीरे पर सगाये हुए धपूरे आरोप को मुकुर चकवी के ठेकर बदल गये। अपनी धाँसों को चकवे पर आमाती हुई बोली “बुध भी रही नो सी बूढ़े साकर बिस्ती हम को चली। मणवान बचाए इन मर्यों से निर्दोष औरतों पर अरवाचार—अनाचार करने वाली जाति का मैं रोम रोम पहचानती हूँ। कैसे धर्मराम बनकर छठ से बोल रहे हो? पहले बरा नु ही बठा कल रात भर जहाँ सायब रहा या ?

चकवा तुरन्त सँभला। अपने आपको गर्भीर बनाता हुआ भारी स्वर में बोला “मैं कल रात उस स्त्री के जीवन क भेद का पता मवाने आया था जिसने एक पुत्र के साथ बड़ा पोला किया था।

प्रसिद्ध कहानीकार एवं आद्यतम मित्र  
की ऐसीसात मुक्त की सम  
कमकला प्रवास के मधुर त्रिभुज धारों  
की स्मृति में ।

## चक्रे-चक्री की बात

पहली रात—

रात का चौबियारा संसार पर बीसे-बीसे छाता गया वध-बीसे चक्री का मन बेचैन होता गया। उसने एक बार चारों ओर देखा—दुःखता, प्रेमिता और मय। वह लड़प उठी, “चक्रे घब तक क्यों नहीं आया?”

सभी पंखों की फड़फड़ाहट सुनाई पड़ी। चक्री चौकड़ी हो गई। देखा चक्रे भागा बीड़ा बसा आ रहा है। चक्रे उसके सामने की दाह पर घाकर बैठ गया—बुपचाप। चक्री ने पूछा हि चक्रे! आज तेरा रंग-रंग बदला हुआ कैसा है? रोज की तरह प्यार क्यों नहीं करता?

चक्रे ने लंबी साह छोड़ कर कहा, ‘आज मेरा मन उदास है प्रिय चक्री! यह दुनिया बड़ी भजीब और मरकती से बरी हुई है और इन पर ये चीरों हे राम।’

धीर-धीर पर लमाये हुए धभरे धारों को मुनकर चक्री के ठेकर बदस गये। अपनी धाँकों को चक्रे पर जमाठी हुई बीसी “बुप भी खो नी सी बूहे साकर बिल्सी हज को बसी। भयवान बचाए इन मवों से निर्दोष धीरतों पर धर्याचार—धनाचार करने वाली जाति का मैं रोम रोम पहचानती हूँ। कैसे बमराज बनकर ठाठ से बोल रहे हो? पहले जरा नू ही बता कस रात भर कहीं मायब रहा था?

चक्रे गुरुर सेमता। अपने धापको गंभीर बनाता हुआ भारी स्वर में बोला “मैं कस रात उस स्त्री के जीवन के मेद का पता सपाने बसा गया था जिनने एक पुरुष के साथ बड़ा बोला किया था।



बकरी ने मुंह सिकोड़ कर कहा 'मरे हुए भी यह जानती हूँ ठीक इन मनगढ़स्त कहानियों को पहचानती हूँ तुम्हारे स्वभाव को । जब कभी तू रात भर गायब रहता है, ऐसी ही बड़ी हुई बार्ते सुनाता है । पर घाज - ।

"हे बकरी ! भरम का मेरे पास कोई इत्माज नहीं पर जो कहता हूँ सोसह घाजा सब कहता हूँ । एक भूबसुरत घोरत की प्रेम क्या है । मुनगा चाहती है तो मुन ?

बकरी ने कुछ देर तक सोचा घोर बाह में स्वीकृति-सूचक चिर हिला दिया । बकरी ने मरी मुस्कान के साथ बोला "हे बकरी ! सामने वाले घलीघान बंगले में तुने एक भूबसुरत जोड़े को देखा होमा ?"

बकरी ने उत्तुकता से कहा "हाँ-हाँ ! मर रहे बकरी ! इधर कई दिन से वे बिसलताई नहीं पड़ रहे हैं ।"

"इसी का मेद तो तुम्हे बताने जा रहा हूँ । कल शाम से ही मेरी तबीयत कुछ बेचैन थी । दम पुट सा रहा था । यहाँ की हर चीज मेरी बेचैनी को बढ़ा रही थी । साधारण में यहाँ से उड़ा घोर घसी के घत वाले पैड़ पर जा बटा । सिड़की की राह में कमरे की प्रत्येक वस्तु को घच्छी तरह देस सकता था । तभी मैं मुनगा हूँ तो क्या मुनगा हूँ कि उत कमरे में खाँसी की बह भवानक आवाज हो रही है जिसमें मीन के घटके साक नजर घाटे थे । उस भीत का बह रोमाँचक सवेत था जिसके घ्यान करने भर से बदन के रोंगटे धड़े हो जाते हैं ।

"हे बकरी ! कमरे के घ्यतिक को इतने घोर से खाँसी हुई कि मुझे महसूस हुआ कि उतका कसेजा मुँह की घा जादेमा पर उतकी बली लता ने घाकर उमे सेनामा । उतकी पीठ पर बनना कीमस हाथ रखा घोर घाँकों में बर्द ( वह बर्द बिलुन बनायटी था ) साकर बोली 'घर्टिबद ! जब तक तुम अपने के सन्नेह को नहीं भूम जाघोने तब तक मोठ तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ेगी ।"

घर्टिबद ने बोलने की बोधिय की पर लगातार घानेवाली खाँसी

ने उसे बोलने नहीं दिया। लता की घाँवों में एक पत्तीवर्ती की कुटिसता नाच रही थी। हे बकरी ! नारी ने अपने पुन से कोमल शरीर में कसा पत्तर-सा रिम छिपा रखा है ? मैंने धाव से पहले कभी यह विश्वास भी नहीं किया था कि नारी इतनी कठोर बन सकती है ?

‘यब तक बेचारा रोनी कुछ संभल गया था। बकरी-बकरी बह बोला ‘लता ! मुझे तुम पर किसी प्रकार का सन्देश नहीं है।’

‘मुझे विश्वास नहीं होता।’

तुम्हें तो मेरे हर विश्वास में अधिश्वास की छाया दीब पड़ती है, और क्यों न दीबे ? धाबिर हो न तुम औरत ही। धरनिद के झोंके पर बुझी-बुझी मुस्काम बिरक उठी अबे बह यह भाव बरसा रहा हो कि बह सचमुच खुस है।

लता ने इस पर अधिश्कार मरे स्वर में कहा ‘किर मुचासुरप से उपचार करने के बाद भी यह लून-’ ।’ लता की घाँवों में प्रसन्न बोम उठा। उपर्ष के भाव धरनिद के बेहरे पर धाये और गये। यह टूटते हुए स्वर में बोला ‘लून मेरे पाप का प्रायश्चित्त है। उस समय उसकी घाँवों में हे बकरी एक ऐसी बेरना पमक उठी थी, जिसे देख कर मेरा मन भर गया।

तभी उसकी पत्नी लता धरनी की भाँति मर्जी ‘मही उसकी मुदा से साफ मानुम हो रहा था कि यह अपन मन के तूफान को बाहर निकालना चाहती है लेकिन बह एकाएक संभल गई धमी तुम्हें धाराम की सक्त बकरत है तुम्हें पूरी तरह धाराम करना चाहिए ?’

बकरी ! चीट साए हुए साँप की तरह धरनिद फुरकार कर बासा ‘लता ! मैं धाराम करते बरु गया हूँ। हृद से ज्यादा धाराम ने मेरे मस्तिष्क और उसकी यतिविधियों को निकम्मा कर दिया है। जरा पाव बँठी न बँटकर कुछ बातें करो न।’ धर धरनिद ने उसे बड़ी विचित्र निपाह से देखा जिसने लता सह्य गई। हे बकरी ! लता क्यों सह्य

उसके विप्लवक नहीं था।

तुम बकरी ! धरविंद के पाद बचकत बैठती हुई बोसी 'यह नून तुम्हारे कर्म का फल नहीं, तुम्हारे पाप का प्रायश्चित्त नहीं बल्कि उस सम्बेह का फल है जिसने रोप का रूप धारण कर तुम्हारा सीमा जलनी कर दिया है।' और उस दीन-हीन पुरुष ने क्या उत्तर दिया ? बकरी ! वह दूटे हुए स्वर में एक साधारण शार्ङ्गिक की भाँति बोला 'कमी-कमी जीवन में यह नहीं मिसता जिसकी धारणी पाह करता है। कुछ धारणी हमे भाग्य का एक समझते हैं और मैं इसे परिस्थिति का फेर या सबबूरी समझता हूँ। और उसकी धारियों में उसके धन्तर की बेदना पनीभूत होकर झलझला उठी। फिर भी वह अपने होठों पर स्मित रेखाएँ खींचता हुआ बोला 'यह भी मेरे लिए सीमात्म्य की बात है कि तुम शुच हो। मेरे इस सात नून का रस यदि तुम्हारे जीवन को मूर्ख बना सकता है तो मेरे लिए इससे शुधी की बात क्या होगी ? सदा ! मैं केवल तुम्हें शुच देखना चाहता हूँ केवल तुम्हें।'

‘नहीं धरविंद, तुम मुझे शुच देखना चाहते ही नहीं।’

‘क्यों ?’

‘क्योंकि तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे इधारों पर नार्चूँ और इधारों जापना मेरे लिये आगम्य है। मैं तुम्हाएँ किसी भी शर्त पर बसव का साथ नहीं छोड़ सकती।’

हे बकरी ! यह है एक नारी का पति प्रेम और उसकी महानता। कितना बदल गया है इस्मान ? एक तरह पति से प्रेम और दूसरी तरह यह होय ! बाह ! बाह !!

‘फिर यह सत्य है कि तुम मुझे पुसा पुसा कर मारना चाहती हो।’ धरविंद ने तड़प कर कहा।

‘नहीं धरविंद, जिस दिन नारी का मन इतना बढोर हो जायेगा उस दिन संसार की बोनस बापा का धन्त हो जायेगा, धरवागों का दम पुट जायगा और सामनाय भीत पड़ेगी।’ सदा की धारियों में गावन की

वर्षा समझ पड़ी। सिसकते हुए बोली "जसज मुझ प्यार करता है यह मैं स्वयं नहीं समझ सकती। मगर मैं इतना जरूर जानती हूँ कि उसके प्यार में वह हुगंज नहीं जिसे समाज धर्मेतिक की संज्ञा देता है।"

'तुम रोने लगी मता इन धनमोल धनुषों को ध्येय में मत वहन दो ये जून से बनते हैं। ध्येय किया धर्येय ने। फिर उसे सांसी घाई। सांसी के साथ जून जाल जून। वह सिसकता हुआ तब स्वर में बोला 'जसज या जायेया और तुम्हारी इन प्यारी-प्यारी धाँसों में धाँसू देख कर उसे कितना दुःख होगा ? उसकी कविता जाग उठेगी। वह कह उठेगा कि इस मरमरी पलकों से धम्य नहीं बह रहे हैं ये ये मुझ हैं धार के धम्य हैं। पोंछ जाओ इन धाँसुओं को।

मता कराह उठी, 'धर्येय तुम गुप हो जाओ। धायर तुम्हारा यह व्यवहार मुझे अश्रमवात करने के लिए बिगड़ बरे। नारी के मर्म को तुम नहीं समझ सकते। कितनी शक्य बेरना धीर अमान्त हाहाकार के बीच वह अपने को भीविठ रखती है, यह भी तुम नहीं जान सकते। लेकिन नारी की सहज कोमलता पुरुष की प्रति पर आगुत हो ही जाती है और वह अपने समस्त मुखों की तिमांजसी देकर त्यागी बन जाती है। मुझे भी त्यागी बनना पड़ेया, गायब मुझे जसज से अपना सम्बन्ध विच्छेद करना पड़े, टूट जाना पड़े। सोच किन्तु दड़ता सं वह पुनः बोली 'मैं चाहती थी कि हम नये युग में नये बिस्वासों और नई परम्पराओं के साथ बिये। अनुचित बन्धन और अनुचित हस्तधेय नर और नारी दोनों के लिए अब व्येस्कर नहीं। लेकिन मैं देख रही हूँ कि पुरुष अपने संस्कार इतनी घासानी से नहीं छोड़ सकता। अपनी चिर धायिपत्य की शक्त का सहर्ष परित्राण नहीं कर सकता। चाहे वह कितना ही नया और धातुनिक क्यों न हो ?'

हे बकरी ! इसके बाद ऐसी जात बासी धाँसोंमें धाँसू भरकर बिनती करती हुई बोली 'मेरे नये व्यवहार से जसज के मातुके हृदय पर आबाध सनेया, उसे हमारी शंकीणता नर तरस धायगा। सोच जो

धरतिबंद, बन्धी तरह एक बार फिर सोच लो ।"

प्राणों से प्यारे बन्धी ! उस सुन्दर गायी ने हर प्रकार अंत तक अपने पति को धोखा दिया और अपने प्रेमी का प्रेम निभाया । पति कून की कै कर रहा था और पत्नी अपने प्रेमी की, उसकी भावना की उसके मातृक हृदय की चिन्ता में जुड़ी जा रही थी । छिः यह भीरत बात भी क्या होती है । लो बन्धी अवेरा हो क्या है, बिना फिर रात को भेंट होगी ।

दूसरी रात—

आकाश में तारों के फूल सित्त चुके थे । पास ही बहती आशा-नया मित्तमिम-मित्तमिम अयमया रही थीं । ठीक समय पर बन्धा आया और बन्धी का इत्तजार करने लगा । रात बसती जा रही थी पर बन्धी नहीं आई । बन्धा मु झला बला । उसके मन में तन्हेह बावुल हुआ । उसे बन्धी के निष्कलक अरिष पर कामे-काले अर्षों के बड़े-बड़े मोसे मखर धाने लग । वह बिचार ने लया, "हूँ ! बन्धी कुछ गामब रही है इसलिए ही बटकर पैर बिरोध नहीं करती कि मैं दो-दो बार-बार दिन कहीं गामब रहा हूँ ? बड़ी आत्माक है यह बन्धी ? पर धाम में धारी बात का नता मया कर ही सौध सूया । बस धा बाये वह ।

रात अपनी रफ्तार से भाग रही थी । लेकिन बन्धी नहीं आई । बिस्कुम नहीं आई । बन्धा बसजुन कर बाक हो गया ।

सूरज की प्रथम किरण प्राची में फूटी । बन्धने ने अपनी राह ली । तीसरी रात—

धाम बन्धी पहले से ही अपने की प्रतीक्षा कर रही थी । बन्धने की देसते ही वह अस्सहित होकर बोली "हे प्यारे बन्धने ! तुने उध दिन जो क्रिस्ता तुगाया था वह वास्तव में बहुत ही सच्चा था, पर प्राण मेरे ! वह एक ठरक्य था । मैं कत रात उसी पेड़ की छाब पर बैठी बैठी सता लो कहानी मुन रही थी ।

बकने का सारा मसूबा बाक में मिल गया। अपने दुस्ते की बहर हस्ती पी कर उसने पूछा "हे बकबी ! मुझे बैबकूफ बनाने की कोशिश बैकार पायेगी। वह तुम्ह अपनी कहानी क्यों सुनाने लयी ?"

बकने की इस बात पर बकबी खिसखिसा कर हँस पड़ी। बकबी सहम गया। बकबी ने अपनी बाँह से उसके सिर को दुरेव कर कहा "वह जोर जोर से अपनी डायरी पढ़ रही थी और मैं उसकी डायरी ध्यान से सुन रही थी। हे बकने ! यह मर्द जाति वास्तव में बड़ी मक्कार जाति है इस पर बिरबास कर नारी जाति ने सदा ही बोला उठाया है।

इतना कह बकबी एक पल के सिधे बिस्कुल खात हो गई। उसने अपनी बाँह को पेड़ की छाँव से रगड़ा और बोली प्राणेश्वर ! इन पुस्तकों ने स्त्रियों के मोतेपन का बड़ा ही गमल फयवा उठाया है। पहले-पहल वे नारियों के सामने बिस्कुल सीधे बन कर घाते हैं और बाद में वे पशु की तरह नारी के तन-मन से खेलन लगते हैं।

बात कई घात पुरानी है।

सदा और भरबिह बिलामत में साप साप पड़ते थे। अश्वे परिवारों से सम्बन्धित होने के कारण दोनों की पनिष्टता भीम ही बढ़ गई। भरबिह का व्यवहार बर्तान सदा के प्रति अत्यन्त मधुर और मर्यादित था इसलिये सदा का सहज आकर्षण धीरे धीरे भीत का बाना पहनने लगा। धीरे ही काल में दोनों एक दूसरे से प्रेम करने लगे। निश्चय हुआ कि नये सिर से जन्म-भूमि की मोद में जाते ही वे दोनों विवाह के पवित्र मूत्र में बँधे जायेंगे।

विद्या समाप्त करके जब वे भारत लौटे और सचमुच विवाह के बन्धन में बँध गये तब कृपायी सड़कियों व कृपाये सड़कों को इस जोड़ी से बाह उत्पन्न हुई पर दुर्बुगों ने उन्हें धापीबाँव ही दिया कि यह जोड़ी सदा बिरामु रहे। दुर्बुगों नेहाय पूतों फसे।

विवाह के सिर्फ ही साल बाद भरबिह के प्यार ने एक नई करबद

सी। सर्दी के मौसम में बिड़ तपड़ धरीर की धाम पर हल्की-हल्की बरखाई या काठी है उसी प्रकार धरबिह के व्यवहार में ज्येसा के बर्षन होने लगे। लता को इस पर आश्चर्य होने लगा। और होना भी चाहिये मेरे बच्चे ! जो पति अपनी प्रणामिया को सदा पन १ की छाया में रखता हो वह उससे कतरपमे तो पत्नी को सम्येह विभित धररज होना ही चाहिये।

बकरी चुा ही गई जैसे वह बोलती-बोलती बक गई हो। धायमान का एक ठारा टूट कर धन्देरे में लुप्त हो गया। बकरी की आँखों में व्यथा सी उँर उठी। वह मर भरे स्वर में बोली 'हे बच्चे ! वह ठेठि लम्बर जाति कि प्रेम जैसे पवित्र नाम पर कलंक लगा देती है।

मेरे मन के राजा ! उस रोज लता बाना जाकर विस्तरे पर करवटें बरस रही थी। क्योंकि धरबिह आजकल रात को बहुत देर से घाता था। घाता भी था तो पी कर। लेकिन लता को उसकी अनुपस्थिति में कम नहीं पड़ता था। वह बर्षन होकर करवटें बरसा करती थी।

एक बजा होया। बंटी बबी। लता ने द्वार जोसा तो उसके मुँह से नील निकल पड़ी। धरबिह के माने पर पट्टी बबी थी। पट्टी के बीच से लून का साम बाम बरक रहा था।

'इन्हें क्या हो गया ? उसने हठात पूछा। समीप खड़ी एक धर्यत लुम्बर सेडी ने बड़ी लजाकत से कहा धात्र इन्होंने बहुत धरिफ पी सी थी, इसलिये 'बार' की तीड़ियों से बिर पड़े।

"धात्र इन्होंने फिर पी ?"

"हर रोज पीते हैं मेरे साथ धर्यत में बसी, कुट नाइट।" सेडी के तेरिबस की जट जट की धाधात्र कुध देर तक होती रही।

"बिरा क्याल है की इत सेडी के बारे में धाय बाह में सोच लीजियेना वहमे धाय इते बिरवरे पर सेटा बीजिये" वह बलब का स्नेह धरा स्वर था। लता की प्रपम बँट इधी बग्गा की सेकर हुई थी। उत रात पक्क धरबिह के पास कुर्ती सबाये बैठा रहा। रात की पहरी बराधी

मता के बीच मता ने कभी स्त-स्त के जलज से कई प्रसन्न पूछे थे । उसके बारे में उसके परिवार के बारे में और उसके शौक के बारे में बिनाका उत्तर जलज ने सतिष्ठ संयत भाषा में दिया । उसने यह भी बताया कि धरविन्द उसका जिनगी दोस्त है । वे दोनों सहाठी भी रह चुके हैं ।

हे सत्यवान के प्रवृत्तार बच्चे । सबसे रयों ही धरविन्द जी की प्रीति सुनी रयीं ही उम्होंने अपनी उनीची घाँसों से बिना किसी को देख घस्कुट स्वर में कहा, 'रजिया कहाँ है ?'

'कौन रजिया ?' सता ने पूछा ।

'धोह ! तुम जलज ! तुम्हें जता जाना चाहिये या ।' धरविन्द ने घाहसान मरे स्वर में कहा ।

'जबा बाठा पर तुम्हारी पत्नी की पबड़ाहट देखकर जाने की हिम्मत नहीं हुई । अष्टय धब में जसा धबिप्य में इतना अधिक मठ पीना कि यह घराब तुम्हें ही पीने सये । पुढ मानिक सता देखी ।

'फिर कब घाहयेगा ।' सता न मझता से पूछा ।

'जब भी ने जाहा ।'

उस दिन के बाद मेरे बच्चे उस फूसठी कोमस सता का हृदय बिबीण होने लगा । जिसे वह प्रेम का प्रवृत्तार समझती थी उमजा बही पति उसके साथ इतना मर्यकर बिरबासबात करेगा यह उसने स्वप्न में भी नहीं सोचा था । उसके मस्तिष्क में प्रेम और पृथ्वा के कई तुष्टान घामे और सये । उसने धीरे धीरे प्रतिरोध करना धारम्भ किया । इस पर धरविन्द ने एक दिन साक सग्लों में कह दिया कि वह उसकी म्यवित गत बातों में बलस-बगदाजी न करे । पर वह तो पत्नी थी । उसका हृदय सामाजिक अधिकारों से प्राप्त उस पति को इतनी सरलता से छोड़ने की ठयार नहीं हुआ । वह निरय ऋगदा करने लगी । रोक टोक करने लगी पर परिश्राम कुछ नहीं निरसा ।

हे बच्चे ! यही तुम पुस्वों का महान् और पवित्र प्रेम है । मैं तो



कहती हूँ कि तुम सब को साथ समुन्दर पार भेज दिया जाय तो अच्छा हो। बच्चे ! धरबिंद से उपेक्षित तिरस्कृत और प्रताड़ित लता जलज की साधारण सहायुग्मि में पहुँची भारतीयता के दर्शन करने लगी। उस रात के बाद जलज प्रायः लता के घर जाता था। जलज ने पहले धरबिंद से भ्रमण किया समझाया समझौते की बातें कीं पर धरबिंद ने वही बात उसे कही जो उसने लता को कही थी कि मेरे व्यक्तिगत मामले अपने हैं। तब स्वामाधिक रूप से लता और जलज घनिष्ट हुंते गये। दोनों दुःख की बातें करते एक बात तो हो बड़ी अट-पटीय बातें करके कहकर सपा कर दिस हम्का कर सेते थे। लता पति के अत्याचार से पीड़ित थी और जलज बेधारा अनाथ था ही। चित्रकारी कर जीवन निर्वाह करता था। प्रेम से बहित उस आत्मा ने लता के स्नेह में जीवन के महाम् एव पवित्र बरदान के दर्शन किये।

पृथ्वी अपनी कुटी पर घूमती रही।

छः महीने में लता और धरबिंद का पति-पत्नी का सम्बन्ध नाम मात्र का रह गया। लता भी अब इस व्यवहार की धारिणी ही हो चुकी थी। धरबिंद क्या करता है उस से उसे जरा भी सरोकार नहीं था ?

अब जलज ही उनके जीवन का सहाय बन गया था। हे बच्चे ! अब स्नेह की सरिता उमड़ती है तब नारी का हृदय इतना विघाम और खदार हो जाता है कि भर उसमें जीवन के परम सुख की उपलब्धि करता है। वही प्राप्ति जलज कर रहा था।

सैकड़ बच्चे ! झूठे प्यार की जड़ सदा हरी नहीं रहती। एक दिन रजिया ने धरबिंद की घाघाघों पर पानी फेर कर किसी द्विचिन्मन साहब के साथ विवाह कर लिया। उस समय उस निमोड़े धरबिंद का साथ गया उठता। उसे महसूस हुआ कि रजिया ने उसके साथ जो प्रेम लीला रचाई थी उसकी बीबत उसे बहुत मँहनी पड़ी है। रजिया ने काफी पैसे इकट्ठे कर लिये हैं।

मेरे तिरमौर ! धरबिंद का नया लो उठर गया पर पहल नहीं मरा।

वह फिर भी सत्ता से दूर रहूँगा या धीर सत्ता ने उस पानथर के प्रति  
 बेबता ही बन्द कर दिया था। एक ही रबिया द्वारा सती चोट धीर  
 बुधरा बलज के प्रति सत्ता का अपार स्नेह फूल सी महकती धीर बुल  
 बुल सी महकती उन दोनों की जिन्दगी ने धरविद के मन में महसूस घाग  
 को जन्म दे दिया। अब वह बंटों उदास धीर मीन बैठा सत्ता धीर  
 असज के कहकहे सुनता था। हूँसी के उठते हुए फम्पर उसके कानों में  
 गर्म तेम से लगते थे पर मूबी घकड़ में वह मौन रहा निश्चल रहा।

धासिर एक दिन सत्ता धीर बलज ने मसूरी जाने का निश्चय  
 किया। धरविद अब अपने को रोक नहीं सका। पति के अधिकार की  
 भावना उसके हृदय को आन्दोलित करने लगी। वह धाया धीर सत्ता से  
 बोला "मैं तुम्हें मसूरी नहीं जाने दूँगा।"

"क्यों? सत्ता ने धार्षण्य से पूछा।

"तोय तुम्हारे धीर बलज क बारे में पहल से ही गमत बारखायें  
 बनाने हुए हैं धीर मसूरी जाने पर तो ।

"धाप को तो हम पर बिश्वास है कि हमारा स्नेह ।"

धरविद ने दसही बात को मुनी-अनमुनी बरके कहा "अस दरबान  
 रसोई बनाने वाले महापात्र से कह रहा था कि अपनी बीबी भी धाक-  
 कल बलज बापू की है। बिचारे धरविद बाबू तो - उसने जार का  
 उहाका लगाया। इस मैरी गैरत सहन नहीं कर सकती।

बेबा चकबा महापात्र। यह है तेरी कीम। सुद तो सब नूस-आम  
 कर जिस तिस के मुह मारते फिरने धीर बीबी अपने सच्चे हितैपी के  
 साथ नहीं था भी नहीं सकती। जिस हितैपी म उठक बुस को मुस बनाया  
 धीर उसक बुदिन की बारल ब्यबा की कम किया। पर मैरी बीर धीर  
 रइ प्रतीगी सत्ता ने कहा मैं आठेपी धीर बरूर जाठेगी। जब धाप  
 मैरे धरमानों को कुचनवर अत्याचार कर सकत हैं तो मैं अपने जीवन  
 के बुस पसों को कुपी से क्यों न गुजारूँ?"

"गुजारो, पर तुम वहाँ नहीं जा सकती।"

## शुक बोला, सुन राजा

एक राजा के दरबार में हीरामन ठोठा था। वह सिंहल द्वीप से भीषण संघाम के पश्चात् लाया गया था क्योंकि सिंहल द्वीप का राजा स्वयं उस मुली और चतुर शुक को सहजता से नहीं बना चाहता था। कुछ भी हो धार्वाजित के प्रतापी राजा के समस्त सिंहल नरेश को पराजित होना पड़ा और हीरामन प्राप्त कर लिया गया।

समय-समय राजा और शुक में इतनी भारी घास्मीयता हो गई जितनी राजा भरत और हिरण में थी। राजा एक क्षण-भर भी उस शुक का बियोग सहन नहीं कर सकता था और शुक भी उसके अनुपप के कारण अपने घठीठ को भूल गया था। वह स्वयं भी राजा से इस तरह दुःख-मिल गया था जैसे प्राण घरीर से।

एक दिन सम्पूर्ण दरबार सगा था उस दरबार के बीच राजा ने शुक से पूछा "क्यों हीरामन हमारी मृत्यु हो गई तब?"

हीरामन ने मन्धीर स्वर में कहा, "मृत्यु निदरप है पर बियोग नहीं। बियोग का कारण कुछ में क्वापि सहन नहीं कर सकता।"

"किर?"

'यदि आपका स्वगदास मुझसे पूर्व हुआ तो मैं भी अपने प्राण त्याग हुँगा। मैं आपके बिना एक पल भी नहीं रह सकता।

राजा और समस्त दरबारी हीरामन के इस कथन पर बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने हीरामन की घत्यन्त प्रससा की कि वह बड़ा ही स्वामि बल्ल है।

संयोग की बात कहिये कि राजा का देहान्त शुक के पूर्व ही गया। शुक इस संताप को सहन नहीं कर सका। वह राजा की साध पर

निरन्तर मँडराता रहा और अन्त में मर गया।

स्वयं में अम्बरारणों के मध्य उन दोनों का पुनः मिलन हुआ। राजा की विनाश-अवृत्ति दिन-प्रतिदिन बढ़ती गई। हीरामन का कार्य था—उन अम्बरारणों का मनोरञ्जन करना। वर्ष पर वर्ष बीठ गए।

अम्बरारणें शुक से मायाज होकर बोली "हम तुम से ऊब गई हैं। एक-ही कबारें, एक-सा कबानक और एक सा परिणाम। यदि तुम में कुछ मयापन नहीं है तब हमें कहानियाँ मत सुनाया करो।"

शुक का मुख उदास हो गया। उसने समस्त बहिरु पृच्छण उपनिषद तथा अन्य प्रचलित कबारें सुनायीं। अब वह बेचारा नहीं समझ पा रहा था कि वह अब क्या सुनाएँ। इधर राजा भी उससे गृष्ट हो गया। उसकी प्रतिभा का अपहास करने लगा।

तब शुक ने नरक-स्वर्ग में भ्रमण किया लेकिन नबीनता नाम की वहाँ कोई वस्तु ही नहीं थी। राजा उस पर अत्यन्त क्रोधित था और अम्बरारणें उससे धीमे मुह बात भी करना पसन्द नहीं करती थी। बचाव वह बहुत दुसी था।

राजा की चिन्ता बढ़ गई। शुक चार दिन से कहीं भाग गया था। अम्बरारणें भी अब अपने मन की कोस रही थीं कि क्यों वे हीरामन से नाराज हुए? उसने हमारी कितनी सेवा की थी।

पाँचवें दिन मुदित-बदन शुक सौटा। राजा ने ईरानी से पूछा "क्यों इतने दिन कहीं रहे?"

शुक ने उत्तर दिया, "मृत्यु-लोक में?"

अम्बरारणों के कान खड़े हो गए।

"वहाँ क्यों गए थे?"

मापके लिए कुछ नया लाने के लिए।"

"नया साए?"

"महाराज मृत्युलोक की दशा अच्छी नहीं है। वहाँ धर्म की जगह

'बाबों' का बोनबाला है। साम्यवाद समाजवाद पूँजीवाद सोषीवाद

छामाबाद प्रपठिबाद, प्रयोमबाद हाभाबाद, पत्नीबाद और न जाने क्या-क्या बाद ? पर मैं आपको वहाँ की एक कथा सुनाऊँगा । वह कथा पुँबीबादी में प्रेम के नए रूप का प्रतिनिधित्व करती है । नई टेकनिकमें लिखी गई है हूँ मैं कि आत्मा में टेकनिक का महान्वन नहीं मनमत्ता ।

शुक्र बोला—“सुन राजा कहानी इस तरह प्रारम्भ होती है—  
कथानक खँबर आता

एक सड़का है ‘क’ उसकी पत्नी है ‘ख’ । ‘घ’ की एक सहेली है जिस ‘ग’ । घबहर पाकर ‘घ’ ‘क’ को अपने प्रेम-वास में फँसा लेती है । क मरीची से तब है उनका प्रेम प्लेटोनिक नहीं इस मिट्टी में पला प्यार है । दोनों अपने अपने करों से बहाने बना कर जाते हैं और तृप्त होते हैं । कभी-कभी विपुल विनाश के सागर में घाकठ हुआ ‘क’ घबानक पुच्छा है— ‘बिबर हमारे प्रेम का परिणाम ? ‘घ’ उत्तर देती है ‘सुम बड़े कायर हो कल की घाव बिन्ता करते हो ?’

पहला घुमाव घसली कहानी —

बकप के हाथ काँप रहे थे जैसे उसके दोनों हाथों को मकबा मार गया हो । उसने बड़ी मुश्किल से अपनी बिन्नी निवासिनी पत्नी बन्धा की बिट्टी खोली और वह उसे दुबारा पढ़ने लगा—

‘पूज्यदेव ! आप का बचमिस्ता । खबर बहुत खैर है । ऐसा महसूस होता है कि बघानक तला से मेरा तमाम छठिर भुमस आया ।

मुकस जाने से इस पीड़ा से मृत्यु बहुत घच्छी है । मैं अपने हृदय में कोमल नाचनाएँ और घबुची अधिस्तापाएँ लिए मर जाना पछन्द कछेमी यदि आप जीवन-दीप बुमजे के पूर्व अपना बर्जम मुझे दे दें तो ? आपका मुलाब-सा बहुत घाव रह रह कर मेरे घाये घुम रहा है । मोह के बन्धन टूटने के लिए कसमसा रहे हैं । बिबिन धनुभूति घन्तर में है जिस में बर्जम नहीं कर सकती । फिर मैं आपम प्रार्थना है कि जब पढ़ें ही आप बिस्ती रचाना हो जाइए । आपकी बेर वहाँ खँबेरा कर देवी ।

आपकी अपनी-बन्धा

स्वल्प किञ्चित्पुत्र विमूढ़-सा बड़ा रहा। उसके धाये बन्दा को मुस्कानाय स्पष्ट धीर पाण्डुर मुक्त भाव उठा। बन्दा की कीटरसायिनी घाँसों में जीवन धीर मृत्यु का कस्सा-प्लाबित संवर्ष। बुष्कल्पनाओं में उसे बाधास बना दिया। सभाट पर स्वेद-कण उमर घाए।

स्मात् से अपने पसीने पोंछकर वह कुर्सी पर बैठ गया। बिट्टी को सीने पर रख कर अपने घाप को घावबन्त करता हुआ बोला—कैसी है यह धनहोनी? कस सत में बिसकुल स्वल्प धीर घाव मरणासन्न। धारबर्ष? उसके बिचारों ने उसे भय बिना यह सब भाव्य के खेस है।

अप्रत्याशित उद्वेगी दृष्टि बिट्टी के दूसरे धार गई। उसने बस्ती से पड़ा। नेत्रों में ज्योति अमक उठी। घमरों पर घाघा मरी मुस्कान भाव गई। सता ने मोठियों जैसे सख्यों में लिखा था—“स्वल्पजी इसे पढ़ कर मराने की बकरत नहीं। यह तो घापकी कथा ‘मुक्ति का घाहान’ का एक घघ है। वह कहानी मुझे बहुत प्रिय लगी। घाप मारी के घमर में बितना बैठ कर सिखते हैं। असम स पत्र लिख। छप

—स्नेहमता

स्वल्प के हीठों पर बेबमरी मुस्कान भाव उठी। उसने बत को फिर घूम लिया।

तिरा घुमाव हो मकड़ियों—

घाँसों में धारबर्ष भर कर स्नेहमता ने पूछा “देखो बन्दा इन मकड़ियों ने कसे मुन्हर जान बुता है।

अनिष्ट सहेलियाँ बन्दा धीर स्नेहमता के भेतते-देवते को मकड़ियों ने एक अत्यन्त कसात्मक जास बुन दिया था।

बन्दा अपनी बंबीर दृष्टि को सता पर घाङ्गी हुई बोली ‘अप धीर संगठन का यही पत्र होता है। उमर कथा के माम पर अपनी तजनी से हृदी बोट की धीर मुन्पुराई ‘दंति तुम्हाग घनीय स्नेह मुक्त पर नहीं होता तो इस बन्धा में मरी लीन देग माम कन्धा? तुम्हारे प्यार ने मुक्त नया जीवन दिया है। मैं तुम्हारा विम मूढ़ने बुझिया

भरा कक ?”

“सि: पपसी इसमें शुद्धिया भरा करने की क्या बात है ? तुम लो धेरी सपी बहिन-सी हो ।

तभी चन्दा की दृष्टि उस आसे की धोर गई । आसे पर कोई तीसरी मकड़ी नाच रही थी । चन्दा ने उसे संकेत करके पूछा “यह तीसरी मकड़ी कौन है ?

सला कृत्रिम बुस्से से बोली “मैं इन मकड़ियों के खानदान को नहीं जानती ।

चन्दा तीसरी मोटी मकड़ी को देखती रही । पहले की बड़ी मकड़ी ने मोटी मकड़ी का स्वागत किया । चन्दा ने उछसकर कहा “यह तीसरी भी मकड़ी ही है धीर मे पहले आसे जकर मियाँ-बीबी होंगे ।”

सला शोक पड़ी । ‘मियाँ-बीबी ?

धीर देखते-देखते बड़ी ने सारा आला तोड़ दिया क्योंकि घामन्तुक मकड़ी से उसका पति प्यार करन भगा । बड़ी मकड़ी अपनी उपेक्षा सह नहीं सकी । दोनों में झगड़-मुठ प्रारम्भ हो गया । आल टूट गया । बिल खत्म हो गया ।

सला बोली “प्यार में स्वतन्त्रता होनी चाहिये ।

चन्दा उसे धर्य मरी दृष्टि से देखती रही ।

मकड़ा कर्नस धीर भूँछे—

इंगर्मंड रिटर्न कर्नस चाचा अपनी भूँछों पर ताव बैठे हुए सला के कमरे में पुन । सला अपने “बाय” आसों में कंभी कर रही थी । अपने बनेठ संमरमर-से कहरे पर पाडडर लगाकर उसने एक बार अपने रूप को स्वय निहारा । उसके धबधों पर मन्द स्मित रिसाएँ नाथी “हलो सला !” कर्नस चाचा उसके समीप आये । अपने बाए हाथ की पेंसिलियों को उसके बालों में घससा कर बोले, “देखी यह देखो हमने आखिर इसे मार ही दिया ।”

पीछे में मरी मकड़ी का प्रतिबिम्ब देखकर सला एक बार चिड़क

पड़ी। हठत चान्वा की घोर सम्मुख होकर बोली "घाप बड़े क्रुधत ही संकल। इस प्रकार किसी को नहीं मारना चाहिये।"

'बयों, तुम नहीं जानती तब यह कम्बल मेरी मूर्खों पर नाचने लगा। मूर्खों पर' कर्मस की मूर्खों पर' घोर बह भी तुम्हारी 'घाटी' के सामने। अबने हमारा बड़ा मजाकबनाया। कहने सपी देना मरू छोटा-सा मकड़ा भी घापकी मूर्खों पर नाचता है ? मैं उसके व्यस्य को समझ गया और श्लेष में घाकर इसे मकड़े-हैबम भेज दिया। तब ! यह एक कर्मस की मूर्खें हैं। मेरी मूर्खों से बेसने बातों को मैं मोती नहीं मार दूंगा ? घूट नहीं कर दूँगा ? — एक नहीं पूरी पाँच मोती मारूँगा। मेरी मूर्खें बालिग ! यह मेरी मूर्खें हैं कर्मस बिस्कर्स।

कर्मस बहुत उत्तोजित हो गये।

तब मयभीत-सी अपने घरस को देखने सपी। घरस ने और से घट्टहास करके कहा "डर रही हो बालिग ! मत डरो यह तो मकड़ा है, मकड़ा तो हम फेंक पाता है।"

कर्मस ने मकड़े को बरबात्रे से बाहर फेंक दिया।

बापस घाकर वे बोने, "पाँच बज रहा है तब चान्वा घात्र बापस राजस्थान जा रही है। क्या बह अपने पति से नहीं मिलेगी।"

"नहीं उसकी कुटिया समाप्त हो गई ?"

"बोह घबरा ।" कर्मस बाधा बसे गये।

तब के भस्तिपत्र में ये शब्द पूँजते रहे—कर्मस मूर्खें मकड़ा गोसी और पाँच गोमी ।

बह पत्तीने से तरबतर हो गई। उसका 'मेकमप' सराब हो गया। तरबूज चाकू और तैटोदिक लव —

चान्वा के जाने के बाद तब अपने को कुछ दुर्बल समझन लगी। स्वल्प के बह बराबर घा रहे थे। वे प्र म-पत्र उम व्यस्य व घबरा कर रहे थे। घात्र भी एक पत्र घाया था। स्वल्प ने लिखा था—तब कुम्बे



मिलकर मेरी आत्मा धार्मिक आत्म का अनुभव करेगी। कुम्हार बचाओ नहीं कर और कैसे मिला जाये ?

अपने धार्मिक कमरे की धारमदेह महामती धम्मा वर पड़ी-पड़ी लता करवटें बदन रही थी। बार-बार वह अपना मुँह तकिये में छिपा लेती थी। उसके समीप एक मासिक-पत्र पड़ा था। जहाँमें लता की एक कहानी बनाने लगी थी। यह कहानी स्वरूप में संशोधित करके प्रकाशित कराई थी। कहानी में एक विषय का विषय था। प्रेम का विवेचन था। प्रेम ही लता भी स्वरूप से प्रेम करने लगी है। वह एक बार उस पुस्तक को प्रथम देखेगी जो इतने प्यारे जट लिखा करता है।

“मिस साहिबा-वह तरबूज।” नीकर में उसका ध्यान रूपा किया।

“रख दो। लता ने कहा और नीकर बसा गया।

लता भारी मन लिए उठी। देखा कि नीकर तरबूज की फाँकों के साथ बाँध भी रख गया है। लण धर के लिए उसका पाठ मर्म हो गया कि यह कैसा गया है कि लता भी लगी नहीं। मैं बाबा से कहकर इसे ‘विसमिस’ करवा लूँगी। अचानक वह सान्त हो गई। उसे स्वयं के सम्बन्ध ही था— ‘लेखक-हृदय लकीर-सा कोमल और कठला का प्रवृत्त होता है। वह सापर-सा बम्बीर और हिमाचल-सा शीतल होता है। उसे कहने मत दो मिये।” वह निश्चल हो गई। बंजर वह बाँध से काटी हुई बड़ी फाँकों को छोटे टुकड़ों में परिचित करने लगी। काट कर यह उन्हें एक-एक करके खाने लगी। विचारों की लम्बवता के कारण उसके हृदय का तरबूज निरकर बाँध पर था गिरा। टुकड़ा फिर कट गया।

वह बड़बड़ा उठी—“बाँध तरबूज पर गिरे तो तरबूज कटे”  
तरबूज बाँध पर गिरे तो तरबूज कटे” । पर बीज बीज सब भी काबल है। बीज कभी नहीं कटता।” लता बुत और पम्बीर। कुछ देर बाद वह उदस कर बोसी “बीज कभी भी लता को प्राप्त नहीं होता, आत्मा कभी नहीं मरती। आत्मा धार्मिक प्रेम” ? मैं स्वरूप

से धार्मिक प्रेम कहेगी । धार्मिक ध्यार ...महान् प्रेम । धार्मिकमय । सता के मन में धार्मिक प्रेम की किरणें विकीर्ण होकर प्रकाश-शुभ में परिणत हो गईं ।

उसने स्वल्प को तुरन्त पत्र लिखा—“तुम धनुक दिन, धनुक यात्री से पा जाओ ।

प्रथम प्राप्ति मक्षिका पात —

स्वल्प हिस्सी खाना हुआ । हिस्सी स्टेसन पर सता पाकुसता से स्वल्प की प्रतीक्षा कर रही थी । बार-बार वह अपने हृद-भंग से स्वल्प का बिन निकाल कर देख रही थी ।

यात्री आई ।

सता ने देखा । एक अत्यन्त बुरसूरत मौजवान की गहरे-नीले चरमे के धीधों में अँकुरी घाबें कितनी की सोच रही हैं । वह धीरे-धीरे संस्रिष्ट दृष्टि से चारों ओर देखती उसके समीप गई । पीछे से मनवान बन कर अपने मूहुत स्वर में पुकारा—“स्वल्प !”

स्वल्प तुरन्त सता की ओर घूमा । उसके मुँह से बसचित्र के हीरो की भाँति टूटते घण निकले कि पर सता ! वह उसे देखता रहा—प्रपसक घोर निरन्तर ।

“बसिए बसिए ।

कुसी ने सामान उठाया । के लोगों साप-साप बसे ।

“हलो सता ! तुम कहाँ ?” ‘अंकन’ कहीं से कजाब में हठी की तरह पा टपके ।

वह पबरा गई । बोमी “ओह बहिन जी तो मत्रे में हैं । धाप बिट्टी सिधैं लो मेरा भी नमस्ते कह दीजिएगा ।”

स्वल्प हीरान परेषान ओर बिगूड़ ।

“बसिए बाबा जी ।” सता बसी गई । स्वल्प तुरन्त सब समझ गया । नाटक बितेन के प्रवेश पर हीरोइन का सधन धमिनय । सता बाबा को बिकरु की तिमीं रिता कर लौट आई । बबराई हुई पाकर

मिथकर मेरी धारणा भौतिक धारणा का अनुभव करेगी। कृपया बताओ कहीं अब धीरे कैसे मिला जाये ?

अपने धार्मिक कमरे की धारणाबद्ध मजबूती काया पर पड़ी-पड़ी लता करवटें बस रही थी। बार-बार वह अपना मुँह ठकिये में छिपा लेती थी। उसके समीप एक मासिक-पत्र पड़ा था। उसमें लता की एक कहानी 'संभारें' छपी थी। यह कहानी स्वल्प में संशोभित करके प्रकाशित करायी थी। कहानी में एक विषय का विवरण था। प्रेम का विवेचन था। प्रेम ही लता की स्वरूप से प्रेम करने लगी है। वह एक बार उस पुस्तक को अस्वयं देखेगी जो इतने प्यारे लता लिखा करता है।

'मिथ साहिबा-वह तरबूज !' लीकर से उसका ध्यान भंग किया।

'रख दो।' लता ने कहा धीरे लीकर चला गया।

लता घाटी मन लिए चली। देखा कि लीकर तरबूज की फाँकों के साथ बाहु भी रख गया है। अस्त मर के लिए उसका पारा भंग हो गया कि यह कैसा गया है कि बाधा भी लगी नहीं। मैं बाधा से कहकर इसे 'विस्तारित' करवा चुकी। अचानक वह शान्त हो गई। उसे स्वल्प के अन्त यात्र ही था— लेखक-हृदय मजबूत-सा कोमल और बरखा का अन्तार होता है। वह सतर-सा मज्जीर धीरे हिमाचल-सा शीतल होता है। उसे कहकर मत बो दिये।" वह निवचन हो गई। अन्तर्गत वह बाहु से काटी हुई बड़ी फाँकों को छोटे टुकड़ों में विस्तार करने लगी। काट कर यह उन्हें एक-एक करके खाने लगी। विचारों की लम्पता के कारण उसके हाथ का तरबूज गिरकर बाहु पर जा पिया। टुकड़ा फिर कट गया।

वह कहकड़ा बटी— "बाहु तरबूज पर गिरे तो तरबूज कटे तरबूज बाहु पर गिरे तो तरबूज कटे" "। पर बीज " बीज धर्म भी काम्य है। बीज नहीं कटता। लता बुत धीरे मज्जीर। कुछ देर बाद वह उत्पन्न कर बोली "बीज कभी भी नाश को प्राप्त नहीं होता धारणा कभी नहीं मट्टी। धारणा धार्मिक प्रेम" ? मैं स्वरूप

से धार्मिक प्रेम कर्कषी । धार्मिक प्यार ...महान् प्रेम । धार्मिकमय ।  
 सता के मन में धार्मिक प्रेम की किरणें बिकीर्ण होकर प्रकाश-शुभ में  
 परिखल हो गई ।

उसने स्वरूप को तुरन्त पच मिला—“तुम धमुक बिन धमुक पाड़ी  
 से घा बाघो ।

प्रथम प्राप्ते भक्तिका पात —

स्वरूप दिल्ली रवाना हुआ । दिल्ली स्टेशन पर सता घाकुसता से  
 स्वरूप की प्रतीक्षा कर रही थी । बार-बार वह अपने हृद-बीज से स्वरूप  
 का बिभ निकाल कर देख रही थी ।

पाड़ी घाई ।

सता ने देखा, एक अत्यन्त खूबसूरत नौजवान की पहरे-नील बस्मे  
 के पीछों में झँकती धाँसे किसी को सोच रही हैं । वह धीरे-धीरे  
 संयुक्त दृष्टि से चारों ओर देखती उसके समीप गई । पीछे से धनवान  
 बन कर अपने मूढ स्व म पुकारा—“स्वरूप !”

स्वरूप तुरन्त सता की ओर घूमा । उसके मुँह से अनभिन्न के हीरों  
 की मति टूटते शब्द निकले ‘डि पर सता । वह उसे देखता  
 रहा—धपसक धीर निरन्तर ।

“बसिए बसिए ।

कुमी से सामान उठया । वे दोनों साप-साप बने ।

‘हलो सता । तुम कहाँ ?’ ‘धकत’ कही से कबाब में हठी की  
 तरह घा टपके ।

वह पबरा गई । बोली “धोह बहिन वी तो मज में हैं । घाप चिट्टी  
 तिखें तो मेरा भी नपस्ते वह बीबिएवा ।”

स्वरूप हृदान परेघान धीर बिमूड़ ।

“बसिए बाबा वी ।” सता बनी गई । स्वरूप तुरन्त सब समझ  
 गया । नाटक बिभेन के प्रवेध पर हीरोइन का सकल धमिनय । सता  
 बाबा को‘बिफरु की तिप्पी’ दिया कर सौट घाई । पबराई हुई घाकर

बोली 'नजब हो जाता स्वल्प यदि बाबा तुम्हें पहचान लेते तो बड़ा सम्मर्भ हो जाता । बड़े धौधौडोंस हैं । बिनायत से क्या सीट फ़ाए धब जम्हें बुता भी बिनायती ही पसन्द है । जलो धब पहरी करी ।

टेकरी में बेंडे । टेकरी पसी ।

स्वरूप लता के घदमुत सौन्दर्य पर मुग्ध हो गया ।

धबीब लडकी से भेंट —

‘ऐसा हमें कोई नहीं मिसा जिससे हम प्रेम कर सकें ।’

‘बुबुरा कहते हैं, बीजने पर तो प्रमु भी मिल सकते हैं ।’

‘मुझे तो नहीं मिसा ।’

ऐसा न कहिए, इस सत्य-स्यामता भूमि पर एक-एक-से विद्याल बिल लिये बेंडे हैं ।’

‘मुझे कोई पसन्द नहीं धाया । जो पसन्द धाए, वे पहले से ही ‘प्रियेड’ हैं । वे धपने प्यार में फेंड नहीं सकते ।’

प्रमात का समय ।

स्वरूप लता की एक नेपासिन सहेली से बार्ताभाप कर रहा था । वह नेपास के एक उच्च बराने से सम्बन्धित थी । सलौनी थी मजेबार थी खुसे बिसबासी थी । स्वरूप से खूब पुसमिल पई थी । लता ने भी स्वरूप को कहा था कि वह नेपासिन ही हमारे सभी व्यापारों को बाबती है ।

यहाँ लता सभेरे भी बजे घाठी घीर धाम को छः बजे तक सीटती थी । इस बीच वे रोमांस को लेकर नपुर कल्पनाओं के बितान बुना करतें थे । बरती पर लड़े होकर चाँद-सिठारों घीर प्रकृति के नजारों में धपने धारिक प्यार की पबित्रता के दर्शन करतें थे ।

साठ दिन बीत पये ।

इन साठ दिनों में धतृषि का नारा स्वरूप धण-भर भी धी नहीं सका । वह बेचन हो पडा । वह इस धर्त पर लता के साथ कबापि नहीं रह सकता ।

घाठने दिन नेपालिन सड़की ने उसकी मानसिक स्थिति को देख कर कहा, "स्वरूप जी ! आप ब्यज सिर का दर्द खरीब रहे हैं । रींग स्तान में गुसाब की उम्मीर करना निरी मूर्खता है ।

स्वरूप चिन्तित हो गया ।

मगरमच्छ को तस्वीर —

कर्मस के कमरे में एक बड़ी मगरमच्छ की तस्वीर थी । यह तस्वीर कर्मस अपनी बंबेज पत्नी 'प्रेटीप्लस' के कहने पर उसे बिनायत से खरीद कर लाया था । घाब कर्मस की बीबी को न मासूम क्यों क्रोध घा गया कि उसने मगरमच्छ की तस्वीर को गोली मार दी ।

गोली की आवाज सुनकर सता बीड़ी-शीड़ी घाई "क्या हुआ घाणी?"

बहु धाबेध में बोली— 'गोली मार दी तुम्हारे प्रकस नहीं-नहीं इस मगरमच्छ को ।'

'क्यों ? सता समझ गई—घांटी के घन्स की पूछा को ।

"बड़ा खतरनाक है । यह मुझे ला गया । मेरी बबानी को ला गया । गालों की सानी घोर घाँसों की बमक को ला गया । घब इसरे पर टाक बगाये बैठा है । बानिम भूत, बोसेबाज !" घांटी का सारा बदन कांप रहा था ।

"बानिम मुझे मठ रोको मैं इसे एक गोली घोर मारूंगी ।" घांटी ने विनीत स्वर में कहा ।

'पाबल ही गई हो घांटी ! यह तस्वीर है, मगरमच्छ की एक खूब सूख तस्वीर ।' सता ने समझाया ।

"खूबसूरत !" घांटी ब्यपा से अधिमूठ होकर बड़बड़ाई "यह मगर खूबसूरतों की इस प्रकार बरबाद करणा है, जिस प्रकार बीमक सवड़ी को । इसने भिरे साथ थोखा किया । मैं इसे मारूंगी बकर मारूंगी कह कर बहु कमरे से बाहर बसी गई ।

सता ने मन-ही-मन कहा, "बिबकूत घोरत ।"

ज्योतीनिक लक्ष की हत्या —

स्वरूप ।

मधुर प्रेम के धार्मिक धनीकिक धानन्द की तड़पती चिह्न में यदि तुम्हें जीवन भर बलना स्वीकार नहीं है तो मैं उस धार्मिक प्रेम की हत्या करने को तैयार हूँ । स्वरूप तुम मेरे भाषी सुख स्वप्न हो बहिष्प हो सर्वस्व हो । आज मैं बहुत बेचैन हूँ, इतनी बेचैन जितनी 'प्रेमियों' के लिए 'बुलियट' । लेकिन मेरे भाषा बड़े प्रोबोडान्स हैं परत-हमाय निम्न संसार से दूर एकान्त में ! बस एक पक्ष ही सुरन्द भा भाषी । —तथा

स्वरूप धीर लता का महानितन हुआ । इधर-उधर, प्रकृति की सुरस्य गौर में पर्वत की लीठम छाया में, यही-यही धीर कही-कही ।

इस दिन के बाद फिर विद्योय हो गया । अत्यन्त पीड़ा-जनक धीर प्रसन्न ।

अन्त समय लता ने कहा था "एक बकर लिलना, 'प्रिय लता' करके सम्बोधित करना धीर 'तुम्हारी अपनी कम्पा' कहकर समाप्त करना । 'धनकस समझे' एत कम्पा का है ।"

महिषान की बधा में —

'सोनी' के प्रेम में अपना अस्तित्व विभोन करने वाला महिषान 'विनाश' के निजारे अपनी प्रेमिका को दाद में इतना लम्बय धीर बैसुष हो गया था कि उसे यह भी पता नहीं बना कि वह कहीं धीर किङ्ग हाम में है ? सुनते हैं कि एक बार सोनी ने जाने में देर करती तो उसने अपने हाथ के बाकू से अपनी जीब को धीर डामा । प्रेम की इस परम सीया पर किछ पत्पर-बिस इन्तान का बिल नहीं पिबसेगा ?

स्वरूप पर भी यही लम्बकता ब्याप्त थी । वह दफ्तर का कार्य करते करते 'मला-लता' लिखने लग गया था । लता के साथ कविताएँ भी प्रारम्भ हुईं । परिणाम यह निकला कि प्रेम रस-हीन मानिक ने उसे डाँट दिया ।

फिर क्या था ?

उसने तुरन्त इस्वीफा लिख कर दे दिया—“मैं किसी का ऐसा गुलाम नहीं हूँ जो मिक्रिकियां सुनूँ। थाप अपनी मौकरी संभालिए।”

उसी दिन उससे सठा को अपनी स्थिति से अवगत कर दिया।

बीचे दिन सठा द्वारा भेजा गया दो सौ रुपए का मनिफॉन्डर आया। नीचे लिखा था—‘तुम हो तो सब कुछ है तुम नहीं तो कुछ नहीं।’

स्वरूप धरम् से बहादुर उठा ‘ऐसी मौकियां सठा कितनी ही खरोह सकती है। इमलैण्ड रिटर्न रिटावर्न कर्नल जमींदार मि० मट्टाचार्य की भतीजी है वह ! इकसीठी भतीजी !

कुछ खबरी —

सठा की चिट्ठी आई थी। उसने लिखा था—‘स्वरूप ! हमारे तुम्हारे मिशन पर जो गया बीज पनपा उसे मैंने डॉक्टर अम्दानी की सहायता से बड़ी आसानी से नष्ट कर दिया है। यह तुम्हारे लिए कुछ खबरी है क्योंकि यदि ‘अंकुश’ को इस भेद का पता पस बाठा तो वे तुम्हें मोती स मार देते क्योंकि आजकल वे बूहा भी बिभायती ही पसन्द करते हैं।’

तुमने लिखा कि हम विवाह कर ल ? यह सम्भव नहीं है ? फिर विवाह कोई जरूरी नहीं। बन्दा बुली मढ़की नहीं इस पर वह मेरी सखी है। फिर कर्नल बाबा धीर गोमी।

‘रैर रुपए भेज रही हैं। जरूरत हो तो फिर मेरा सेना सेक्रेन अभी दिस्ती मत घाना।’

तुम्हारी—सठा

सेनों की महक जीवन का सौन्दर्य —

स्वरूप का पाठ गर्म हो गया। इस प्रकार वह उधे विवाह से क्यों टास रही है ? थाप में अन्दा मान जाएगी। भारतीय स्थियों की चांति उधे घन्ठ में समझते का ही सहारा सेना पड़ेगा। वह आज दिस्ती पकर



बायेगा । तब ही कहेगा कि यदि वह उसे सच्चा प्यार करती है तो क्यों नहीं इन झूठे बम्बनों को छोड़कर मुक्त हो जाती ।

“मैं तुम्हारे बिना एक पल भी जीवित नहीं रह सकता । मेरे दिल को हर संत में तुम बस गई हो । तुम्हारे सितारण कासे बाघ के पंखों की तरह ही मेरे जीवन का माधुर्य और लौक्य है ।” वह बेचेमी में अपने घायल से कह रहा था—“मैं किसी भी शत्रु को लड़ने नहीं कर सकता । मजदूर भी भाँति ‘सैना’ को किसी भी मूरत में हासिल करूँगा—मर कर भी या जीकर भी ।”

वह दिल्ली रवाना हो गया ।

अंत बिदिया उठ गई—

बेचार ‘क’ हज़ारों बम्बीयों से भर चुकी थी । उसे उस नेपायिन लड़की से पता चला कि ‘य’ तो मात्र बिलायत का रङ्ग है । ‘क’ बाबता-ता एरोडम पहुँचा । उसका रोम रोम पुकार रहा था । मैट्रिन सबसे पहले वहाँ उसे ‘ब’ दिसलाई पड़ी । वह मुन्न हो गया । ‘क’ भ्रमना बना, “यहाँ कैसे था मैं ?” ‘क’ ने अपने पति को प्रसन्नता से प्रणाम किया ।

उसी ‘य’ वहाँ था पहुँची । मुस्कृत कर बोली, “अब तरब करे जाई, ईकतमय तो मैं जा रही हूँ ।

‘स’ के नेत्र मुक्त हुए ।

‘ग’ स्नेहसिक्त स्वर में बोली “दिवर स’ इस महान् लेखक श्रीमातृ ‘क’ को प्यार से रसना और मिस्टर ‘क’ घाय भी हमारी ‘ब’ को पलकों की छनी बना कर रखिबेना । यह हज़ारी लक्ष्मी प्रिय छोली है । अर सीटने पर ही घेंट होती । अन्ना केअर-बेस, टा-टा ।”

लेन उड़ा ।

‘घ’ ने बार में कहा—‘क’ दिवनी अन्नी छोली है । मुझे अपनी बिदाई पर तार देकर बुनबाया भवमान उसे जीवन में लक्ष्मी करे ।

‘क’ ‘ब’ के पंखों को नहीं मुन सका । वह अन्ना, अतिहिंसा विष

घटा घीर बैदना से तिममिता रहा था। ज्येन आकास में पंच पैलाए पंघी की तरह उड़ रहा था।

शुक ने पूछा—'बताइए महाशय यह कहानी आपको कैसी लगी?

बीच में ही अच्युताएँ बोल उठी—'बहुत सुन्दर ! विस्तृत नहीं ! क्या इस प्रकार पुरुषों को सन्तु बनकर धीरवें मस्त रह सकती हैं। तब तो पूँजीवादी युग में हमें भी जाना चाहिए।

राजा अधिकार-पूरुष स्वर में बोला—'लेकिन मैं तुम सब को वहाँ जाने की आज्ञा नहीं दे सकता। क्यों शुक इसका घंठ तो बुरा ही हुआ होगा ?'

शुक ने कहा—'सत्य को जानने के लिए जिज्ञासु बन जाइए, देखिये, 'य' का परिणाम क्या होता है ?

कह कर शुक चलास हो गया।



भूमता-भूमता फिर धावा धीर अपने कानों की घोबरकोट से डँकता हुआ बोला "तेरे घर नहीं है ?"

"घर !" उसने झुपी घाँसों से सिपाही को घूरा, "यदि घर होता तो अपने बच्चे को इस तरह रोने देती । कैसी न धाबाटा फिस्ने की तरह बिलबिमा रहा है बेचारा ।"

बीड़ी का जोर का कण खींचते हुए सिपाही बोला "तू खंडहर में क्यों नहीं जमी जाती वहाँ सनीं छे बचने के लिए भोट तो है । उसने बीड़ी को माड़ा "बल मैं तुम्हें खंडहर बठा देता हूँ ।" सिपाही जोड़ा धावे बढ़ा कि सारा कर्मेश स्वर में चिस्सायी, "धो नासपीटे, तेरी घर बासी नहीं है जो हर इंडिया में भुँड बामने की कोसिध कर रहा है । नइबड़ करेया सो बस देख ही लेना ।"

सिपाही की बीड़ी समाप्त हो गयी थी । उसने अपने दोनों हाथ अपनी जेब में बाम लिये । चिस्सिमानी हँसी हँस कर बोला "तेरा ससम कही है ?"

बहु बोले इसके पहले ही हबेसी से मपुर स्वर मुनाई पड़ा—"जा जा रे-जा बाममबाँ—।"

"मेरा ससम किसी बायल के घर नये में भुत हुआ पड़ा होया धीर तेरी बीबी ? उसने अपने उत्तर के साथ ही सबास किया ।

जलते प्रंगारे-सा प्रफ़ सिपाही के कलेजे पर घया । सिपाही धबध हो उठा । उसके न चाहते हुए भी धबानक ये छत्र निरम ही मने, मेरो घर बासी । हठात् बहु दका धीर ठमठमा कर बोला, "बपबास कहीं की, सानी को मार-मार कर—बस कोतबासी ।"

"धरे बाहु, इतना अस्दी यमं केये ही क्या ? कोतबासी से जा कर क्या करेबा मेरा ?" सारा ने नियक हो कर कहा ।

"सानी के ।"

सहसा हबेसी में छे एक-एक करके लीब निकलने लये । सिपाही को चुप होना पड़ा । सभी लीब उँचे ठबके के ये । कुछ पीछे भी थीं,

बीसवीं घड़ी की। बाँव हेयर घीर रंगबिरंगी, नयी तरह की पोशाक पहने। साय उन्हें विस्मय-भरी दृष्टि से देख रही थी।

‘सिंठ। एक पतली घावाज साय क कामों में पड़ी।

सिपाही अपनी बीट पर घस्यन्त मुस्ती से बकर निकालने लगा। साय की नियाहें उस घोर सठ गयी नपर की प्रसिद्ध मर्तकी सेठ से करमीरी छाल मीप रही थी घीर सेठ उसे एक मच्छ की तरह बोनो हान धाने बढ़ा कर बे रहा था।

नालदार बूतों की ओर की ठक।

सारा ने देखा सिपाही सेठ को सामा कर रहा है घीर सेठ इतनी सापरवाही से एक अपना उसकी घोर फेंक रहा है बस कोई गरीब धराबी बूती हुई हठी को किसी कुल को फेंकता है।

‘बिधर्म नहीं क।’ सारा ने मन-ही-मन कहा घीर उसी जगह में सिङ्ग-सिंघट कर सोने का प्रयास करने लगी।

बाँव कुहरे के कारण डँक गया। बर्फीली हवा तेज हो गयी घीर बोड़ी-बोड़ी बरफ भी बिरल सनी। सिपाही ठड से लड रहा था। बूट बीड़ी धोबरकोट बह बच्चा घीर साय।

हवा रुक नहीं रही थी। उसका तीखापन बढ़ता ही जा रहा था। साय का दुबला-पतल जिस्म अपने बच्चे को जितनी बर्मी दे सकता था है रहा था पर उसका परोर स्वयं ठंडा हो रहा था वह उस ठंड की बरसात में स्वयं डूब गयी थी।

बच्चा बीस—एक सम्बी बीड, एक टूटती सिङ्गुइती छटपटाती बीस को घामर त्रिखयी से दूर-दूर जा रही थी।

सन् सन् सन् सन्—हवा की घावाज।

ठक-ठक-ठक। नालदार बूतों की नयानक ध्वनि। बीड़ी का बहरीला पुर्वा। संवधानित-सी साय उठी संवधानित-सी मुड़ी घीर सिपाही के पाम धा कर पड़ी हो गयी। सिपाही चौक गया, घायल बह किसी घीर बिचार में सोया हुआ था। बीड़ी की साय उसके हाथ से

सूट कर घब्रकार में लोटपोट होने लगी। सिपाही को चुलाई बिना  
 "सिपाही जी, मेरे बच्चे को घोबरकोट से डेक दीजिए, नहीं तो ठंड से  
 घबड़ कर मर जाएगा बच्चा यह मेरे दिल का राजा है। अब कुछ है।

सनसनाती हुआ रोने के स्वर में पूज रही थी। रोती हुई हुआ  
 सनसना कर धारा के सन्धों को सिपाही के कान से दूर से जाने की  
 चेष्टा कर रही थी। सिपाही एक साल ठिठका फिर उसका सिपाहीपन  
 जाया। कड़क कर बोला "घब्र्रा अब मैं मासपीटे से 'सिपाही जी' हो  
 गया जब सामी यहाँ घोबर-बोबर को नहीं है।"

धारा अब भी नहीं रुटी। उसका बच्चा धीरे धीरे रोने लगा।  
 ठंड बढ़ती ही जा रही थी।

"घरे दे दे न क्यों माम-पोसा हो रहा है मैं तो पगमी हूँ, पूँ ही  
 बक दिया करती हूँ। घब्र्रा, माफ़ कर। देख मेरा बच्चा ठंड से ।"  
 यह कर धारा सिपाही के नज़बीक आ गयी। अपने सूते स्तन को घससा  
 पीड़ा को भूल कर, उसने एक बार फिर उसे अपने बच्चे के मुँह में डाल  
 दिया। बच्चा बोंक की तरह इस्मान के जिरम के सहू को चूसने लगा।  
 इस्मान को नसे पीड़ा से फटी जा रही थी।

सिपाही जी माँधों में वासना बहक उठी "इसका बाप कौन है?"  
 "इसका बाप ? धारा बोली।

"हाँ इसका बाप ?"—सिपाही धीरे से बोला।

"कहाँ पढ़ा होगा नसे में पूर। बहुत आचार्य है सिपाही जी।"

"तब एक शर्त पर मैं अपना घोबरकोट तुम्हें दे सकता हूँ।"

"शर्त कौन सी धरे ?" वह सतावली हो कर बोली।

"मुझ से सट कर बैठना होगा।

"क्या कहा मासपीटे, सट कर बैठना होगा।" वह अपने जिरम की  
 पीड़ा जैसे भूल गयी थी।

"जिसमें घोबरकोट तेरे बच्चे को ठंड से बचा देना धीरे तु मुझे।"

बालती नहीं, शीश का बिस्म धाग की भट्टी होता है।”

“बदमाश !”

“तू मेरी बात नहीं मालेगी तो तेरा बच्चा मर जाएगा।

बच्चा बच्चा बच्चा ! सारा पराजित हो गयी। उसके सामने बच्चे का तड़प-तड़प कर मरना साकार हो उठा। वह मानुष हो उठी। वह बसबती हो कर सोचने लगी “यह महुँघा सिपाही ठहरा उमरु धीर घतान करूँ, क्या कर लेगा यह ?” उसकी विचारधारा बदली, अपनी नीयत को लोटी करेगा तो मैं इसे करूँ ही क्या आऊँगी। मैं जब अपने ससम से नहीं बरती फिर मना इससे क्यों दूँ ? और वह बहादुरी के साथ बोली “या नासपीटे बंठा जा मेरे पास।

सिपाही उससे सट कर बैठ गया “घाब की रात कितनी घबरी है !”

कसेजा धर्म हो गया ?” सारा ने सिपाही का हाथ पकड़ कर कहा “दिसो मैं माँ हूँ तू कहे तो तुम्हे अपने सीने से लगा लू मुझे कोई घम कम नहीं घाती है। धरे, नासपीटे माँ को धर्म कैसे ? और वह सिपाही को अपनी बाहों में कसने लगी।

सिपाही चुप रहा—सबस धीर निस्वंध।

पुन की रात बर्फानी ठहर सनसनाती हुआ सिपाही को सया जैसे उसके बाजू में धोने रहकर रहे हैं और उसके समीप बैठे एक माँ की मजबूत होती बाहें लपी सलासों-सी लय रखी हैं। वह धर्म हो रहा है। घाब असन धाग। वह जैसे इस पवित्र धाम से पस जाएगा।

वह हड़बड़ा कर उठा और बीड़ियाँ टटोलने सया लेकिन बीड़ियाँ घोबरकोट में थी जिसमें एक माँ का बच्चा लिपटा पड़ा था। वह पुनः गतिहीन-सा बैठ गया पर सारा के बिस्म की धाग सपटें।

जिस पावन दिशोह की धाब में बस कर सारा सिपाही से सट कर बैठे थी उससे सिपाही की देह गया धारमा ही भुलस गयी। वह सारा के समीप घपिक नहीं बैठ सका।

बह पुन' सठा धीर बीट पर बभकर लिकासने लया । मातघार  
 फूलों की ठक ठक ठक पुन' पूँब सठी । धीर साय कह रही बी,  
 'मा, नासपीटे तुम्हे ठड खप जाएवी घा मुम्मे सगकर बैठ जा ।  
 धरे, रेख, ठड बड़ रही है घा घा न । इसके स्वर में वासस्य  
 बा, धपुर्ब वासस्य । पवित्र धीर घट्ट स्नेह बाय । मुख पर तेब धीर  
 निर्भयता ।

---

## पर्दा, मन और उड़ानें

सिनेमा हॉल में खिंचा हुआ ।

दर्द पर सांग घाट में किसी सुन्दरी का चेहरा दिखलाई पड़ा । मैं उसे और छे देखने लगा । बीरे-बीरे साय-घाट मिडियम-घाट में बरसा और मिडियम क्लोज में बदल गया । मुक्त क्या था मानो और का दुकड़ा । मन को सात रोकना चाहा पर वह रुका नहीं । सहजसे-सहजसे मीन भावा में वह ही उठ्य "काश वह धमिलेबी मेरी प्रेमिका होती । कितना मासक और धार्कश्यक सौरभ है इसका ! पेरिस-सम्राज्य की स्टाटिक की प्राचीन प्रतिमा "बीनस डे मिलो" की भाँति इसका बदन सुमन्य और मांसम है । कालीदास बलिष्ठ सौन्दर्य की प्रतीक समुन्वसा सद्य । ओह कितना पण्डित होता यह मेरी होती और मैं इसका ।

मन की पहली उड़ान के पक्ष फट गए । वह नि-सहाय-सी चरती के कठोर विज्ञान-संज्ञ पर धा बिठी । पर्दा को धनी-धनी पीड़नी के मौजन के प्रकाश से परमासित बा, धब एक धत्यन्त मही मीठी और कुस्य सुबती की हँसी से पूँज रहा है । मने की बात यह है कि वह बेटीस धरीर वाली सुबती धब अपने दुबसे-यतसे प्रमी के समझ अपनी तुवली-बाणी में प्रेम प्रकणन कर रही है । वह दुबसा-यतसा प्रमी इस धर से सफ़र हुआ बा रहा है कि कहीं यह मेरी प्रेमसी मुस्यर गिर गई तो मेरा कबुमार निकल पाएगा । वह मोटी सुबती उस पर झुकती हुई छिन्नी-जगत के रटे रटाए घब्य बोस रही है—“मैं तुम पर जान देती हूँ मैं तेरी सभा हूँ, मैं तेरे प्यार में कितनी दुबली हो गई हूँ ।”—चूँकि वह तुवसाती थी इसलिए सारे बधक ठहाका लगा कर हँस रहे थे ।

पर्दा और उस पर धर्मत पण्डितों का दृश्य ।



साथ घाट ।

हीरो हीरोइन को बिछुड़ाने के लिए एक नए पात्र की सर्जना ।  
इसलिए उस पगडण्डी पर बसंत की भाँति सम्मोहित मुबतौ एक भीत—  
“यह भूमती जबानी ” पाठी हुई मजबूती या रही है ।

सैमरा धाने बढ़ता है ।

बसोब-बप घाट ।

मुझ गुपमा से दीप्त मुझ ।

मन की उस मुझ-दर्शन से शक्ति विभी । चढ़ान के नए पंख धा गए ।  
वाह धाना यह तो यमुना से बिल्कुल मिलती-जुलती है । जब मैं अठारह  
बर्ष का था और वह नदी पर तिर्य छिर पर बढ़ा लिए पानी भरने जाती  
थी । मैं उसे देखता था और वह मुझे देखती थी । कितना धमका होता कि  
इस हीरोइन को रेशमी पोशाक पहना भी जाती और वह भी राजस्थानी ।  
इस पर जयपुर की शूनरी । फिर यह, यह मेरी यमुना

उड़ान जाती थी विस्मृति-वसंत पर मड़पाने लगी—मेरा पाँव ।  
वह समझती हुई खिटा । किसी कसी के समान यमुना अपने जीवन से  
भाटाकान्त धीरे-धीरे कम चलाती गयी थी और धा रही है । उसके  
स्वर में गहरी मिठास और मोह है । बसुन्धरा का पति अपनी बेटी  
के स्वर में पून कर विभिन्नता को अपनी छारबठ मपुरिमा से मुँजित  
कर रहा है ।

“साबर पाखी लेने जाँचें सा मजर सब जाए,

मूँचि सोछली छाड़ी से डोला रंग जड़ जाए ।”

भीत मजूर और उल्टा पीत ।

“धो मजदूर के बाप ।” बही मोटी कामेडियम हीरोइन जोर से  
भीसी । मैंने सिद्धपिद्य कर देया । मिडियम घाट । परों पर बही मजूरी  
हीरोइन ।

इस बार उस मोटी हीरोइन ने धँसेजी पोशाक पहन रखी है । वह  
पीशाक में उसका स्तन घीर “धँकर का काटून” सा लप रहा है । इस

पर जब वह अपने झुंहे पटक कर बसती है, बाप रे बाप ! मन भिन्ना  
रह्य । बिचारों में तुफान । मन अपने बाप से कह उठा कि सेंसरवाले ऐसी  
'बर्षों पास कर देते हैं ?' क्या भी स्वाभाविकता नहीं ऐसी बटनार्यों में ।

जबान में मन का यौव दिया — "अपनी समुदाय का बाप भी इतना ही  
मोटा था पर उसकी बुद्धि इस कामेदियन हीरोइन की तरह मोटी नहीं  
थी । वह हर अन्ध्रि चीज का विरोध करता था । कहता था कि ऐसा  
करने से उसे बहुत मुच मिलता है ।"

'सटाक' बीर की धाराज ।

हीरो ने पाँव की लकड़ी शीशू का बड़ा फोड़ दिया है । शीशू गुस्से  
में धर बठी ।

कलौज-आप घाट ।

"तूने मेरा बड़ा बर्षों फोड़ा ?" शीशू कहती है ।

'तूने मेरा बिल बर्षों फोड़ा ।' — हीरो उत्तर देता है ।

बसकों में जोर की हँसी ।

'बकर इस बहानी का सेकक कोई मुछी होगा ।' — मेरा मन  
झुंझना कर कह उठ्य — मैंने अपने बीचन के बीच अर्पण में गुजारे हैं  
पर इस प्रकार बड़ा फोड़ते मैंने धाज तक नहीं देखा । ये पिन्म वाले भी  
बिचिन चीज हैं ।

जबान मयुर हो गई ।

मैं यदि पिन्म का सेकक होता तो भटना को इस तरह रखता कि  
पाँव की बमकट्टी पर एक सॉप पड़ा है । हीरोइन बड़ा लिए धाती है ।  
वह माती में नुनमुना रही है । धजानक वह सॉप को देखकर बौक पड़ती  
है और बड़ा पूर पाता है । वह मयभीत डिरली-सी भावती हुई बिन्ना  
रही है — 'सॉप सॉप सॉप ।

हीरो बिमभित्ताकर हँस पड़ता है । हीरोइन उस हँसते हुए देखकर  
बिन्नुस गुस्से में धा जाती है । जोप में उमका सौंदय और निबडर भावा  
है । एक कानी-सी लठ उसके नुडीत श्योप पर धा जाती है । वह सॉप ~

पटक कर कहती है—मुझे बचाता नहीं, बाँट निकाल रहा है। देख, साँप। हीरो निर्याक उस घोर बड़ता है। चूँकि हीरोइन सबसे सच्चा प्यार करती है, इसलिए वह उसे रोकती है। पर हीरो बेसी बघारता हुआ साँप को हृदय में उठ लेता है। हीरोइन बेहोश हो जाती है। जब फॉर्से जीतती है तब वह साँप के टुकड़े-टुकड़े पाती है। घोर तुने साँप के टुकड़े कर दिये बड़े बहादुर हो। घोर वह जाकर साँप को देखती है। साँप कागज का है। वह मुझे में ऐंठती हुई कहती है कि तू मेरे पड़े के पीछे। घोर हीरो मुस्कराकर कहता है कि इन पीछों के बदले तू मुझे क्यों नहीं ले लेती? घोर बिबेट

सगीत का धारम्भ। धोंरेजी की कोई कफ रा तीसी बुन।

मिने पर्वे पर देया। उड़ान समीत के धारोइन में धपना तात्तम्य तोड़ बठी।

होटम का हृष्य।

घाट अण-अण में बदलते जा रहे हैं।

कोई नर्तकी धर्धनमन-सी पा रही है।

“घो मिस्टर बारी

कलकता तुमने पाँच लड़ा,

घोर बाम्बे होया घापी।”

कुछ बेर तक मन इस ऊटपटांग गीत पर बिचारता रहा फिर उड़ान बढ़ी “यह नीत है या तुकों की बिबड़ी। मैं होता तो कम से कम नीरख घोर बीरेन्द्र मिश्र का कबिसम्मेलन में प्रसिद्ध हुआ नीत दे देता। घाह हिन्दी के ये कवि भी क्या लुब हैं? जब जाने लगते हैं तब मोठा मस्त हो जाते हैं।

धचानक संगीत घोर पैय हुआ।

मिने सुना है कि किस्सी कवि महाराज प्रयोगवाहियों से सीपी टफकर से रहे हैं—

“मेरी मेरी बोड़ी का बजदूत है प्यार,

में तो हैं इतबार, तू है सोमवार ।”

मेरे समीप बठे हुए एक महाशय ने अपने मित्र से पुनः कह कर कहा कि माई क्या जोरदार गीत सिखा है और यह छन्दको भी गजब की भाषा रही है । बार अपने नौ भाने तो इसी गीत पर धटा हो गए ।

समीप का बर्तक दूसरे ही क्षण फुसफुसा उठा—“देख न बार ।”

मेरा ध्यान मग्न हो गया ।

हीरो हीरो को अपने आलिङ्गन में आबद्ध किए प्यार भरे स्वर में कह रहा है—“सितमगर, अधिक मत ठड़पाओ मैं तुम्हारा हूँ और तुम्हारा ही रहूँगा ।”

उड़ान घठीत की ओर पुनः निद्रा मग्न-सी उड़ी—मैं और यमुना । वेतों की बोपहरी । बानों की चुमती हुई सोंधी-सोंधी हवाई ।

यमुना और मेरा प्यार अपने चर्मोत्कर्ष पर था । तब वह एक दिन पबराकर बोली थी—रामू, मेरे और तेरे प्यार का निबाह कैसे होगा ? तू ठहरा बाह्य और मैं ठहरी शोषराइन । और फिर बाप ?”

मेरे पास कोई उचित उत्तर नहीं था । बचपन में नानी और दादी से कुछ प्रेम की कहानियाँ सुनी थीं । एक राजकुमार का एक राजकुमारी से प्यार हो गया । राजकुमार का बाप राजकुमारी को नहीं चाहता था इसलिए एक रात के दोनों मार गए ।

मैंने भी उसे यही कहा—‘माओ यमुना हम दोनों मार पसैं ।’

तभी पर्व पर हीरो का मुँह हीरोइन के चार-से टुकड़े की ओर बढ़ा । मारच झोज-मप ।

“हो-हो, हुरे-हुरे, सी-सी और सीटियाँ ।”

हास में हल्लावाजी मच गई ।

मैं मन मसोसकर रह गया क्योंकि गुस्सा मुझ इतना घामा था कि मैं पिटाचार पर एक भाषण दे देता । पर ।

चुप्पी और और चुप्पी ।

हीरो और हीरोइन अपना व्यापार कर रहे हैं ।

उठान में फिर करबट बदली ।

मैं धीरे यमुना ।

वह ठीक इसी हीरोइन की तरह मेरे बाहुपाद में है । मैं भाषातिरेक में बहता हूँ । कहता हूँ—“सितमपर इस तरह न ठग्याओ ।” वह मुझ से विभक्त हो जाती है । कुछ नाराजगी से पूछती है— ‘तब यह सितमपर पर क्या होता है ? तब तेरे की साठ मज्रा पुझीवर कर दिया । सौत का टैम्पो ही खरम कर दिया । जब यह पाँव की बीजू सितमपर का मतसब समझ सकती है तब मेरी यमुना क्यों नहीं समझती ।’

अचानक मुझे मेरी मूर्खता पर पुस्छा घाया । भरे इन चित्रों में तो सीता धीरे राम भी विपुल उड़ूँ बीसते हैं ।

तभी एक पास बैठे कुहूँ ने उत्तेजित होकर कहा “भरे बनीत देख तो सही यह हूर तो हीरो को वह रही है कि बस अब मुझे अपने में समा से, क्या पजब का पोज है ? कमाभ साजबाब

बम्बई का कोसाहम पूर्ण जीवन । मनुष्यों का उमडता हुपा सैलाब । अकिंचन के समूह से एक किराट का रूप । मुझे महकुस हुपा—

मैं सेंसर बोर्ड का अध्यक्ष हूँ । कम मैंने एक बिज का सो रिसा बा । बिज ऐतिहासिक बा । किस इतिहास से लिया गया बा पता ही नहीं सगता बा । ही उस बिज के बोनीं निर्माताओं ने बिज के मुक घोर घंघ में इतना बकर लिख दिया बा कि इत बिज की कहानी किसी देश के इतिहास से सम्बन्धित नहीं है ।

यह क्या बकवास है । उन्हें पकड़ोत भरे स्वर में कहता हूँ । धाम आपने इतिहास को ऐसे तोड़ा है धीरे बस धाप धौरंगजब की अकबर का बाप बता देंगे या प्रताप के बेटे से अकबर की बैटी का ‘सब’ करा देंगे धीरे सिरा देंगे कि वह कहानी कात्मिक या क्यानी है । ताइब, ऐसा करने से धाप बनता का बस्याण पोड़े ही कर सफ़ठे हैं ।

तभी अरमठकर कुर्मी डूट गई ।

हाथ में जोर की हुई धीरे एक दो बार सीटियाँ भी बनीं ।

समीपवासों ने पीठ मारा— 'हो गई बाबी रात भव पर जागे दे ।'  
मिडिबम घाट बस रहा है ।

हीरोइन हीरो के कम रात बापस जाने का बापदा कर रही है ।  
मिडि-घाट ।

बिलेन कह रहा है "तुम मेरे रास्ते से हट जाओ बरना अभी कागज  
के पुसों की तरह चका दिए जाओगे ।"

हीरो ज़ी तरह डपट कर कहता है— 'जारे ना ! कहीं ऐसा न हो  
पाए कि लेने के लेने पड़ जायें तू इस का सुरमन है सरदार का घपराधी  
है शके इसकाता है तुने खीनू को पायब कर दिया है । मैं तुम्हे यमलोक  
पहुँचा कर द्य सूँवा ।

'अच्छा ।' बिलेन घागे बड़का है ।

फिर क्रिमकांग और बार्सिह की प्री कृस्ती ।

मिडिबम-घाट ।

बिलेन और हीरो की बजाओकड़ी घब भी बस रही है । कहीं  
हटा-नटा बिलेन और कहीं साबारण हीरो । पर बाह रे हीरो । नूब ही  
बाय बठा रहा है । क्यों न बठावा ?

उदान सबेरे की घोर सड़ी ।

बाय के समय बीबी ने मुझसे कहा था कि घाज मैंने एक स्वप्न देखा  
कि घाप भीमबाय बंख से लड़ रह हैं । मैं एक बार तो उसे बैसकर डर  
पई पर बार में घापने बहु पीतरा दिखाया कि वह बाँरें घाने बिल ।

'ओ मारा बाह मगा मुबका । दर्लक मोंय जोय के मारे उद्वकने  
सणे । इय बभाईवन पर है और बैसते-बैसते बिलेन अपनी गावरर्धन  
पूजा करा कर बस पड़ता है ।

घब मुझसे नहीं रहा गया । मैंने अपने मल पड़ोनी ने बीमे से  
पूछा—'क्यों आई गया यह नकुरम है ?'

उसने सबकत मेरी और बैसकर कहा— 'माई माहूब मैं बैबल घुटेर  
टेममेंट के लिए पिबकर बैसता हूँ । घण्डे-बुरे पर घाप बिचार कीजिए ।

घबने पुनः मुँह फेर लिया ।

मेरे हृदय में उसकी इस बैरुखी का बड़ा आघात पहुँचा । यह एक तरह से मेरा आघातक क्षणमान था । घोर मैं परों से हट कर फिर उड़ल भरने लगा । कभी यह बौबाबतत भरे समीप बैठा व्यक्ति मेरे दस्तर में आ गया तो मैं उसे बत्के मार कर निकाल दूँगा । बरतमीज शिष्टता से दस्तर ही नहीं ले सकता । घोर मैं परों की रोशनी में उसे देखने लगा । कासा कसूटा मोटा महा घोर पंजा । छिः छिः, कभी आने दो इसे दस्तर में इस क्षणमान का विन-विनकर बरतमा खूँपा ।

मैं मन ही मन पुटता रहा ।

शाब्द बरतमे आ रहे हैं ।

मैं काफ़ी देर तक अपने आप में निमग्न रहा । अचानक हात में पुनः हलचल मची । मैंने देखा बिसेज लड़ रहे हैं । घोर जंगल का घुहा । घूम-बड़ाक । फटाक-सटाक । बो मारा घरे ! यह बुबला-पतला कामे द्वियन भी क्या हाथ बिखा रहा है । खुब चीटी-सा घोर हाथी से लड़ रहा है । घाब लये इन घनचक्कर निर्माताओं को ।

घोर तब हीरो की मरब को पुत्तिस घाटी है । घोर हीरो घपनी बाँव बासी प्रेयसी बीनू को सीने से लगा सेठा है ।

मेरे पीछे बैठी किसी घोरत ने अपने पति से पूछा—“मुझे के बापू अब उस मेम साहब का क्या होपा वो उसे प्यार करती है ।”

‘इसे ही तो फिस्मी कहानी कहते हैं कि अन्त तक यह पता न चले कि घाने क्या होन वाला है?’

घोर बिजमी हीरो बीनू को लिए प्रयास नीत पाता हुआ पहर की घोर घा रहा है ।

घाही प्रेयसी के बाप का बँपला ।

मेम साहब हीरोइन से मर्तप स्वर में कहती है—“बीनू तेरी कुरबानी बरी मुहम्बत ने बेतन (हीरो) को मुमसे बीठ लिया ।”

‘किर नी तुम मेरे बाप तबा रहोनी—घोर घपनी बनकर रहीपी ।’

हीरो हड़ता से कहता है ।

ससर्पेस । ब्लोज भय घाट ।

‘कसे ?’—मेम साहब भवाक रह जाती है ।

पश्चिमक स्तम्भ ।

“बहिन हो कर । —हीरो का हाव अपने हाव में से सेता है ।  
बेत काल ।

‘बटाहार कर दिया सारी नहानी का । भय मंत्र तबप उठा  
कलाकार है या पू पू का मुरम्बा और कुम्भ नहीं तो बहिन ही बना  
ही । बाहू रे हिबुस्तान । कंसी-कंसी तुम्हें मिसती है ठेरी भरती पर ।  
और यह चित्र का हीरो कंसे इतने धारमियों स सड़ पाया ? मुझे ही  
देखो न एक जमींदार से न सड़ सका और मेरी यमुना मुझसे सदा के  
लिए छीन भी गई । और यह हीरो बकवास भूठ और बेहूदगी ।

मैं भ्रमलाता हुमा बाहर भाया । मुझे मेरे शस्त्र का साथी रमेश मिस  
गया । मुझे देखते ही उत्सहित होकर बोला—“क्यों रामू तुम भी पिक्कर  
देखने भाये हो । सयता है कि तुमने सन् २० से २२ तक की बेलेंस सीटें  
निकास भी है ।

“मैं तो पार भूष ही गया । एक पकडा-सा मेरे हृदय पर गया ।

“कल पैस करनी है, साहब के सामने । उसने बशाबगी के स्वर में  
कहा । मुझे पीसना था गया । पोड़ी बेर पहन जो बिद्रोहात्मक विचार न  
मबुर स्वप्न से से सधी हुआ हो पर ।

और मैंने महसूस किया कि मेरी उदालों और मेरे विचारों पर  
महाशूम्प का जाला परवा छाता या रखा है और मुझे केवल प्यारों का  
हेट, केवल एक-दो नाच-वन्धीय सङ्घों प्येस दिलने सये । परवा मन  
यमुना हीरो मुबार, भाकांघाएँ कहाँ है ? सय ही भाति पारखत के  
प्यारों और से प्येगर्स —



## मन का पाप

मुमताज और साहजहाँ के धर प्यार के प्रतीक ताजमहल के सम्मुख लड़ा-सड़ा में बिचार रहा था कि क्या मैं भी अपनी प्रेमसी की मपुर स्मृति में प्रीत का यह अनुपम महबूब बना पाऊँगा ? धन्तर क्या उत्तर देता जब धारमी अपनी भीकात से घाबे उड़ने धनता है जब उसका जाल उसे रोकता है समझता है कहता है—“पबसे । कस्पना के पंख धाकाए को बकर छूने हैं लेकिन बरती को नहीं ।” फिर भी धारमी उड़ता है, उड़ता ही जाता है। मैं भी उड़ रहा हूँ । कस्पना के स्विण्डल जाल में धबकत मकुर दिवान बुनता हुआ ।

ताजमहल की बाहरी बाहरीबार पर घूमती हुई किसी मुबती की मपुर धाबाज ने मेरा ध्यान भंग किया । वह मुबती संभरतर बर अंकित एक फूम को स्पष्ट कर बता रही थी, “मुबा के पत्तियाँ तीरे विरेवामी हैं न ?

“हाँ रामा ! इनका रंग हरा है ।”

“बहुत कमारमक है ।

“थी ।”

मैं उस मुबती को देख रहा था । वह बहुत सुन्दर थी, बहुत रूपवती । कदाचित्त मेरे पीबल में ऐसा रूप पहली बार धाया था । मैं उसे देखता रहा । मन कुतार्थ मारते लपा । वहाँ ताजमहल की कला और कहीं उठ पाताबरस मैं उत्पन्न होनेवाली कास्पनिक प्रमसी ? केवल वह मुबती उसका रूप और इस अजडसता मन का पाप । धारमी की दुर्बलता और उसकी निर्बग्य उड़ानें ।

मैं सोच रहा था । नारड मेरे साथ बिना पूछे ही ही लिया । वह

कह रहा था "बह श्रीरंजनेश ने साहजहाँ को कैद कर लिया, तब साहजहाँ धागरे के किले से बर्दपरी बाँधों से हर रोज ताजमहल की देखा करता था। उसे दुःख था कि पाक अल्साह की घोसाह इतनी मापाक क्यों? धागे बलिये बाबूजी।"

गाइड बला। मैं दूसरे बिचार में निमग्न उसके पीछे बसने लगा। मैं सोच रहा था "यह मुबती कितनी सुन्दर है? काय! मैं ऐसी पत्नी पाता तब तब क्या मुमताज बेगम पर साहजहाँ ने अपना प्रेम खुटाया? मैं ताजमहल से भी अच्छी इसकी स्मृति में एक महल बनवाता।"

गाइड ने विनती स्वर में कहा "ये साहजहाँ और मुमताज बेगम की लफ्फी कबोँ है और घससी ठोक इसके नीचे। बलिये, मैं आपको वहाँ से बमू।"

पर मेरी दृष्टि उस मुबती पर जमी हुई थी जो मेरी घोर पीठ किए अपनी सहेली या बहिन मुपा से कह रही थी। सब मुपा सम्राट श्रीरंजनेश ने मुमताज के नामपर कसक लगा दिया। बह कितनी नोमल और कितनी सरस थी? मुम बीठ जाएंगे पर मुमताज हमसा हमारे दिलों में लाजा रहेगी।"

"उबा। साहजहाँ भी उसी से धात्मिक प्रेम करता था। उसने भी अपनी मुमताज की धात्मा की धाति के लिए दुःखाय धारी नहीं थी। वह बचन का पक्का था। सभी धान्तिक दिलों में वह कैबल मुमताज को माद कर रोया करता था।"

मैं एक बार उस अनुपम सुन्दरी को देखने के लिए उसके धागे से मुक़ाबल मेरिन माय्य की बात है कि वह तुरन्त दूसरी घोर मुड़ गई। मैं सिर्फ उसकी गर्दन का एक भाग ही देख पाया। मरी बनिद इच्छा कस जहाने लगी "प्रभु, यदि इस मुबती ने मेरा ध्याह कप दे ती मैं बीबन भर उमे अपना धाराय्य मान कर पूजता रूँगा। पति और पत्नी के धष्ठ प्रम वा उदाहरण पेटा कर लकूँदा।" इस उभा क हम्के चरण मेरे मानस पर पवित्रता के चिन्ह छोड़ते हुए साहजहाँ और मुमताज की घससी बर्बो

की ओर बढ़ रहे थे। बाइब कहता था रहा था "इन घसली कर्कों के पास खड़े होने पर आदमी का दिल बरब से भीप जाता है।"

अन्धकारपूर्ण रास्ता। अमावार हाथ में सामटेल लिए हमारे साथ चल रहा था। राधा ने मुझ का हाथ पकड़ रखा था। वह मुझ से पूछ रही थी "मैंने सुना था कि बरसात के दिनों में कुछ बूँदें इन कर्कों पर आकर पड़ती हैं? तुम जरा उन सूटखों को देखना।"

तभी पाइब बीच में ही बोल पड़ा "बाबूजी! यह बात हवाई है, कम पर बूँदें कहां से आती? पर वहाँ के आदमी बहुत भोले होते हैं। महान व्यक्तियों के बारे में बिचित्र बातें यह सेते हैं ताकि उनकी महानता कायम रहे।"

मैंने स्वप्न विष्ट आदमी की तरह 'डूँ' कहा और एक लम्बी साँस लेकर धन ही मन बीना 'राधा से ब्याह हो जाने के बाद मैं अपनी साँसें कसना प्यार और अपनात्म उसपर उकेरूँगा। दुष्प्र की भाँति उसे अपनी मुरली का शास्वत संकीर्ण मुनाझँपा। बीजग फूल की भाँति सुबसूरत और अर्ध की भाँति घट्ट ब चिर-अमनमय हो जाएगा। कितना मारक कितना रंगीन और कितना भेष्ट?

तभी बीच में ही बाइब बोल उठा। उस समय मुझे उसका स्वर बढ़ा आश्चर्यकर और कर्कश लगा। वह बोल रहा था "देखिए बाबूजी यह जो आप पीछे का टुकड़ा देख रहे हैं न, इसमें हीरा था उस हीरे के टैज प्रकाश से यहाँ सूरज-सा ज्वालामा रहता था पर इन कुटेरे अंगरेजों ने उस हीरे को भी यहाँ से निकाल लिया और बिलायत ले गए।"

मुझा बीच में ही बोल पड़ी, "बड़ा कौमती हीरा होना, माईसाहब?"

"हाँ बहिन जी? बाइब उस्ताह से बोला "मुनते हैं कि यह लालों का था। तब यहाँ दिन की तरह ज्वालामा रहता था।" उसकी आँखों में हल्का अर्ध चमक उठा। जब मैंने भी अपनी ध्यान बामू प्रसन्न की ओर लपामा। केवल इस स्वार्थ से शायद यह प्रसन्न हूँ आपसी बातचीत करने का अवसर है वे। मैं यन्भीरतापूर्वक बोला, "यह कम की बात है?"

गाइड मेरे इस प्रश्न पर हिचकिचाया। बगलें झँकता हुआ स्नते बचते बोला, "सन् तो मुझे याद नहीं है मनुमान है यही तीस ।"

मैं उसकी धनमित्रता पर नहीं भ्रस्ताया। मुझे रोप तो इती बात पर होना चाहिए था कि मार्गदर्शक इतने धनपड़ क्यों हैं लेकिन मेरे रोप का जड़मम मुझ का वहाँ से सापरबाही से हट जाना था। मैंने गाइड को तनिक ठाढ़ना धरे स्वर में कहा "तुम कसे गाइड हो ? जब तक तुम्हारी मापण कला प्रभावशाली नहीं होगी तब तक तुम्हारा ब्यापार नहीं चलेगा।" तब मैंने उसे सुलित्त उपदेश दे दिया।

"यहाँ बहुत धम्बकार है रामा जलो जस्ती से बाहर चलें।"

राधा न धम्बीरता से कहा "सबमुब मुझा धौरंगरेव ने मुमताज की कोख को सजा दिया। पुस्य जाति बहुत स्वार्थी होती है ?"

मेरे मनमें ध्राया कि बाकर रामा की कमाई पकड़ लूँ धौर पुसू कि तुमने सारी पुस्य जाति पर लाक्षण क्यों सयाया ? कह दिया कि सारी पुस्य जाति स्वार्थी होती है धौर तुम धौरते ? धली घोडेबाज धौर कायर ! मैं एक धल कोप में बिभूड रहा धौर धत में जलजिज के उस हीरों की तरहु ध्यधित मुझा बना कर धरें भरे स्वर में धपने धाप से बोला, "रामा ! एक बार तुम मरु हूडय धौर कर बेलती तो पठा जलता कि इस पुस्य के धन्तर में किसकी तस्वीर है ? धलामर में धपना सर्वस्व धर्पण करनेवाला यह पुजारी तुम्हारे लिए धाकाध के धारे तोड़ कर न से धाप तो कहना ? मैं जीवम-मर धारमा के पुनीत प्ररीप के धालोक में प्रीत की पावनता को धलुष्ण एनुमा। तुम्हारे हर कदम के धाने मेरे पसक-पावड़े बिधे रहेंगे धौर ।"

मुस्य का धम्बकार गहुरा हो गया था। जमादार सासटेन सेवर मुझ से दूर जमा गया था। गाइड का बेहुरा उतर गया था। उसकी उदास धाँधों में धावा तीर जडी की बसे सेसे यह डर हो गया हो कि बाबू पैसा नहीं देगा। फिर भी वह मेरे पीछे-पीछे मोडुल के पडे की धाँधि धाधावारी होकर चल रहा था।

मुषा और राधा काफ़ी दूर निकल चुकी थी। मेरा मन सब कहूँ, अणिक भाववैद्य जमित पाप भी काफ़ी दूर स्वच्छन्द हुआ। मेरा रहा था। सोच रहा था, "घाहजहाँ की उदारता और कसबा ने अपने बेटों की मदद साधे में हास दिया। यदि वह तनिक झूरता से काम मेरा तो संभव है उसे इस पीड़ित परिणाम से नहीं टकराना पड़ता। स्नेह की घबराव भाव की स्वाभ का निम्न स्वर्ण पाकर मुझ जाती है और तब आदमी सभी अज्ञानियों को विस्मृत करके व्यक्ति की स्थापना में लय जाता है। पर मैं ही मैं राधा में सभी पुरुषों को ऐसे साधे में हासूंगा कि वे किंचित भी मानवता से विमुक्त नहीं होंगे। वे औरगजेब की भाँति अपने पिता के जन्माद और हिसक नहीं बनें। वे सभी राधाके पावन-धरलों में अपना मस्तक रखकर अपने पापको औरबाधित समझेंगे।"

सुरंग समाप्त हो गई थी।

राधा और मुषा सुरंग के बाहर आई थीं। इस बार मैं राधा का सम्मुख सौन्दर्य-सम्पन्न मुख देख पाया। पनपपद की पधिनी ट्राय की हेतन इन्द्र की रंभा और मेनका सभी तो उसकी सुन्दरता के सम्मुख पानी बरती थीं। मैं खरीक भी नहमाऊँ, महज यह सोच कर ताजमहल के मुम्बह देखने लगा। राधा और मुषा दोनों सीढ़ियाँ उतर रही थीं। मैं उन्हें देख रहा था पीछे से।

आजानक मुषा का पाँव छिन्नतले छिन्नतले बंधा। मैं अस्सी से कदम बढ़ा कर उसके सन्निकट पहुँचा। मुनता हूँ राधा कह रही है "मुषा! मुझे तो भगवान ने अन्धी बनाया है पर तू धीले होते हुए अन्धी क्यों हुई जा रही है?"

आवेस बुल और कोच के मारे मैं राधा के सम्मुख जा चढ़ा हुआ। दो धीले सुन्दर काली-काली पर अक्षय। पत्थर, बिलकृत बनाबटी। मैं देखता रहा। मुषा को यह अज्ञान नहीं लगा वह बोले इसके पहले ही मैं वहाँ से छिठक पड़ा।

एक आवाज था रही थी सायद पवन ताजमहल में खरनाए दो

हृदयों के समर प्यार की स्पर्ध कर मेरे कान में कर रहा था 'रामा के कृप्य, उसके धाराबक, उसके पुजारी कहाँ जा रहे हो ? जय स्त्री न, तेरी सबसब तेरी रामा मि-सहाम है, उसे सम्भल दो उसे सहारा दो ।"

धीरे मेरे मन में एक ही वाक्य यूँ बूझ रहा था । "रामा धर्मि है, धर्मि ? ईश्वर बहुत निर्बन्धी है, कठोर है दुष्ट है । ऐसे स्पर्को इतना बड़ा धर्मिप्राप

धीरे मैं ठाकमहल के बाहर जापता ही जा रहा था ।



## दुर्वासा का पहला वरदान

रथान रोड पर स्थित छोड़-मोड़ पोधी की दुकान पर नेहरू बत्त पहने हुए एक छात्रु महाराज ने अपनी मौजू बंसी धाबाज में कहा "क्यों भक्त ! बाबू बच गए ?

सरदार जी बाबू का नाम सुनते ही इस तरह चंकि पंसे सात कपड़े से भैत चीकटा है । तुनक कर बोले, 'ऐ छात्रु महाराज ! तू अपनी जवान के सवाम सगामेमा या ।'

छात्रु महाराज अपनी छोटी-छोटी धाँसों को विचित्र ढंग से पिच पिचाने हुए सम्ये स्वर म बोले "बल्ल ! सास-नीमा क्यों हरे रखा है ? हमने कौन सा अपराध किया ? धरे धाई बस, इतना ही पूजा कि बाबू बच ।

"यवे में कहता हूँ अपनी जवान के सवाम सगा नहीं तो सत भी की मेहरबानी से एक भ्यपद में मुँह लोड़ू या ।"

सरदार जी निकराल-से हो उठे । मुकका तन गया । दुकानदार ने विपद कर छात्रु बाबा को डाँटा—"ऐ फनकड़ का बेटा, भाप यहाँ से नहीं तो भक्ति का साध मधा उतारू या ।" फिर बह सरदार जी की धोर मुखातिब होकर बोला "नया करें साहब, ये छात्रु ती कुतों से भी गए मुजरे हो गए हैं । काटते रूठे हैं तब को ।

धोर बाबा कमण्डल हिलाते हुए कहते जा रहे थे, "ऐसा जीव इत भुमंडल में नहीं देखा । भी बाहता है कि भाप देकर इसे पत्थर बना हूँ, पर ।" शोब के मारे उनकी मूर्छे कल्पक मृत्य कर रही थी । धाँसें साप हो उठी थी लेकिन क्या रहस्य था कि वे अपना बाक्य पूरा नहीं कर पाए ?

सोपहर, बिसबिसाती चुप । घाग-सी सू धीरे हमारे महापराज भेप  
पिए बिबपी के बीस की भाति जन्मल भूम रहे से चहर की मनिमों में ।  
बाबि मगा रहे से, हे कोई मछ ओ इस मूली-व्याही घामा के दो सवाल  
पूरा कर दे ।”

तभी बाबा ने मुना कि एक सड़का पीरे-पीरे एक नीठ पुनमुनावा  
जा रहा है—जा जाने किस भेप में बाबा मिस जाये भमबाज रे

बाबा ने मुना, विचारा—घादमी मछ-हृदम का जान पकठा है ।  
बाबा ने पास जाकर पूकारा “बच्चा ए बच्चा ।

बच्चा ओ रुक गए । हाप ओड़ कर दिनम स्वर में गिर मुकाठे हुए  
बोले “कहिए बाबा जी हम बच्चे को क्या धामा है ।”

“सापु दो रोज से मूला है ।

“तो किसी होटल में जाइए । वही बहुत धाना पड़ा है । बाबल से  
जेकर ब्याब तक ।”

पर पता ?”

“पता ! पैता बैंक में वहा ती कंवाल बैंक का चक काट दू ?”  
इतना कह सड़का इतने ओर से हुआ कि बाबा भेप गए ओर वही से  
तरक गए । बार-बार कह रहे से, कमियुम ओर कमियुम— ।”

तम गमी सहीब में मरी हुई थी । भूम ओर व्यास के मारे बाबा  
जी के पेट में जूहे एक एक हाक अंधी अर्पायें मार रहे से । अर्चलक  
फिन्स संवार की प्रसिद्ध जेबैक मापिका मतामदेशकर की पुत की लच्छ  
किसी मुबती का स्वर उन्हें मुनाई पदा,—“सापु महाराज सापु  
महाराज ।”

सापु महाराज ने बीछे की ओर देना तो सन्न । मन में सूचाल उठा  
धीरे सोपही में एक रास मूज उठा—मनुमता सागाठ मनुमता  
वही रूप वही अर्पायें वही छोटे की भाक वही बाँद का पोरा बँहरा ।  
दुर्बासा वह तेरी मनुमता है ! ।

धीरे बाबा अर्पायें दुर्बासा भी अर्च्य गए । मारी कदम उठाठे हुए



## दुर्घासा का पहला घरदान

स्टेशन रोड पर स्थित छोट्ट-मोट्ट बोली की दुकान पर देखा बस पहले हुए एक चाबु महाराज ने अपनी बोली चाबाज में कहा "क्यों भक्त ! बाबू बन गए ?"

सरदार भी बाबू का नाम सुनते ही इस तरह बकि जैसे साह कपड़े से बस चीकटा है । तुनक कर बोले, "ऐ चाबु महाराज ! तू अपनी जवान के समान सबायेमा वा ।"

चाबु महाराज अपनी छोटी-छोटी चाँचों को विभिन्न ढंग से मिच-मिचाते हुए लम्बे स्वर में बोले "बस ! सास-नीला क्यों हो रहा है ? हमने कौन सा अपराध किया ? घरे जाई बस इतना ही पूछा कि बाबू बन ।"

"घरे में कहता हूँ अपनी जवान के समान सबा नहीं तो सत भी की मेहरबानी से एक झपड़ में मूँह तोड़ डू या ।"

सरदार भी बिकरात-से हो उठे । मुक्का टल गया । दुकानदार ने बिकड़ कर चाबु बाबा को डाँटा—"ऐ फनकड़ का बेटा भाप यहाँ से नहीं तो भक्ति का सारा नसा उतार डू ना ।" फिर बह सरदार भी की घोर मुक्काटिब डीकर बोला, "बसा करे साहब ये चाबु तो कुर्तों से भी गए गुबारे हो गए हैं । काटते रहते हैं सब को ।"

घोर बाबा नमण्डस हिसाते हुए कहते जा रहे थे, "ऐसा जीव इत भूमंडल में नहीं देखा । यी चाहता है कि भाप बैकर इसे पत्वार बना डू पर । जोर के मारे उनकी मूर्खे कल्पक नृत्य कर रही थीं । घाँसे सास हो पड़ी थी सेकिन गया रहस्य वा कि वे अपना बाक्य पूरा नहीं कर पाए ?"

दोपहर, जिसबिताती रूप । घाय-सी सू घोर हमारे महाराज में  
 लिए शिवजी के बीस की भाँति उगता पूरा रहे वे सहर की गलियों में ।  
 बाँध लगा रहे वे 'हूँ कोई मछ जो इस भूषी-व्यासी आत्मा के दो सवास  
 पूरा कर दे ।'

तभी बाबा ने सुना कि एक सड़का बीरे-बीरे एक भीत बुनबुनाता  
 जा रहा है—ना जाने किस भेप में बाबा भिन्न बाये भगवान् ने

बाबा ने सुना बिचार—घादमी मछ-रूप का जान पड़ता है ।  
 बाबा ने पास जाकर पुकारा "बच्चा ए बच्चा ।"

बच्चा भी बह गए । हाथ जोड़ कर बिनम स्वर में सिर मुकाँठे हुए  
 बोले "कहिए बाबा जी इस बच्चे को क्या आज्ञा है ।"

साधु जो रोज से भूखा है ।

'तो किसी होटल में जाइए' । वही बहुत खाना पड़ा है । चाबस स  
 सेकर कबाब तक ।

पर पैसा ?"

पैसा ! पैसा बैंक में कइसे तो कंगाल बैंक का बैंक काट दू ?"  
 इतना कह सड़का इतन ओर से हुआ कि बाबा भेप गए घोर वही से  
 टरक गए । बार-बार कह रहे वे कमिपुत्र ओर कमिपुत्र ... ।"

तब गमी सदाँप में मरी हुई थी । भूख घोर व्यास के मारे बाबा  
 जी के पेट में बूँदें एक एक हाथ ऊँची छमाँये मार रहे थे । अचानक  
 दिव्य संसार की प्रसिद्ध प्लेबक नायिका सतामंयेनाकर की पुन की तरह  
 किसी मुक्ती का स्वर उन्हें सुनाई पड़ा,—“साधु महाराज साधु  
 महाराज ।"

साधु महाराज ने पीछे की ओर देखा तो सन्न । मन में सूझा उठा  
 घोर खोपड़ी में एक घण्ट पूँज उठा—अनुत्तमा साजात अनुत्तमा  
 बही रूप, वही आँगे बही छोटे सी नाक वही चौद मा मोरा बँहरा ।  
 दुर्गमा वह तेरी अनुत्तमा है ! ।

घोर बाबा अर्थात् दुर्गावा जी अकड़ गए । भारी बदम उदात्त हुए

उसके समीप बसे । ऊँचे स्वर में बोले, "कहो बेटा ।"

"महाराज भाटा....।"

"क्या कहा भाटा ?" भाँखों को एकदम बरसते हुए दुर्वासा बोले "हम क्या ऐसे गंदे सत्तू खोर साधु हैं, भंगते हैं या मिखाटी ? बेटा यह तुम हमारा अपमान कर रही हो । हम ब्रह्माण्ड को जानने वाले परम ज्ञानी योपी, महामुनि दुर्वासा हैं । कस्याण बाहुली हो तो भोजन कराओ । वाली भाटा तो स्त्रियों के लिए है । हम पूतछात को छोड़ कर, मन को मन से छोड़ते हैं ।"

"जमा कर बीबिए महाराज....।"

"जमा तो मे देखा ।"

दुर्वासा ने अपनी भोसी में से सोने का डेर निकाल कर रख दिया और कहा, "वह सठपुपी सोना है । संदूक में बन्द कर रख बेनी और तीन दिन के बाद खोलेंगी तो वह संदूक कभी भी ज्ञानी नहीं होगी । कुदर का जमाना हो जायेगा । मे से बेटा मे फिर पछताना न पड़े ।"

दुर्वासा ने मेत्र बन्द कर लिए । उनके मुँह होठ फड़क रहे थे जैसे किसी मंत्र का जप कर रहे हों ।

स्त्री ने अपनी भाँखों के सामने स्वर्ण के चमकते डेर को देखा तो चकाचौप-सी रह गई । उसने अपनी भाँखों को बार-बार मसा कि वह स्वप्न है या सत्य और तब उसके घपरो पर सातव की हुईगी नाच उठी और उसके दोनों हाथ सोने की डेरी की घोर बड़ बसे ।

"इतना सोना ! स्त्री लासायित हो गठी ।

"इतना क्या ! देखा इस भोसी में क्या है ?

उन्होंने अपनी भोसी का मुँह घाँपे बड़ाया । स्त्री ने देखा तो उल्ल रह गई । भोसी सोने की मरी हुई थी । यह भाव बिह्वल हो गई । भटपट उसने दुर्वासा महाराज के पाँव पकड़ लिए । दुर्वासा रोदन बरे स्वर में बीरे-बीरे बोले— "बेटा हम टहरे सन्धासी त्यागी योपी, हमें जवमी से क्या काम ? हम यदि बन्ध मडन हैं, तो यह पाहु की बीम,

धीर हम यदि सरवान हैं, तो यह पत्तन । इसलिए बेटी हम तुम्हें यह स्वास-बान कर रहे हैं । तुम सोचोपी कि हम अपना स्वार्थ सिद्ध कर रहे हैं ? नहीं-नहीं, हम तो जगत का कल्याण कर अपने पिछले जन्म का प्रायश्चित्त कर रहे हैं । बठ बेटी धीर ध्यान से देखा भेटी धीर । स्त्री ने अपनी दृष्टि दुर्वासा पर टिका दी । उसने ध्यान से देखा कि दुर्वासा की दाढ़ी तो सफेद है धीर बाल काले-काले । वह उन्हें बड़े ध्यान से देखने लगी ।

“अपने जन्म में मैं अत्यन्त श्रेणी था । ब्रह्मा विष्णु धीर महेश ने सब मुझे इस पृथ्वी पर इसलिए भेजा है कि मैं यहाँ बुद्धियों की सेवा कर उनका घाटीबाँह भूँ । इतना कह दुर्वासा महाराज ने घाता दी—  
‘जा बेटी ! यह धारा सोना से जा धीर इसके बदनसे हमें सिर्फ़ दो रोटी धीर एक छोटा-मोटा जेवर ला दे । क्योंकि परम ब्रह्म परमात्मा का कहना है कि वह जेवर जैसे ही इस भोमी में पड़ेगा वैसे ही तेरा सोना बुगुना हो जायेगा । तू मामामाल हो जायेगी ।”

“मैं धमी लाई । स्त्री उत्साह से बसी गई पर उसके मस्तिष्क में दुर्वासा की सफेद दाढ़ी धीर काले बाल कुतूहल बनकर घूमने लगे । ऐसी विचित्रता उठने बहुत ही कम देखी थी कि बाल काले धीर दाढ़ी सफेद । यत धाते ही वह उत्सुकता से हाथ जोड़ कर बोली—‘महाराज आप राम क्या हो आपके बाल काले धीर दाढ़ी सफेद क्यों ?” स्त्री बर गई ।

“दाढ़ी दाढ़ी ।” दुर्वासा जी विचलित हो उठे । उनके दोनों हाथ यंत्र की भाँति बार-बार दाढ़ी पर जाने लगे । त्रिधियाते हुए बोले—  
“यह दाढ़ी ? यह दाढ़ी भी तो देवताओं का अभिषेक है । विष्णु भगवान ने मुझे थाप दिया था—जा बोधी ठेरी दाढ़ी सफेद रखी । बस सफेद हो गई । पर ये बाल प्रकृति का विरोध नहीं कर सके । मैं अपने बालों को सफेद कर सकता हूँ पर देवताओं का थाप भी तो बरदान होता है । इसलिए चुप हूँ ।”

स्त्री के विरोध को इसके धारणा नहीं मिली । तब दुर्वासा शक्ति ने

झकड़ कर बीबम वृत्तान्त कहना प्रारम्भ किया ।

—घाब से ठेईस घाम पहले पाँच कोसाघर में मेरा जन्म हुआ माने महर्षि दुर्वासा का घबठार हुआ था बेटी ।

दुर्वासा के जन्म पर गाँव में सनसनी फैल गई । क्योंकि घबठारों के जन्म पर सनसनी पैदा होती ही है । पतञ्जलि का जन्म एक बाह्यण की संजली से हुआ, तो इत्सा । महामुनि घबस्त्र का बोड़े से महाराज इत्साकु का जन्म मनुजी के पेट से घबठार घाबमी के पेट से । मतलब यह है कि मनु जी ने धीका घौर इत्साकु भी टपके । तो बेटी उनके जन्म से छारे पाँच में हमचल मच गई तो घाबर्ष्य ही क्या ? फिर मैं भी तो घबठार ही था छोय काम-बेबा छोड़-सोड़ कर उनके घर की घोर बाड़े बसे था रहे मे । भौड़ में एक ही घबड़ गूँब रहा था—विचित्र विचित्र...विचित्र महाविचित्र ।

उनके घर के घाबे घपार जम-समूह था । घापस में कानाचूधी का बाजार गर्मे था । घौरते घापस में बातपीठ कर रही थी ।

ऐसा बच्चा घाब तक पैदा नहीं हुआ ?”

“कुई माँ बाड़ी है ।”

“धीप तो नहीं है ।”

घौर का घट्टहास गूँब पठा ।

“घबठार ही हुआ जमेसी, कि धीप नहीं है जनाँ घौर जात के रासास पैदा हो जाता ।”

भौड़ के इस घनर्मस प्रताप से दुर्वासा ऋषि के पिताजी परेसान हो पठे । यह किछ किछ की जुबान पकड़ते ? लाघार, जन्मि गाँव के ठाकुर को बघर थी । ठाकुर साहब दो कारिम्बों के साथ पकारे । उनके घाठे ही भौड़ विन्म-विन्म हो गई । ठाकुर ने जमीरता से कहा—‘मेरे स्वात से बच्चा घबिक दर तक नहीं जियेया ।’

“क्यों ठाकुर साहब मेरे तो बुझीती में मड़का हुआ है ।”

“जमीरब । तू अपनी तपस्या को विन्म ही सबस । एक बार

में घहर गया था वहाँ डाक्टरों ने ऐसे बच्चों को पीछे के बर्तनों में सजाकर रखा है।”

“हे ईश्वर ! तू मेरे सास की रक्षा करना । छोटी-सी दाढ़ी मूँछ तो बच्चे के मुँह पर बहुत सज्जी सपती है।”

बास्तब में भयवान ने उसकी प्रार्थना सुन ली । दुर्बला मरे नहीं । मरते भी कैसे ? भयवान के घाप से ही तो पैदा हुए थे । दाढ़ी मूँछ की जो गई बात थी, वह नी दिन एही धीर बहुत सज्जि उधे पाप क्रिया टेरू दिन । जब म तो सीप ही निकसे धीर दाढ़ी ही बढ़ी । तब बात माई गई हो गई ।

महापंडित पोपड़ानन्द जी नायकरण के दिन कीचड़ में फेंके पहिये की तरह धड़ गए कि वे नामकरण का पूरा सबा सपना ही सने सबा पाँच घाने नहीं ।

“सैक्रिन हमारे पुरखों की रीति सबा पाँच घाने की ही है।” उनके पिता मयीरब जी ने दसील पेण की ।

“सैक्रिन आपके पुबंजों के पैदा होते ही दाढ़ी-मूँछ नहीं निकसी थी।” पोपड़ानन्द जी घपने बरमे को नाक पर नाठे हुए बोले यह धीरू घाने तीग वैसे इनकी दाढ़ी मूँछ का टैकस है।”

मयीरब क्रोध में बड़बड़ा उठे—“माड़ में जाव इसकी दाढ़ी मूँछ, जब से पैदा हुआ है तब से सर्वा ही सर्वा।”

घान्त में पोपड़ानन्द जी की सबा सपना देना ही पड़ा । पोपड़ानन्द जी ने दो बार मंत्र का जाप करके कहा—‘नाम ‘र’ घदार से प्रारम्भ होना चाहिए।’

मयीरब ने तुरन्त कहा—“देवदास।”

“नहीं दमड़ी प्रघार।”

“सि धि यह कोई नाम है ? देवदास, दमड़ी प्रघार, बरोगा-नास । नाम तो होना चाहिए दुर्बला । देख नहीं रहे है घाप कि धीमान जी घरमे वे से ही दाढ़ी-मूँछ सेकर घाये है।” यह प्रबचन सघनी

श्री माँ बंगनी का पा ।

पोपडानन्द श्री मैत्री अपनी स्वीकृति दे ही ।

तभी एक गटकट छोकटा कइ उठा—'नाम 'ब' घघर पर होना चाहिये । हाँ तब यह नाम बहुत ही ठीक खूँगा—दाड़ी वाला मुन्ना ।'

घौर घास पास बड़े तभी बच्चे बिस्वा उठे—दाड़ी वाला मुन्ना दाड़ी वाला मुन्ना । बनकी तासियों से सारा घर बूब उठा ।

कका मुनाटे-मुनाटे दुर्वासा भी ने सिगरेट भी माँव की । सिगरेट का बुर्मा घासमान की घौर उड़ाते हुए उन्हीं जैसे से पुन कइना मुक किया—'दुर्वासा कहते घने । स्टूम से बब वे बिद्याभयन करके सीटते तब बच्चे जमह-जमह पर उन्हीं दाड़ी वाला मुन्ना कहकर बिड़ाले । कहने बाबों के स्वर में इतना तीखा व्यंग होता था कि कभी-कभी दुर्वासा शेष में तिसमिसा उठते थे घौर बच्चों को परवर बन जाने का घाप देने को तैमार हो जाते थे भिक्ति फिर वे बिप्यु जगवान के भय से घपना इठवा बरस लेते थे । हाँ कभी-कभी वे मारपीट कर लेते थे जिससे एत को स्वप्न में उन्हीं बह्या बिप्यु घौर महेस डीटते थे । कहते थे—घरे, घब तो जोब को त्याग दो नहीं तो तुम्हे मृत्यु-सौक के कुंभी-नाक में रहना पड़ेगा घौर वे घाल्ट हो जाते थे । वे दाड़ी मुँस को काट देना चाहते थे लेकिन डर यह था कि घाप के कारण उत्पन्न हुई यह बन्धन-सी मुनावम दाड़ी कहीं उस्तरे के स्वर्ण से घास की तरह बड़ने लगी तो , नहीं-अहीं, यह प्रभु प्रबल बरवान ही शेषकर है ।

पर एक दिन घबानक दुर्वासा के कानों में मुनाई पड़ा कि बच्चों के एक कविता भी उतकी दाड़ी पर बना ली है । बच्चे देख-रस कर तासियाँ बजाने लये घौर माने लगे—

मुन्ना दाड़ी वाला प्यास  
लपटा है बहु सबसे प्यास  
कील करेमी घाड़ी इससे  
रहेगा वह घाजल कुँवाट

उस धीरे को हँसते हुए बल कर बुर्बासा श्चपि बोले—तुम हँस रही हो बेटी ? तुम भी सोचती होगी कि अब महर्षि घाय ठा नहीं बे सकते इसलिए मुझे भी हँसना चाहिए । हँसो जब जोर से हँसो बेटी ! घर में बूब है ?” बुर्बासा जी बुर्बासा का घन्त किये बिना ही बोले ।

“हाँ है माऊँ एक मिलाघ ? पर - ।

“पर !” चौक पड़े बुर्बासा जी

“बात यह है कि बहू मिरक पाउडर है । घाय पीना चाहूँ तो ले माऊँ ?

“बंसी मछ की मर्जी । जो पिनाघोगी, पी सेंने हम संतोपी है ।”

बूब को हलक से पूँट-पूँट उगारते हुए बुर्बासा जी पुन बोले—पर दाढ़ी वाला मुग्ना बुद्धि का बड़ा कृपाघ था । कितने ही स्सोक बसने हीरामन ठोठे की तरह रट सिए थे । फिर क्या था उसकी इज्जत सारे पाँव में होने लगी ?

एक रोज उन्हें स्वप्न में भयवान ने घामा बी—“श्चपिराज टुकुघ इन की जो मुबा बेटी है न, बहू कद में टाड़-बूटा सी लम्बी है, इसलिये जाकर घाय उसक सिए उचित कर डू ड साइए ।

बुर्बासा जी तड़के ही ठाकुर के घर की घोर बसे । उस समय उनकी उम्र घठाछ साल की थी ।

ठाकुर की मुकम्पा बास्तव में बहुत ही लम्बी थी । इतनी लम्बी जितना टाड़ का बूटा घौर उतकी वाली इतनी मोटी जितनी बोल । बुर्बासा जी घीबे बनला घाय में पहुँचे । सघाल सौरम से भरत हुपा था । पराम के कणु बीबन में उम्तास भर रहे थे । उन्हें बेसते ही मुकम्पा घति घील से नत मस्तक होकर बोली—‘भमस्कार ।’ ऐसा भानूम पड़ा कि भयवान ने उसे भी स्वप्न में कह दिया हो कि कल तुम्हारे यहाँ मुनियों के मुनि, त्यागियों के त्यागी बुर्बासा जी पघार रहे हैं ।

बुर्बासा जी ने हाथ उठाकर घायीबाँह दिया—‘कस्याण हो देकी कस्याण हो, मन की घायो घुरी हो ।



श्री माँ बेपनी का ना ।

पोपकानन्द भी मैं भी अपनी स्वीकृति दे रही ।

तभी एक नटबट धौकरा कह उठा—'नाम 'ब' घसर पर होना चाहिये । हाँ अब यह नाम बहुत ही ठीक रहेगा—दाड़ी वाला मुन्ना ।

घौर घास पास बड़े सभी बच्चे बिस्ता उठे—दाड़ी वाला मुन्ना दाड़ी वाला मुन्ना । जमकी सातियों से साय बर मूँब उठा ।

क्या मुनाते-मुनाते दुर्वासा भी मैं सिगरेट की जॉन की । सिगरेट का बुर्मा घासमान की घोर उड़ाते हुए उन्होंने बँस से पुनः कहना शुरू किया—“दुर्वासा कहने सये । स्मृति से जब वे विद्याभ्यसन करके मोड़ते तब बच्चे जपहु-जपहु पर उन्हें दाड़ी वाला मुन्ना कहकर बिड़ाते । कहने वाली के स्वर में इतना तीखा व्यंग होता था कि कभी-कभी दुर्वासा श्रेय में तिसमिसा उठते ये घोर बच्चों की परवर बन जाने का घाप देने की तैयार हो जाते थे लेकिन फिर वे विद्यु भयवान के मम से अपना इतरा बदल सेते थे । हाँ कभी-कभी वे मारपीट कर बैठे थे जिससे पत को स्वप्न में उन्हें बड़ा विद्यु घोर महेस बाँटते थे । कहते थे—घरे, मम तो श्रेय को रयाव हो नहीं तो तुम्हें मुरमु-लोक के कुंभी-याक में रहना पड़ेगा घोर वे घाल्य हो जाते थे । वे दाड़ी मूँब को काट देना चाहते थे, लेकिन बर यह था कि घाप के कारण उत्पन्न हुई वह मन्थन-सी मुमायम दाड़ी कहीं उस्तरे के स्वप्न से बास की तरह बढ़ने लगी तो नहीं-नहीं यह प्रभु प्रवत बरवान ही श्रेयकर है ।

पर एक दिन अचानक दुर्वासा के कानों में तुनाई पड़ा कि बच्चों में एक कविता भी उनकी दाड़ी पर बना ली है । बच्चे बेल-बेल कर सातियों बजाने लगे घौर माने लगे—

मुन्ना दाड़ी वाला प्याठ  
लगत है बहु लबठे प्याठ  
कीन करैनी पाही इतसे  
रहेगा बर घाजम कौबारा

उस पीछ को हँसते हुए देख कर दुर्गासा खिच बोले—तुम हँस रही हो बेटी ? तुम भी सोचती होगी कि जब महापि साप तो नहीं दे सकते इसलिए मुझ भी हँसना चाहिए । हँसो खूब जोर से हँसो बेटी । बर में दूब है ?” दुर्गासा जी वृष्णांत का प्रसन्न किये बिना ही बोले ।

“हाँ ! साठें एक पिनास ? पर ... ।”

“पर !” बौंक पड़े दुर्गासा जी

“बात यह है कि वह मिल्क पाठकर है । घास पीना चाहें तो स पाठें ?

“बेसी भल की मर्जी । जो पिनासोगी पी लेंगे हम सतोपी हैं ।”

दूब को हस्तक से घूँट-घूँट उतारते हुए दुर्गासा जी पुनः बोम—  
“पर दादी बाता मुम्ता बुद्धि का बड़ा कुमास्र था । कितन ही स्पोक घसने हीरामन सोते की तरह रट लिए थे । फिर क्या था तमरी इज्जत सारे पाँव में होने लयी ?

एक रोज उन्हें स्वप्न में भगवान ने धात्रा दी—“खरिखर खरुखर-रन की जो मुबा बेटी है न, वह कद में ताड़-बूझ सी लम्बी है, रम्किर बाकर घास उसक लिए उचित बर दूडे माए ।

दुर्गासा जी तड़के ही टाकुर के घर की ओर लपे । उठ बल-उनकी सन्न धटाएह सास की थी ।

टाकुर की मुकम्ता बासठव में बहुत ही लम्बी था । उन्हें उन्हें निठना ताड़ का बूझ और उनकी बाती इतनी मर्ती मिर्ती थी । दुर्गासा जी सोचे बनामा बास में पड़ी । उदात्त मीम न इतना ही पराम के बरा बीरम में उम्मास्र भर रहे थे । उन्हें इन्हें ही मुज्जत पति पीत से नग मस्तक होकर बायी—“मम्मा !” उम्मास्र न कि भगवान ने उम्मा भी स्वप्न में कह दिया इ कि वह मुज्जत मुनियों क मुनि, त्यागियों क त्यागी दुर्गासा की उम्मा रहे ।

दुर्गासा जी ने हाथ उठाकर दादी के लिए—“मम्मा !” उम्मास्र न कि कस्याए हो मन की धामा पूरी हा ।

'घाप है कीन ?' उसने तुनक कर पूछा । दुर्वासा भी को अपनी भूष का ज्ञान हुआ कि इसे प्रभु के स्वप्न में कुछ नहीं कहा है ।

'मैं दुर्वासा श्चपि हूँ सुकम्पा । तु इतनी समी है कि तुझे बर भिन्नता धरयन्त कुमर है ।

'घाप है कीन ?' उसने पुनः कड़े स्वर में कहा ।

उस बर को बंबाज का नारियल का पेड़ होना चाहिए धरया हमारे जैसा प्रकृतिदि बाबा साधक । धरया तुम्हारा उदार बर स्वयं है ।'

'घाप बायस है ।' उसने रोप में घुरी कर कहा । उसकी भिन्नता में नाचती हुई पुतलियों में स्फूर्ति से बढ़क उठे ।

'घायस ! सुकम्पा ! शीघ्र्य सम्पत्ति का सम्बन्ध पाकर बंभी ही पाठा है पर प्रभु ने धासा भी है कि हम घाप को बर । दुर्वासा भी ने घापे बढ़ उठका कोमल कर पकड़ लिया ।

पर देवी ! यह संसार भय-जाल में बटकता हुआ है । माया डोर में बंधा हुआ है । भय-दुरी को पहचान नहीं है—जब सुकम्पा ने श्चरित्य के हाथ से धरने हाप को मुक्त कराने के लिए भिन्नता के घायस लिया । दुर्वासा भी ने देखा कि बार लठैत धा रहे हैं धरः के भी पण्डे पत्पर बनाने को प्रवृत्त हुए कि विधनु जी का घाप उन्हें स्मरण हो सका । तत्पश्चात् के प्राण रथा हेतु भावे । बार में उन्हें माधुम हुआ कि उनके पाँव में कदम रखते ही ठाकुर उसे कारावृत्त में बाल देपा इतलिए के कयी पाँव नहीं लीटे ।

उस दुर्वासा बाबि में नवर-नवर, बपर-बपर कुमठा रथा हूँ । कीर्त मल्ल हूँ पुकारता है तो हम भयंठी उच्छ कन्यासु कर देते हैं । हाँ देवी ! तु लार्द यह केवर ?'

'हाँ महापज, यह केव पन्द्रह शी रप्यों का हार है ।' रयी ने हार

महात्मा जी को दे दिया। महात्मा जी जैसे भ्रोमी में बालते हुए कहने लगे— 'अब हम भोजन नहीं करेंगे। ठीक तीसरे दिन सग्नूक शौसना, शौशम दिव हरे दिव हरे !'

श्रीर दुर्बासा जी अपनी सफेद किन्तु कोमल दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए शिवजी के साँड़ की तरह मस्ती की जास में जब पड़े ऋषि-मुनियों की सम्भारत भूमि पर श्रीर बहु भारतीय समना थडा से अभिमूठ होकर पीछे से हाथ जोड़ रही थी।



## आदि-श्वत

कहानी की समस्या मछली जाल

मेरी कहानी की नायिका एक बाल में फँसी मछली है, मछली थी ऐसी जो अपनी बतुलाई के कारण स्वर्ग जाल में फँस गई थीर वह जाल एक अत्यन्त दुष्ट प्रकृति के मछेरे द्वारा फँका गया था। थीर वह मछेरा ? इस्लाम के रूप में पूरा दीवान, मारी की अपने पाँव की लूठी समझने वाला। यही मछेरा मारी के कोमल मांस को कुत्ते की तरह मोच कर कुत्त बला बेठा है। प्रकृति का दुष्ट थीर स्वभाव का तिप्पुर है मछेरा। वह मछली को पानी से निकाल निकाल कर ठकपाता है।

किर कहानी बड़ी निश्चिन्त बन जाती है। मछली जब रोती है तो मछेरा हँसता है। मछली जब धानुधों से अपने धाँस को पिपीठी है तो मछेरा अपने बने को मूरा से ठर किया करता है। जीवन से अस्त होकर मछली जब बेरवा की असीम सीमा पर पहुँचकर कस्तुर बीत्कार करती है तब मछेरा सापरबाही का घट्टहास कर उसे धारमहत्या करने के लिए प्रेरित करता है।

मछली, ठकप थीर असा-बुध पति

कीरत ने संभ्या के बहरे होते धान्धेरे पर नजर फेंक कर समी ति-बाप बरी। उसकी धाँसें सूजी हुई थी जिससे साक बाहिर हो रहा था कि वह कुछ बेर पहले भी भर कर रोई थी। उसने अपने कमरे पर सरसरी दृष्टि फेंकी थीर उसकी दृष्टि एक पुचने बिज पर धाकर रुक गई। वह बिज तरोज का था जो कभी धान्धेरे में साठ दिखाई नहीं पड़ रहा था। हठात् उसने रोषवी की। रोजनी लखे के बजाय हरी हो गई जिससे वह अपने धाप पर नु मत्ता लठी 'धान्धेरे से मेरा बिज

ठिकाने नहीं है। मन उबड़ा-उबड़ा सा है। कोई भी काम हम से नहीं होता।”

इतना सोचते-सोचते उसने हरी बत्ती बुझाकर सफेद रोशनी की। कमरा जगमगा उठा। तस्वीर साफ दिखलाई पड़ गई। वह कुछ क्षण तक उस तस्वीर को धर्ममयी दृष्टि से देखती रही और फिर सोफे पर बैठ कर स्वेटर बुनने लगी।

दीवार पर पड़ी की टिक-टिक कमरे की निस्तम्भता में साफ सुनाई पड़ रही थी। कीचड़ जो पाहू भी छोड़ती थी वह भी कमरे में महसूस हो जाती थी।

पड़ी ने बस बजाये।

वह चौंक उठी—“बस।

फिर ध्यान से उस बड़ी को देखा बास्तर में बस ही बजे हैं। उसके हाव भाव भी स्वेटर बुनने में व्यस्त थे। उसने बड़े-बड़े ही पुकारा—‘काका।

एक घंटी साल का बुढ़ा जिसके छिर पर सफेद बाल भास की तरह कड़े और कड़े थे जिन्होंने बिना बाँह की कमीज पर कासा मट-मैसा कोट पहन रखा जिसकी धोती पर दास-सम्मी के रंग बिरंगे शाम लगे हुए थे धामा और धपनी कठोर धावाज में बोला—“क्या है बेटा।”

“घाना क्या बना रहे हो ?

‘जो तुम कह दो।’

“धमी मेरे कहने का ही इन्तजार कर रहे हो ? धरे काका !”

‘बस बस बये हैं। क्या खाना पड़ेगा ? क्या खाऊँगी।

तमी दरवाजा खटखटाने की धावाज धाई।

“देगो काका कौन है ?

काका चलने को संभार हुआ कि कौशल ने उसे रोका—“कोई ऐरा-नैरा हो तो उस नहीं टाल देना। कह देना मेम साइब बाहर गई हुई हैं दो रोज बाद धायेंगी। कीचड़ भीरे से उठकर दुसलघाने में

सिर पर।

काका ने आवाज दी— 'मैम साहब, गोपाल बाबू हैं।'

'आइये।' मुससखाने से आवाज बेठी हुई कौयस निकली। उसके चेहरे पर हल्की मुस्काव थी। गोपाल के बिलकुल समीप जाती हुई वह बोली— 'आपके बिना मैं खाना भी नहीं पकवा सकती।'

'क्यों ? गोपाल ने कौयस के चेहरे पर निगाहें डालते हुए कहा। उसके स्वर और दृष्टि से बिस्मय तैर उठा।

'भाई, आप क्या कार्रवाई आपको क्या पसन्द होमा इसका मुझे क्या पता ? कौयस पुनः सोफे पर बैठ गई। गोपाल भी कोट उतार कर सामने के सोफे पर बैठ गया।

'मेरे स्वभाव की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि उसे या भी खाना मिल जाय वह उसे सहर्ष स्वीकार कर लेता है। जब तो यह है कि मुझे हर किस का खाना पसन्द है।'

'किर भी सपनी ?'

'कह दिया न, वो भी मिल जाय वही प्रशंसा !'

'तो काका दात बना सो' गोपाल की घोर सम्मुख होकर कौयस ने फिर पूछा— 'दात आपको उरब की सपनी सपनी है वा मूय की ?'

'कह दिया न किती की भी हो। साबुओं को खाद कैसे ?'

कौयस मुस्करावो घोर बोली 'दात मूय की बना लेना घोर ही पापड़ से खाना। गोपालजी, पापड़ बिना खाना नहीं कार्रवाई।

'नहीं होमा तो खाना ही पड़ेमा।' गोपाल ने हल्का ध्वज किया।

'घरे, मैं कभी से खाता हूँ गोपाल बाबू। बुद्धा बोड़े ही हो बना हूँ।' पचान काका ने अपने दोनों बाबुओं की देसा।

काका हँसता हुआ बाहर बसा गया। कौयस घोर गोपाल के चेहरे पर हल्की-हल्की विनोदपूर्ण मुस्काव फिर उठी।

उसके बले खाने के बाद गोपाल कौयस को काफ़ी देर तक बैसता रहा। कौयस का चेहरा पीठ या घोर धाँसे भली थी। हँस भी उसके

बुरे नहीं थे पर भीहँ बकरे धनुषाकार नहीं थीं ।

“मैं बता ।” गोपाल ने निस्त्रम्यता में अपनी धाराब से झंकार उत्पन्न कर दी ।

“कहाँ ?” कीर्णस चौंक पड़ी ।

“कलकत्ते !” उसने उसकी धीर बिना देखे ही कहा ।

“क्यों ?”

“यसा, यह कहाँ की सम्मता है कि मैं उसकी तरह गुपचुप बैठा रहूँ और तुम स्वेटर बुनने में व्यस्त रहो ।”

कीर्णस का स्वेटर बुनना जारी रहा । उसने ठनिक निगाहें उठाकर गोपाल की धीर देखा— मैं बात के तात्पर्य को नहीं तोड़ती हूँ । जो तुम पूछते हो उसका बराबर उत्तर देती जाती हूँ ।”

मैं इस तरह बात करने का धीर नहीं हूँ । मैं बालें कटते इत इत कट को भी धनिर्दार्य समझता हूँ कि बालें करने बालों की धालें धापस में बार होती रहीं ।” गोपाल के स्वर में निर्भीकता थी ।

“धालें बार होती रहीं । कीर्णस का स्वर बिस्कुल संमीर ही गया । स्वेटर पर बसने शानी संसुतियाँ पल भर के लिए रुक गईं । संसुतियों के रुकने में गोपाल के चेहरे पर नासिमा की हल्की रेखाएँ बौड़ गईं ।

“धीर धालें बार न हो तो ?” कीर्णस के स्वर में एक ऐसा प्रश्न था जो गोपाल की संतुष्टता को झकझोर रहा था । इससे गोपाल की बेतमा धीर उठी । धीर मिटाठा हुआ बोला “हाँ भाई धान हमसे धालें बार बौड़े ही करेंगी । उसके स्वर में ध्यंग की धपह उपहास धधिक था धाकि धिपय धनधींमुत्र न हो ।

तभी बीच में काका ने धाकर कीर्णस से कहा—“धिम साहब ! पापड़ नहीं धिने सभी बुकलें बन्द हो गईं । इतना कह काका ने अपनी धर्षन धनराधी की तरह मुका धी । कीर्णस ने जरा ठेज स्वर से धांग— “तुम्हें धीध धाम हो पय है धेरे यहाँ काम करते सेकिन तमीज धर भी तुमसे बोसों दूर है । धायो धैसा हो पका को ।” “गोपाल की



घोर धूमकर वह पूर्ववत् स्वर में जरा घोर लम्बाई का समिन्धण करके बोली—“भिरे ये नोकर विस्तृत नमकहराम हैं। मैं हूँ तो जरा स्वामी भक्ति का पाटं घटा करत हूँ वरना यह साध बर मुटा दे। यह तो जब-जब मैं नृत्य या नाटक के आयोजन में बाहर जाती हूँ तो अपने सामान के टाला लगा कर जाती हूँ। सब कहती हूँ इन नोकरों से मैं तम हूँ।”

वे दोनों चुप हो गये।

कमरे में बड़ी की टिक-टिक फिर सुनाई पड़ने लगी। काका ने प्रेमीठी जला सी पी जिससे बुबा उड़कर जब कमरे में जमा घा रहा या वहाँ ये दोनों बैठे हुए थे। सोपाल का दम पुटने लगा। उसने अपरिचित की भाँति पूछा—“बह बुबा कहाँ से घाटा है?” कौयस झप्सा पड़ी—“घरे काका। जरा तमीज रखा करो देख नहीं रहे हो कि वो मने घारमी बैठे हैं।”

“तो क्या हुआ?” काका ने धारण्य से पूछा।

“बोह। सब गोमास। मैं तो इससे परेशान हो गई हूँ। भाँव के धम्ये तो नहीं हो। यह बुबा तुम्हें बिलताई नहीं दे रहा है।”

“बुबा। हाँ!!” जैसे नीर में सोते-सोते जपा हो, उस तरह काका बीजा घोर कमरे से बाहर निकल कर उसने वह दरवाजा बन्द कर दिया जिससे बुबा घा रहा था।

“जब तुम बताओ कि घारमी वहाँ तक चुप बैठे रहे? घाविर झुंझसाहट घा ही जाती है। इस कमरेत को जरा भी घरत नहीं है। दिमाग जाट पात है।” कौयस के बेहरे पर क्रोध की हल्की रेखाएँ नाच गईं।

“तुम्हारी तकदीर ही कुछ ऐसी है कि जो मिलता है वह पूरा परदे-इवर।” उसके स्वर में सहानुभूतिपूर्ण व्यथ था।

“हाँ वास्तव में मेरी तकदीर इतनी गराब है कि मुझे कभी भी एक पल के लिए खेन नहीं मिलता। जीवन जीसता बरक-मुग्ध घागायें प्यासी कुछ तकदीर ही ऐसी है।”

“घब मैं तुम्हें खैल हुआ लमी लो कलकला से माय कर घापा हूँ।” उसके स्वर में बही उपहास था जो लव-परिविध प्रयत्न की घपन हृदय का प्रेम प्रकट करते समय होता है जिससे वह उसके माराज होन पर बह कह सके कि वह मजाक कर रहा था।

‘घरे जा रे जा घाये हैं मुझ जन देने बाने।

‘बपों, क्या तुम्हें मरा मरोसा नहीं? —बुद्ध पम्भीर होकर गोपाल बोसा।

‘मरोसा मुझे किसी का भी मरोसा नहीं। बीघस के होंठों पर धत्रीब-सी मुस्कान थी।

‘क्यों? गोपाल की घाँसे दिस्मय से फट गई।

‘मारे मरं एक दूसरे के बट्ट-बट्ट होठ हैं।

‘सारे मरं।

हां-हां! सारे मरं !!

‘घाप जरा होप में घाकर कीबड सछामा बीबिए। —गोपाल दिस्कुल मम्भीर हो गया।

‘मैं बहुत होप में हूँ। मरं का दूसरा नाम ही लूत है भूठ है।

मेम माहब! हाथ की पाँचों घमृमियाँ एक-सी होती हैं?”

‘नहीं।

‘फिर सारे मर भी एत से नहीं होत। घप्ले घौर बुने लमी घाप को मितेये। घाप में बीन में घबमुग नहीं है।”

‘मेरी बात लो जाने बीबिए, लेजिन मैं लख बाली हूँ सरोज बाबू न मेरे जीवत का मास कर दिया।” उसके स्वर का घावण घान्त हो गया। हल्की पहरी बामी घोरों में बेदना-सी बमबी। घपनी हट्टि को गोपाल पर घमाती हृदं यह बानी—“घाप नहीं जानने कि मरोज बाबू मे मेरे माय बितना बबेर लभूष बिया है। हम दिन को लपनी बनाकर रख दिया। एक इन्सान दतना बमीला हो मकता है हमका मुझ स्वप्न भी में भी क्यात न था। घाप बिबाम नहीं करेवे कि मैं बितनी दुगी

हैं। क्या मेरी नस-नस में समा गई है। सब कहती हूँ—इस जिन्दगी से डर गई हूँ। नुबसुरत खीन्ठ की दर्द भरी तस्वीर में हूँ। स्वर में वही भावना या धीर उस आदिम के साथ मूकता-हट भी।

‘फिर मेम साहूब आप उस आदिमी के साथ रहती ही क्यों हैं ? कुछ पीडा यातना धरंताप है फिर सम्बन्ध कैसा ? वह पति धीर आप पत्नी करी ?’

यह ताटक है। धानिर में करू भी क्या ? मरं के बिना तारी को कीड़ी की होती है इसलिये मैं धाने साथ धपने सबनायक को रखती हूँ। लोग समझें कि इस घोरत के भी धपना भला-बुरा एक पति है बेधापी कुसटा नहीं बबजात नहीं है।

‘तो धपने सरोज बाबू को घोट समझ रमा है ?’

‘धीर क्या ?’  
‘मत्सब ?’

‘आदिमी को कुत्ते के रूप में देगा है एक भयंकर कुत्ते के रूप में ? यह सरोज वही भयंकर कुत्ता है जो सीधे साधे-ओये भासी मनुष्यों को पचालक काट खाता है धीर उसका जहर उसके रोम राम में पीडा एक ऐसी प्रसन्न केबना उत्पन्न कर देता है जिसे उसकी धनुभूति महान नहीं कर सकती। यदि उस जहर के रोझने का गही उपचार न किया जाए, तो वह मनुष्य की मृत्यु का कारण बन सकता है जबका उसका इतना सतरनाक प्रसर होता है कि उस व्यक्ति के तनाम धन पिशा हुई मरीम की तरह बबाम हो जाते हैं। इसी तरह मरे जीवन की मयबर भूलों का निय मरे मून में पानी की तरह मिल जुबा है धीर उसने मरी कुशियों को इतना परबस बना दिया है कि धे धाने को सरोज बाबू के बिना धपंग पाती हैं। जैसे मुझे महमूम हाना है कि उसके बिना मेरा कोई अस्तित्व नहीं है। उसके माप से दूर रहने में मुझे चारों धोर का बातावरण विपाक आम पड़ता है। गमात्र की प्रत्येक पच्छी हरकत मुझे अपने पर हुई पिहम्बना भी प्रनीत हानी है। कहन का तात्पर्य यह है कि

मेरे जीवन के मुझ के अन्ध लागू प्रतिबन्ध के बुटनवार घावों के भय से सिहरने लगते हैं तब मेरा मन कमजोर पड़ जाता है, घाव सब सींग मुझ दुर्बल कहते हैं। मैं भी स्वीकार करती हूँ कि मैं दुर्बल हूँ यह भी समझती हूँ कि मेरे जीवन का अंत दुर्बल का पक्ष है। मेरी मृत्यु उस पापों की लड़पट्टी हुई मृत्यु होगी जिसकी मृत्यु घावों-घावों उसकी स्वांस का घामानी में निकलने लगी होती। मगाठार बोधत रहने से उनका वम पुनत गया। घावों के बाधा पर लगनता कमज उठी। जैसे उनके भयम बेदना भरी भङ्गन के हिमोतों में बरस जाना चाहते हों। अंत प्रत्यय में हन्का हन्का कम्पन था। गोपाल उसकी घोर आवाज बानक की भाँति बिम्बव भरी हृष्टि में देखता रहा। उसके नेहरु पर समय बरती पहरी देवायें उनका अन्तर की बेदना का साकार कर रही थी।

जब वह विस्फुल आदरस्त हा पई तो बोना — जब मर मिर म दंद होने लगा है। मुझ एवान्त आश्रित। जब घाव जा सकते हैं।”

गोपाल उठा। उसका मस्तिष्क भारी था। निश्चय की उपन-मुपल उसके मस्तिष्क में अभी हुई थी। वह बहा गटना चाहता था पर एक मर्दी था। साकार हो अपना बना-पीरे-पीरे बिना मोहन रिण ही।

जहद, मारी श्री साधारी —

किमी दायजिब मे कहा है कि किमी को दुःख मउ हा। रह रह कर मन मताघो। मठाने मे चरणा है कि किमी का गया भीर कर मार दो। गोपाल यह माच ही रहा था कि कोण ने पुकारा — ‘गोपाल!’

‘जी’ अंत पर मेटे-मेटे ही कहा। गवरे का धुन सि-विद्यो म ग दस कर था रही थी। मुझे मायूम नहीं म्भाना म जहद गा विग है। कोण की क्या भरी घावों उनके घावों पर दस भर क तित अम दस। फिर वह सीमा परंत कर्मी हुई बागी आदमी घाने का दस तरह वों मार लेता है।”

विदग्धानाथ कोण! परिस्थितियाँ न मगत सर्व का

परिणाम यही होता है। इसलिये मनुष्य को अपनी बचानी की जिम्मेदारी को बेचना चाहिए। बचानी जिम्मेदारी का उपहास करती है और जिम्मेदारी भविष्य की सुन्दर परिधि का निर्माण करती है। सुनीता को यह बिरबास था कि मेरे बितने भी घमने हैं, वे जीवन भर अपने ही बने रहेंगे पर वह यह नहीं जानती कि पू जी के मुँह में इत्साह इतना पतित हो चुका है कि यदि उबका बस बने तो वह मनुष्य की बचानी से निमित्त एक नई बस्तु का प्राविष्कार कर दे। उसके जून से किसी वेप परार्थ की तबीन बीपछा करते लेकिन बेकार बिबध है। कौशल ! क्या मैं झूठ बोलता हूँ ? सुनीता अहुर नहीं जाती तो उबकी साथ में कीड़े पड़ जाते कीड़ों से उत्पन्न दुर्मन्त्र उमकी साथ को इन्सानो-हाथ का स्वयं नहीं होने देती। मर गई तो उसका कल्याण हो प्य।"—योगज की घाँसों में कटु-यघार्थ रोप बन कर बमक उठ।

"कल्याण क्या बकते हो कोशास ? किसी की जान जाय और तुम्हें बेबपरबाजी मुझे। तुम इत्सानिमित्त से बिरते जा रहे हो ?" कोशास की घाँसों में मुस्से के साथ थोड़ा पानी भी दीप्त पड़ा।

"मैं इन्सानियत से बिरता हूँ या नहीं पर सुनीता ने जो भी किया घण्टा ही किया। उमने अहुर बितने मोके से घाया है। वह अपनी इस सम्झी बीमारी में जान गई थी कि किसी ने घाकर उसके बर्द में हाथ नहीं बटाया। किसी ने उसकी दबा के लिए एक पैसा भी उधार नहीं दिया। वह जान गई, सब स्वार्थ के पुठने हैं। मझे के साथी है लेकिन दुल का संपी बिरता ही मिलता है। इसलिये घमने अपनी बीमारी की भयानकता के बारे में सोचकर दुष्प्रान्त से बचने के लिए यह निर्गुण किया होया—घमी तो मुझे जताये ठक के जैबर मेरे पास है मेरी मिट्टी घराब हो इमसे पहले मुझे मर जाना चाहिए। इसलिये वह मर गई।"

घम कोशास भी झूठ हो गई। वह योगज की घोर बिबिध दृष्टि से देग रही थी जंमे उमकी म्बिर इष्टि में उसके बठारपन की पहरी

प्रियायत हो। उसने निरहंश्य हो अपने लसे-सूखे बॉब-बालों में अंगुलियाँ उलझाई। सीधे में बेहरे को देखा और सहमती हुई भाङ्गुला से घीरे से कह उठी—“मुनीता का गोरा बदन नीला हो गया या न ?”

“हाँ बहर के कारण।” गोपाल नीरस अज्ञानिक की तरह उत्तर दे रहा था।

“होटों पर पपड़ी-सी भी कम गई थी न ? गोपाल ! तुमने तो देते थे कि उसके होंठ कितने प्यारे थे।” कौसल की आवाज में भाङ्गुला भी बेदना थी तड़प थी। वह उसके चेहरे पर पुनः आँखें जमाती हुई बोली—‘घोर ही वह हँसती थी तो कितनी अच्छी लगती थी। वह तभी उसके मोठियों जैसे सफेद और कमबहार थे न ? गोपाल ! जब वह बोलती तो भी पाहता था कि यह बोलती ही न्ह। वह मुनीता मर गई उसने जहर खा लिया आत्महत्या कर ली वह मर गई।’ कौसल ने इस प्रकार भीत्कार किया जैसे उसके हृदय में दुःख का बाँव रुका पड़ा था और समय के साथ अपनी पूरी शक्ति संपूर्ण पड़ा हो।

‘संतार की यह परम्परा है कि मनुष्य मरने वाने क प्रति इतना सहृदयी बन जाता है कि उसकी ममता कुराह्याँ अघाह्याँ दीखने लग जाती है।’ गोपाल मम्भोरता से बोला।

“नहीं गोपाल नहीं वह वास्तव में बहुत अच्छी लड़की थी उसने कभी किसी का शिष्य नहीं दुपाया।” कौसल ने अपने आँसुओं को पोंछा। गोपाल न बात का रुख बदलते हुए कहा—“अच्छा कौसल मैं अब बसा मुझे बिस्तर बाँध कर घाब ही दिस्ती छोड़ देना है। यह उठ पड़ा हुआ और झूटी पर रगे कपड़े ठोक करने लगा। कौसल उसके पास आकर अनुनय से बोली—“यदि तुम घाब नहीं आघो तो ?”

‘मुझ जाना ही पड़या लौकर हूँ तो मेरी अत्येव इच्छा स्वामी के आशीर्ष है मुझे जाना ही पड़ेगा।’

गोपाल अपने काय में व्यस्त रहा।

घाब उसे दिस्ती घाये एक रूपता हो रहा था। इस हृत्से में उसने

गायक की धमिलैत्री व नटिका कौशल के जीवन के क्या-क्या रहस्य जाने कि वह उसे रहस्यमयी समझने लगा। वह उसके धमिलय से इतना ही जान पाया कि वह नारी है जिसके सरय के तथ्य से परिचित हुमे के लिए स्वयं विज्ञानु को पतनधीस बनना पड़ता है। वह कौशल उसके मित्र सरोज की नाम-मात्र की पत्नी है, या कहीं पासतू आनवर तो अनुचित नहीं होगा। आनवर इसलिए कि दो छोटी के टुकड़ों पर अपने महसूपूर्ण जीवन को बिटा रहा है वह जीवन को जिस जीवन का प्रत्येक पल साँस की तरह धमूस्य है। गोपास वही रात रिस्ती से रवाना हो गया। गाड़ी स्ट्रम के पाँच मिनट पूरा करने कौशल की छाँवों में एक मय देता था। तड़प दली थी।

सुस्वर सुवती, ममानक मोत —

मुनीठा

“ठसफा पार-सा मुजदा”

“उमके प्यारे होंठ

“बह पर गई”

कोसस उबर कर अपने बिस्तारे पर बैठ गई। उसके मोरे तनाट पर स्वेद-कण उमर घाये। सारा परीर पमीना पमीना हो गया। अपने धाँधम से अपना पमीना पोंछने हुए उसने सोचा— ‘इतनी सुन्दर सुवती की इतनी ममानक मोत ऐसा क्यों? एक सप्ताह में इतना परिबतन! धमिलन क्यों? इसलिए कि मुनीठा वा अपना कोई नहीं है! है तो सही यमुना तो है उसका अपना सारा भाई। पर भाई ने राती का साज नहीं रपी। जिसका हृदयहीन होकर उसने मुनीठा को उत्तर दिया था कि मैं तेरी बुनटा के पप को पुढेना तक बही जिसका धरिय पाप की सखी ठकीर है। वह कल मरती साज बरे। पीर मुनीठा ने जहर का लिया। जहर। जहर!! जहर!!!

कौशल के अलिख में वह उमर धमिलन-धमिलन होने लगा। स्वेद कण पुनः उसके तनाट पर उमर घाये। वह पीर पड़ी—मुनीठा!”

काका ने घाकर पूछा—“क्या बात है मेम साहिब ?”  
“पानी ।”

काका ने दीड़कर पानी पिनाया । बीसल कुस धास्वरत हुई । रैरामी तकिये में अपनी गर्दन छिपाकर बीसल ने जरा अपने भाप पर बिचारा । उसका भी तो इस संसार में सब कुछ होते हुए कोई भी नहीं है । यदि उसका भी भ्रम ? बहु सरोज को कोसने लगी । मही-मही गंदी गंदी पानियाँ निकालन लगी । अपने हृदय का घाकोघ निकालकर समने अपने भापको स्वरु किया ।

### पूरुमासी रस्ती घोर फण

पूरुमासी की उग्यन रात थी । बस-जसे बस नीम गपन म बड़ रहा था जैसे-जैसे बीसल का घावेग उप होता जा रहा था । कमी-कमी बहु पूरुमासी की फनी हुई चांदना को बेघर कर घनीठ की मपुर स्पुठियों में ली जाती थी । मदायक उनकी निमाह भूपता हुई रस्ती पर पड़ी । काका का नहीं । बहु उठी घोर उसके पन्थिक में मुनीता जहर सौलव्य घोर भयानावा घादि-सहर गूज रहे थे । बहु उठी घोर उसन कुज की कसना में याबातिक एवं उग्यादित हाकर रस्ती को फरे का रूप दे दिया ।

### घत निर्जीव मछमी

मेरी बहानों की नामिका ‘मछमी’ बराबर एक जसहीन मछमी के जो तड़प-तड़प कर निर्जीव बन जाती है । एक दूसरी गुस्वर नारी की भयानक पीठ होती है । “मछरी” उन दिनों किसी नाटक कम्पनी की नई हीरोइन के प्रेम में मग्न रहता है । मछने का कमीनामन नारी की मौत पर घामू नहीं बहाना । घाममी कुसा हो जाता है । मछरा बुद्धिहीन जानवर हो गया । पूजा में पालित घन । युग का हीन इन्सान ! युग—नारी घोर घमिघान । घाम का जनता पीवन ! बहानों घोर बहानीकार । हीरी घोर हीरोइन । इनके परे कुछ नहीं । यही कपालक पही बोके का घरा ।



## कथा परिकथा

“ ”

सम्बोधन क्या करें ? एक अपरिचितता को सम्बोधन भी जल्दी से नहीं किया जा सकता है । लेकिन तीन वर्षों को प्रेक्षक में कुछ-कुछ ऐसा समझने लगा है कि तुम मुझसे धीरे मेरी हरकतों से नाराज नहीं हो । तुम मेरी बातों का समर्पण करती हो ।

सच, जबसे तुम इस मकान में आई हो मैं निरन्तर इस खिड़की की तरह तुम्हारे भीचे तीरथ के मातुर्व्य का दृष्टि द्वारा रसास्वादन करता रहा हूँ और मुझ समता है कि वर्षों की प्रतीक्षा के बाद मैं जिस 'बीनस' को खोज करता रहा हूँ, वह स्वतः ही मेरे पास आ गयी है । तुम ही मेरी कविता की सजीव प्रेरणा हो मेरी आराध्य और एक ही पार्वत्य हो । तुम्हें एक बार फिर याद दिला रहा हूँ कि मैंने तुम्हें तीन पत्र दिये हैं । तुमने वे तीनों पत्र पाकर अपने धीरे धीरे चरवालों से किसी तरह की शिकायत नहीं की किसी तरह का विरोध-संबरोध नहीं किया तब मैंने समझा कि तुम भी मुझे उतना ही चाहती हो जितना मैं तुम्हें चाहता हूँ क्योंकि तुम्हारा मौन ही मेरे प्यार की स्वीकृति है ।

तुम्हारा नाम क्या है मैं नहीं जानता । किन्तु मेरा ऐसा विश्वास है मेरी कल्पना का वहना है कि तुम्हारे माता-पिता ने तुम्हारा नाम मुझसे वै क्व क्या रखा होगा ? तुम्हें पाकर हर मुकाम अपने को बख्त समझेगा ? तुम मुझे अपनी धीरे से स्वीकृति मिले हो । य समाज धीरे संसार से टक्कर मकर भी तुम्हें प्राप्त करेंगा ।

एक बात धीरे पूछना चाहता हूँ—तुम मुझे सदा याबोस धीरे बुन्दी-बुन्दी मजर से क्यों देखती हो ? तुम्हारे रसीले चबरो पर सूधी

मुस्कान क्यों खड़ी है ? कभी-कभी मैं इन सब बातों को लेकर बड़ा परेशान हो जाता हूँ । लेकिन इस पत्र का उत्तर नहीं आया तो याद रसना मैं बहर साफ़र धात्महत्या कर लूँगा । सोच लूँगा कि मैं किसी के नायक नहीं हूँ । मैं धमागा हूँ । मैं तुम्हारे पत्रका पूरे चौबीस घण्टे इन्तजार करूँगा । इस पर भी उत्तर नहीं आया और तुमन कोई पढ़बड़ी की तो मेरी भास तुम्हारी १४ लिङ्गकी के नीचे मिलेगी । मरी मौत का सारा पाप सारी जिम्मेवारी तुम्हारी होगी । बस

तुम्हारे पत्र का प्यासा

नरोत्तम उर्फ 'कवि कामस'

कवि कामस को इस उत्तेजना प धमकी से मरे पत्र के उत्तर की आशा नहीं थी । वह मुबह मुबह ही अपने बरामदे में एक कापी और एक पेंसिल लेकर बैठ गया ।

जैसे ही बारह बजे बसे ही उठकी नयी पबोसिन उसके सम्मुख उबास-उदान आकर बैठ गयी । आज उसने उसकी आर देखा भी नहीं । कवि महाराज का दिल धक से रह गया । उसने सोचा कि आज उसने धवरय उसके पत्रों को अपने बाप को दिया है । इस विचार-मात्र से उस के समाट पर पसीना छूट गया । वह उड्डिण हो गया । उसने भट से नीचे घांगन में आकर देखा—उसका बाप बहियों में उसका हुआ था । वह चुपचाप आकर बैठ गया । उसने सोचा कि धपर वह उसने पिता से वह भी देगी तो उसका क्या अहित होगा ? वह अपने पिता से सार साक कह देगा कि वह उसमे ही विवाह करेगा, वह उसके बिना नहीं रह सकता अगर उसकी सारी नहीं हुई तो वह मकमुप धात्महत्या कर लेगा । उसके चेहरे पर चिन्मी प्रमी की तरह वृथिम लड़ता आयी और वह धकड़ कर गुलाब को देखने लगा ।

तभी एक कापज गौलाकार में आकर उसके बरामदे में पड़ा । उसने सरककर उठे उठाया । मनकी बाछें धिल गयीं । लीर में जान था गयी । उसने पड़ा—

कमल जी,

मैं आपकी बमकी से डर गयी हूँ। मुझे लगा कि आप सचमुच घायल  
हूया कर लेंगे और आप की लाश मेरी खिड़की के नीचे पड़ी मिलेगी।  
इस दुःखस्वना मात्र से मेरा खून बरक की तरह बगने लगा और मैंने  
आप के पत्रों का उत्तर देने का निश्चय किया है।

मेरा यह पत्र ध्यान को मेरे बारे में सही जानकारी देना और मैं  
समझती हूँ कि आप इसके बाद अपना इराबा बदल लेंगे। मैं बहुत  
धमकी हूँ इसलिए मेरे बाप न मेरा नाम 'बिम्बा' रखा है। बचपन में  
मैं अपनी माँ को सा गयी ऐसा समी कहते हैं। मेरी बाबूजी भीषी का कहना  
है कि मेरे कारण जहाँ भी पड़ते हैं वहाँ अनिष्ट घबरव होता है। नहीं  
आपना यह 'पारिजात' गुणध्व की जगह संसारों की जलन न फैला दे  
यह विनाशकारी प्रकृत है। धरतु।

मैं आप को कुछ बातें बताना चाहती हूँ। पहली बात यह कि  
हमारे कस्ब में मेरे लिए उचित घर नहीं मिला तब मेरे पिताजी मुझे  
वहाँ से भाग्य। वहाँ मेरे साथक कोई न कोई लड़का मिला ही जायेगा।  
पर आप के पत्रों में एक नयी समस्या पता कर ली है। मैंने आपक पहल  
पत्रा को एक कवि का प्रमाण ही समझा था पर आपकी मरने की  
धमकी ने मुझे विचलित कर दिया और मुझे आपको पत्रोत्तर देने के लिए  
बाध्य होना पड़ा क्योंकि ऐसी जगहों से बटन बालों घटनाएँ या तो  
दिग्गमों में ही होती हैं या सरल जगहों में ही। पर आपको देखकर  
मुझे कुछ नयी अनुभूति हुई है कि ऐसी घटनाओं में सरल घम होता  
है। जब जब मैं आपको या जानूँ तो घबने आपकी घम समझूँगी।  
मैं कल्पने बहुत गुच्छ हूँ। मुझे भी आप पसन्द है। दोनों की बमन्द का  
परिणाम क्या होगा यह हमें बहसे ही जान लेना चाहिये क्योंकि समाज  
बड़ा निचवी है। समाज हमारी घोर धर्मों उठाये, उँगली उठाए इसके  
पहल ही घ वनों साहस करके अपने पिताजी से हमारे विवाह के बारे  
में बातचीत पक्की कर लेनी चाहिए। मैं आपको एक बात और बतानी

हैं कि मेरा बाप इस रिस्ते के लिए जमी ना नहीं करेगा।

घर में घापसे घपने बारे में कुछ कहना चाहती हूँ। मैं तेज बुद्धि की एक साधारण पढ़ी लिखी लड़की हूँ। घपनी म केरस ही एच घाई एन टी ए' ही सिखना जानती हूँ। हाँ घरने प्रत्येक काम में घाप मुझे बी० ए० घौर एम० ए० तक की उपाधियाँ बिना किसी हिबकिचाहट के दे सकते हैं। मुझमें एक घौर बिरोपता है जो घाप को सभकियों में बही मिलेगी वह है घाप क अनुसार पर का बजट बनाना। उस बजट मे घस्य बचन योजना भी घामिल है। घाप कबि है घौर मीने मुता है कि कबियों को 'बकपक' करने की बहुत घाबत होती है। बे बात-बात में घपनी घायराना उचितयाँ कहते रहते हैं जो मुझ कटई पमस्य नहीं है। मुझ मन्मीर घाबमी भण्डे मगते हैं बकबाबी घौर बातूनी मही। मैं बोलना पाहती ही नहीं। क्या घाप ऐसी घुज्ज लड़की को घपने सपनों की रानी बनायेंगे ?

बैबिय, सत मुझे बापहर तक मिस ही जाना चाहिए।

—बिन्ता

कमल ने उसी पत्र का उत्तर मिला था

मेरी प्यारी बिन्ता

तुम्हारा पत्र पाकर मेरे मन मन्दिर के बुझे हुए महस्य बीप जल उठे। मुझ ऐसा मगा कि मेरा मन उन प्रसन्न महुरों पर घट्योमियाँ कर रहा है जो बून मे प्रगुम-रुमर्न करने के लिए भाकुग रहती है। मैं घारमहत्या का िचार भी घब घपन मन में नहीं मारूँगा। कीन ऐसा बदनमीर इन्मान हीमा या तुम्हारा प्रगुम पाकर मरना चाहेगा ? बिना मीने तुम्हारा नाम पसती से तुनाब रत दिया है घब घपनी भून सुपार करता हूँ। तुम तो बहाग हो बोराने की बहार बपोंकि तुमने मेरे मीरम जीवन में बहार ला दी है। मेरे घरमानों में उम घाप को जम्न दिया है जिम घाग मे दिन के बून घिसते हैं।

मैं घपने बाप से घाज ही घपने बिबाह के बारे में कहूँगा। उम्हें

मेरा कहना मानना ही पड़ेगा। तुम्हें नहीं मामूम कि मैं अपने बाप का इकलौता बेटा हूँ और मेरी माँ का भी इहाँत हो चुका है ऐसी स्थिति में के मेरी बात नहीं टाल सकते।

मुझे पढ़ी लिखी लड़की की बकरा ही नहीं है। प्रायः मेरे जैसे भावुक हृदय के पुत्रक के लिए बहुत पढ़ी-लिखी लड़की एक समस्या और सिरदर्द बनकर रह जाती है क्योंकि आज की सिद्धि लड़कियों में अज्ञा और मकिन की जगह उन्हें और विवाह की छिन्न घबिफ होती है तथा के पठियों के कामो म कामिया निकाल कर वह बताना चाहती है कि हम विज्ञान हैं हम ध्यान से हार नहीं मान सकतीं बवेरह बवेरह।

और तुम्हारा निरन्तर मोन मेरे लिए महान भरवान ही समझो। तुमसे यह कहते हुए मुझे सज्जो हो रहा है। (संकोच का कारण अपने मुँह अपनी टारीफ) कि मैं एक विधिपूत गीतकार हूँ जामेनों में मेरा दीर्घ स्वान रहता है। बौतो की मेयता और मौलिकता पर विधिप ध्यान देता हूँ। और यह सब सभी समय है जब मैं बटों ही चिन्तन-मनन के सागर में पीठे मगारा हूँ। एक इहस्थ के लिए यह सभी समय हो सकता है जब जसकी पत्नी बातूनी न हो। सब मेरी बहार, तुम मेरे मनोनुभूत निकमती जा रही हो। अपर साथी बुनिया भी हमारा विरोध करेगी तो भी मैं तुम्हें प्राप्त करूँगा। —कमल

कवि भी

आपका पत्र मिला। आपने जिस भारतीयता और बुद्धता का परिचय दिया है उसमें मुझे बल और सम्बल दोनों मिल रहे हैं। मुझे पहले ऐसा महसूस होता था कि मुझे कभी भी अपने लिए एक अच्छा पति नहीं मिलेगा पर अब मेरे मन के विश्वास बदल रहे हैं। मैं धमानी से तुम्हारी बन जाऊँगी। मुझे एक अच्छा बर, सुन्दर पति मिल जायेगा।

अब मैं आपसे एक आशिषी सवाल पूछना चाहती हूँ। क्या आप पृथ्वी के सौन्दर्य को अधिक चाहते हैं या धारमा के? मान सीजिके, कम मुझे जवानक बैचक जिस धाये और मैं बदस्तूर ही जाऊँ। मेरा यह

पौरा रंग मुझील कपोस पहरे हागों से भर जाये या मुझे कोई ऐसी बीमारी लग जाये जिससे मेरा उकताता हुआ जीवन कपो से उष्ण और बुद्धिया की तरह दाँत व निर्वीज हो जाये तो भी क्या घाप मुझे इतना ही उत्तमनापुण प्यार करेंगे ? मुझे इस मजान का जबाब तुरन्त दीजिये ।

—बिन्ता

प्रिय बहान,

तुम्हारा उदास काफ़ी बिचारपूर्ण है । छादमी के प्रेम के प्रसती नकसी रूप को प्रकट करन बासा है । धार्मिक और नायिक प्रेम में मैं तो धार्मिक प्यार को ही सर्वोपरि मानता हूँ । इस प्रेम में स्थायीत्व और स्वाध की भावना रहती है । मैं तुम्हें चाहता हूँ पर इसमें भी अधिक चाहूँया तुम्हारी आत्मा को । जब मेरी अधिक परीक्षा न लो । मैं जब यह मान चुका हूँ—प्यार बिदा नहीं जाता हो जाता है । जब जब मैं अधिक देर तक इस गमी का फाससा नहीं सह सकता । तुम बीमती क्यों नहीं, एक बार तो पुकारो मेरे 'बसम' ।

—कमल कवि

कमल जी

पत्र मिला, उत्तर दो दिन के बाद द रही हूँ । यह रिश्ता हो इसके पहले मैं घापको एक कट्टु सत्य से परिचित कराना चाहती हूँ । ममल-पहमी छम कपट और बिधी रहस्य का रहना प्यार को उन्नत का कम कर देना है और छेप जीवन में अहुर और चुला भर देना है । मैं घापस ऐसी घावा रसादी हूँ कि यह कट्टु सत्य घापक हृदय के प्यार में बनी नहीं घान देगा और न घाप घपन घादगों न ही हट्टे ।

यह सही है कि मेरा मीन घापके बिचन मन में एना बिद-महमाप देगा कि घापन । बिचनार एक दिन बिदक-भ्यापी स्थाति घाबिन कर मेंगी । मैं घाप से जीवन भर नहीं बोवूगी । घाप यह अशुधी तरह जानते हैं कि मैं इसी बरामद में पीन बठी रहती हूँ । क्यों ? दसिय घान घाने

हुए स्वर में बोला "आप मुझे समा कर लीजिये ।"

बिम्बनाथ ने चिन्तितकर कहा "वह गुरु से ही ऐसी बटघर  
धीर घतान रही है । धाजकल के मजनुधों फरहारों, रोमियों को यह  
सुन सबक देती है । मेरी तो इसने क्षति परीताएँ ।"

बीच में सरिता ने कहा "मैं बाण लेकर धमी धामी ।"

'जवा यह सरिता यही सेविदा है,' कर्मन्त ने मन ही मन कहा,  
जिसकी बहानिपी धाजकल बड़ी सोहप्रिय हो रही है ? धीर उसके  
भात पर पसीना धा यमा ।

## दार्शनिक

सगर मातृकता मरी दृष्टि से सागर और उम्में उठती लहरों को बैलकर कह रहा था 'भीम ! तैयो स सागर के मोम्य दून पर टकराने वाली इन बकस लहरों का कितनी मातृकता से घाकर दूनो को स्पष्ट करती है और पुन बनी जाता है। लेकिन इस बीच प्रमी कितारे को देखा जो दिन प्रतिदिन अपना अस्तित्व मिटा कर भी दूनम दूर रहना चाहता है। कसा बिचित्र प्रेम है? — और पर एक गम्भीर हँसी हँस कर उभी स्वर में बोला— इगलिये मेरा अपना मन है कि मानव को हुमेगा पारोदिक भूम मिप्या स दूर रहना चाहिये ताकि वह अपना अस्तित्व न खोने स समय हो सक और इभीमिदे मैं प्राध्यात्मिक प्यार मे बिदपास रगता हूँ।"

दोस बैरना मरो पुनपुमाहट के उपरान्त दोपायोग करती हुई बोली— 'किर आपने मेरे जीवन मे सेसने का साहम क्या किया ? किसी भी परपर की निप्याण मूर्ति से यहि आप मार कर सक्ते थे किमी भी बिच को अपना प्राध्यात्मिक प्रमिया बना कर अपने हृदय को भावनाओं-आमनाओं को कृन्त कर सक्ते थे अपना मृत नदी लहरों याहि बलुणों की अपनी मामसिक प्रवृत्तियों का प्रनीक मान कर अपने मन की ब्यथा मुना सक्ते थे ? किर मेरे जीवन को बिनाग की घाम में ही क्यों देना ?

'मैने ? मैने तुम मे ाबबाह पकर किया था मेरी धारमा इसकी लागी है कि तुम मेरी पत्नी हो। —मै तुम मे प्य र सब भी करला हूँ लेकिन तुम्हारे पारिद न नहीं। जाया मो जाया और ही भीतर से दरबाया पचदी तरह बन्द कर लेना।"



“क्यों ?”—प्रश्न घरी दृष्टि से चील ने पूछा ।

“... हूँ बस कह दिया न, बम्ब कर सेना” फिर कुछ स्फुट बोला, तुम डार गुमा रख सकती हो बुना रख सकती हो ।” वह चली गई ।

विवाह के उपरान्त दोषर की मानसिक स्थिति विचित्र हो गई । सुह्राम राठ की मुमनों से महकती सजी धँसा पर बैठी दुग्हन चील की ध निगन में भाव्य करते-करते न जाने क्यों बड़े एकाएक खीड़कर चला गया यह चील मात्र एक नहीं जान सकी । फिर एकाएक धपती नौकरी से इस्तीफा देकर दूर बहुत दूर चला गया । चील को बराबर कतकते से अपने भेजता रहा । चील भाग्य करती रही कि मैं तुम्हारे पास आना चाहती हूँ पर धकार ने उसे पास कटकते ही नहीं दिया, पता नहीं क्यों ? फिर एक दिन उगने सपत्तरी की स्टेमो-टाइपिस्ट मिठ रोजनबरी के पास पर उसके घर में तमाचा मार दिया ।

रोजनबरी उसे धपने घर में गई थी । उसे प्यार भी करती थी । पर एकाएक दोषर का यह बयान रूप पाकर वह डर गई थीर अपने सारे हस्तर में इस बात की खर्चा कर दी कि दोषर बाबू का भाषा कथक है । वह किसी से प्यार नहीं कर सकता । खर्चा जोर कर चली थीर दोषर की गारियों के प्रति पत्नी मूर्खिया जब उसके मानिक में सुनी तब अपने चील को पत्र लिख दिया, दोषर बाबू एम० ए० इन डिप्लोमटी का मस्तक मात्र कस ठीक काम नहीं कर रहा है । धाप इन्हीं यहाँ से चील से पारये ।

चील गई थीर दोषर को वापिस घर में आई ।

दोषर विचलित-सा होपया । कुछ देर तरु मीनाबस्या में विचर्य बैठा रहा । फिर मेज की सपत्र से सतरंज निकाल कर धकेला ही रोमने ममा । एकाएक उसकी दृष्टि सामने वाली बीवार कर धकित एक लपटिनी के बिज कर नई जो बेस्य बस्य पर पहने हुए थी पवान थी

घोर जिसकी आँसों में सामिना छार्ई हुई थी। उस बिज्र में एक भौंपड़ी का दृश्य था जिसके द्वार के समक्ष एक योगी बंठे हुए थे। यौबना नत मस्तक मार्ग तय कर रही थी। एकाएक देखकर बिस्ता उठ्य "सब ! तुम वास्तव में पुनर्जीव हो। पुण्य की घोर दृष्टि भी नहीं उठती। इस पर्व की प्राप्ति में यह भीतराय भग्य-भग्य घोर जरा शीम को देखो, मुझ से समीप के सिधे प्रतिपाल घातुर रहती है, सकिन् मुझे इस पापमय कृत्य से बुरा है।"

तमी उसे किन्ती की पमध्वनि सुनाई पडी। उसने भागकर दरवाजा बन्द कर लिया। शीम ने बाहर से पुकारा—“तुम प्रसमय किससे बात कर रहे हो ?”

देखर गब से बोला— कुप ! मैं घपनी सच्ची संमिनी से बार्ता कर रहा हूँ। तुम पनी बाघो जाघो।

मीस समके इस व्यवहार से लक्ष्य सटी। बहु जानती थी कि भापु कता घपनी पराकाष्ठा तक पहुँच चुकी है घामर उसका पति मस है या हो जायेगा। सेकिन देखर कहता ही जा रहा था। 'हमारे देश का धाम्यारमबाद घमर है। बिज्र प्रसिद्ध है। कितने ही महान् योगी राज इसकी घमर साबना करते करते निर्बाण वा गये घौर के भीतिबबारी सये निरा बकोमना समझने हैं। बुद्ध कहीं के मूस' 'पामर ।

'हमी गतरज के बादगाह को देखा म, बहु भी प्यादियों से घूर रहा है घौर गार्बप्रबम उन्हें ही धिने लगाता है क्योंकि बहु जानता है कि ये प्यादियाँ स्त्रियाँ हैं इनमें मौनिक प्रेम की बू घाटी है घौर बाद गाह ? हाँ ! मीमी भी ता राष्ट्रपिता का बादगाह का, बहु घपने घामम में मुबतियों को रखता था ?— बहु घाम्यारमबारी था"—घौर देगर दोनों हाथों से घपना मर पकड़ कर बँठ गया। बँठा ही रहा रात क दो बजे तक। सील बड़ी पगेधारी से मुराग में से देगर की हरकत को देगर बाहर बहरकर लगा रही थी।

"समझा" —देगर हठान् उठ्य—“समझा बापू मुबतियों में घाम्या

लिनक भावना मरना चाहता था। वह जनका और अपना धारम-निरीक्षण करता था। उन्हें भी जीवन के सत्य-दर्शन से मित्र कराया जाहूँ था। और मुझे भी ऐसा बन्ध्यालकारी मार्ग प्रदूष्य करना चाहिए। मुझे भी धार की इन बचत छात्रियों को भारत के प्राचीन धार्मिक धार से परिचित कराना चाहिए। कल में भी एक समा का आयोजन करूँगा। । उसमें हजारों युवतियाँ होंगी। मुझे सोच पुन्यमाताओं (पहमायसे) मेरी प्रमदप्रकार से मगत को मुजा देंगे और तब मैं कहूँगा—'देखर देवत पर खड़ा होवया और एक बार इस तरह कमरे की देखा जैसे उसमें हवागो युवतियाँ लड़ी हों। तब बोला "भाइयो और बहनों। इस भौतिक विज्ञान में भारत के संस्कृति मूर्त को बहण समा दिया है। हमारी इस बन्ध्यालकारी धार्मिक शक्ति का हूँ कर जामा है, हमें गहनगर्त में डकेल दिया है। धार हूँ फिर अपने उस बुन की धोर बलना होया जिस मुग में हय पुष्पों में रहते न, बन्धुन पह-नते से मोह से दूर रहकर एक भीतरापी का जीवन बिताते के।"

तभी एक पाबल को उसके कमरे के नीचे खड़ा था और से हँस पड़ा और बोला—"पायल मैं पायल हूँ मैं कमजूर बन रहा हूँ।"— और वह फिर धोर से हँस पड़ा।

"सामोय ! मैं बन नहीं रहा हूँ। और देखर मैं एक धोर का मुनका मेर पर मारा जिसे मुनकर भील बबरा गई और किबाड़ लटपटा कर पुकारने लयी—'धारी ! धाय धारी रात बने बना कर रहे हैं ? किबाड़ सोनिये मुनिये मुनिये।"

"मैं बहूँ हूँ तू सामोय रह। मैं मेरे बचंम, मेरी-बाईनिकता पर बन्देह कर रहे हैं। मुनो भाइयो ! धार्मिक बहूँ धारि है जिससे हम बड़े-से-बड़ा हूँ बन्धुन कर लकटे हैं। महारमा गोपी को ही भीजिये ।"

"तभी तो पोती से मरे।' जैसे सगा, ऐसा कोई कह रहा है।

"धीरी से मुसों अपने मित्रान्तों के लिए मरना भी एक बहालता एवं धार्मिक शक्ति का परिचय देना है। तुम नास्तिक हो, तुम्हारा दर्शनार्थ

हो जायेगा। तुम कुछ नहीं जानते ?

तभी धराधी जोर से हँसा— 'हा हा हा हा।

'हँसो खुब जोर से हँसो पापियो। मुझे भी देखा कमी किसी नाचि को स्पष्ट तक नहीं करवा हूँ। नाचि नर का पठन है। धारीरिक भूख पाप है। मेरा बच धार्म्यारमबाद का गुरू रहा है धीर मैं इसके गुरुरव की रसा करूँगा।

'यह प्टम बन्ब पड़ा है बचो दुनियाँ के सोगो बचो नहीं तो मर जाओगे।' — धराधी फिर चीला।

'मैं नहीं मरूँगा। धरार को जमा जैसे उसे कोई कह रहा है— 'तुम मरोग जकर मरोग।

मैं नहीं मरूँगा—मैं धरार हूँ।

धरार भर के लिए पान्ति छा जाती है।

धरारक उसकी दृष्टि तपस्विनी पर धरार पुन' रुकी। धरार को सगा वह उसे बेसाकर हँस रही है। वह बड़े धार्म' स्वर में बहने समा— 'तुम भी मुम्हरा रही हो ? तुम तो मेरी हमदर्द हो। धार्म्यारमबाद की पोपक हो ?

"मैं तुम्हारे धार्म्यारमबाद को नहीं मानती।"—धीस बाहर से बोय मरे स्वर से बिस्साई।

धरार मातुवता में लीन था। धरार से मुम्हरा मारता हुआ बोला तुम्हें मानना होगा तपस्विनी ! तुम्हें मानना होगा। क्योंकि तुम हमारी ममर्षक हो।"—उसने बिज की वेनी दृष्टि में बुरा।

मैं तुम्हारे पापमपन की समर्षक नहीं हूँ।" धीस ने फिर कहा।

तुम नहीं मानती ? नीच पठित धोनेबाज !! धीर देखर मे स्वाही की दवान को बीबार पर है धारा।

ठोड हो सामान की, जसा हो धर को सेकिन मैं धरने धीबन को तुम्हारी हम धार्म्यारिकर धाय में नहीं जसने दूनी।—मैं तो धर हमेया के लिए यहाँ से बली तो समालो धरना धर-बार।"—

सीमा बाहर से थिल्लाई ।

“बसो कहाँ ?—मैं तुम्हें नहीं जाने दूँगा कभी भी नहीं जाने दूँगा । तपस्विनी ठहरो ठहरो तपस्विनी ।”

‘नाच’ ‘नाच’ ॥

“तपस्विनी” “तपस्विनी —घोर डेकर बिड़की की यह दूर गया ।

धीरे धीरे मार कर बहोष हो गई।

बिड़की के नीचे उत्तम तरंगों के साथ बहता हुआ समुद्र था जो गरज कर लम्बे भर के लिए धालत होगा था और जब नीरवता में किसी की सिधकियाँ सुनाई पड़ रही थीं ।

## विश्वामित्र की खोज

पन्द्रह अगस्त का दोपहर का समय था। ज्ञान किसे के तीरण द्वार पर सृष्टि संचालक ब्रह्मा विष्णु और महेश व्याकुलता से प्रतीक्षारत नयनों से दूर सड़क पर देख रहे थे।

धूप ठीक थी। महेश ने विष्णु भगवान के दुपट्टे का परखा कर लिया था। पर धूप का ताप उस धीमे दुपट्टे से नहीं रुक रहा था। सब परेशान थे सब बिचिंत से दुःखित थे।

अन्त में अम्ला कर ब्रह्माजी ने कहा, "यह विश्वामित्र महान ब्रह्मर्षि है। जगवान जाने बिना वहे-मुझे कहीं गायब हो जाता है। और उमर महात्माजी समस्त साधुओं का संगठन कर के स्वर्ग में भाव कर रहे हैं कि हमें हमारा विश्वामित्र चाहिए। असौंकिह है य परेशान करन बासे धातुनिक सिठाव। यह न करे तो हड़ताल यह न करे तो सरवाग्रह। कामबर्कनों ने तार्को-दम कर रखा है।"

तभी बँट बचने की आवाज आई "बन मणु मन धयिनायक बम है "

विष्णु ने तुरन्त एक टोपी में धंजुन बांध कर नीचे लटका दिया। उनका कहना था कि वह होती में बर्कनों की तरह इस धंजुन से प्रयास बंधी की टोपी ऊपर धीब सँवे। जब वह यह बमरदार शिल्ले ती तुरन्त ऊपर धार्दे। तब उनसे मांग बी जाएगी कि हमें हमारा विश्वामित्र दो स्वर्ग से भाव कर मृत्यु लोक में दिता बैठा है। बरना प्राणामी बुनाम में धावकी पराजय निरिचत है।

तभी 'नाचयण ! नाचयण ! की ध्वनि धलापठे भारदकी कपारे ।  
भाज उनका रंग ही बबला हुआ था। हवाई घट रेवमी पैट, पंच

धु धोर मसे मे इंगरीड की बनी हुई टाई । हाथ में बीणा की कमल  
बस्यल । केवल उलक शिर मु दन ही पहुँचे कसा या करना इस बलि  
काज म उन्हें पहचानना मत्पण कठिन हो जाता, क्योंकि एक बेहुर के  
कई बाबमी देखने की जो मिलते हैं ।

विदेकों ने एक साथ तीव्रता से पूछा : "क्यों नारद, निरधामिन का  
पता क्या ?"

"कम तमा महाराज बस गया ।"

"वहाँ पर ?"

"बता रहा है बता रहा है जरा नुस्ताने तो बीबिए ।" कह कर  
नारदजी नन्दी-नन्दी लौट सने सब गए ।

"धति धानम् ! धति धामम् ! नारद की कोटिष्- सम्भवाद ।"  
कह कर भगवान् शंकर ने धपनी विभज निकाल कर अधिधाम से कहा,  
'इस प्रसंगता की बात पर दो दम मन्त्रि के सग जाए ।'

नारदजी ने तुरन्त शंकर की ओर बहू से देखा—"आप इस पुरानी  
विभज के पीछे क्यों पड़े हुए हैं । बीबिए, यह विमरेड पीबिए ।" नारद  
जी धपेजी य भासे ।

'हरे ! हरे ! हरे ! यह क्या उठा साबा है व्र ? यह तो  
म्लेच्छों की बीज है । इसे छूना भी महापाप है । इसे हनते हुए रख ।  
घोर तु विदेसियों की भाषा बोलता है ? कैरे जैसे व्यक्ति ही पापुभाषा  
के दरपान में रोहा घटका रहे हैं ।' भगवान् शंकर ने धपना मु ह बूछरी  
घोर पुमा सिबा ।

नारदजी ने धपनी सफाई वेड की "वर्तमान युग में जातिधर  
वानने बाबा धंतान कहसाता है जमे लोग ब्रह्मा की दृष्टि से देखते हैं ।  
घोर छिर आप तो समादृष्टि रखने भासे हैं ।"

"तो तो है ही ।" शंकरजी मुर्त बडे । "पर सब पर नहीं, केवल  
धपनों पर । धमम् ? हमारी विभज ही धपेजी इन लो पाया ही  
पियेगे ।"

भगवान न मारदजी को समझाया "धैर्य में समय नष्ट करना हम बड़े बेबी के लिए अयस्वर नहीं है, मारदजी। आप बिस्वामित्र के बारे में अपनी विस्तृत विज्ञप्ति उपस्थित करें।"

मारदजी सिगरेट का कम धाम से खींचत हुए बास "मेरे घाबर एीय दबी, सर्वप्रथम मैं आपसे प्रहण करता हूँ कि या कहूंगा वह सत्य ही कहेगा।"

"हमें तुम्हारा विश्वास है। प्रहारी ने कहा।

"मैं बिस्वामित्र को बहारा में दू टटा-बूटना बीकानेर शहर में पहुँचा" मारदजी ने कहा भारत की। यह शहर रेगिस्तान के मध्य में स्थित है और बड़ा ही सुष्क है। माँति माँति के लोग वहाँ निवास करते हैं और माँति-माँति के घरों में लोग मग्न हैं।

"मैं भी भ्रमण करता-करता बयोबाजार में पहुँचा। देखता हूँ कि शहर में एकाएक अद्भुत हलचल मच गई है। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वहाँ से अत्यन्त शुभ समाचार मिला है।

शहर में चलने वाले के सार का अर्थहीन भी अस्तित्व में खुबल से कर रहा 'मेरे मारद समाचार क्या होगा—किमी राजा के लडका हुआ होगा।

'नहीं।'

"नहीं तो किमी रानी के हुआ हीया।"

"नहीं।"

'तो किमी राजकुमार के हुआ होगा।'

नहीं नहीं नहीं!" मारदजी मन्ता पडे।

"किर हमारे समझ में किमी दासी के हुआ होगा। क्यों ब्याजी?"

'सत्य बचन है, विद्वान्। ब्याजी की घाँसें सिगरेट पर जमी हुई थीं।



सत्य नहीं है जो मैं कह रहा हूँ” नारदजी ने अपने गले की टाई को कृष्ण डीला कर के कहा “मैं हसबस का कारण बूढ़ने लगा कि मेरी सासिका के रथों में सेव की भीनी भीनी लमकीन सुपंख आई। सेव क्या थे—उसे सेवा ही जानिए। मेरे मुँह में तो पानी घा गया।”

भगवान हाकर बिसबिसा कर हँस पड़े। ‘पानी भर धाया तो खरीब क्यों नहीं लिया ?

“ब्रह्म समाप्त हो चुका था। यह लक्ष्मी भी तो भगवान विष्णु के घर में ही तो है। हमारे मन की तो मन में ही रह गई। जब कमबलत दुकानदार ने मेरा सूटबूट बेच कर मेरे मन के भाव को तुरन्त तड़ लिया कि इन साहब के पास ठगठग-भोपास है और फुरक-फुरक कर बर्बन स्वर में धलापने लगा :

“बाबूजी की घाग गिरानी  
 दिस थी खासी जेब नौ खासी।  
 फिर भी धकड़ दिबाए  
 ही बाबूजी समझ न घाए।  
 सारे लप्या सारे लप्या साईं रघरा ”

नारदजी झूम झूम कर गा रहे थे। उन्होंने जैसे ही गाना बम्ब किया बँठे ही बिरेब बिस्ता पड़े “बाह, बाह बाह ! ऐना मज मुन्दर पीठ हम ने किधी युग में नहीं मुना। सरन राग्याबनी, स्पष्ट भाव धीर छपकती हुई तान। बाह बाह !

“साईं नारद” ठोडबकाठी अिब झूमते हुए बोले “मह पीठ तो हमें भी सिधा हो। पार्वती मुन कर मस्त हो जाएगी।”

हंकर की अनाजी आवाज पर ब्रह्मा, विष्णु धीर नारदजी मुस्कण पड़े। हंकर उन्हें देरा कर भेंव घए।

“झोने की कोई आबरवठा नहीं है” नारदजी ने कहा। “बह

गीत ही ऐसा है। इसमें जनता-जनार्दन के मनोभाव हैं। यहाँ के पित्र्य निर्माताओं का कहना है कि इससे भारतवर्ष के बच्चों का नैतिक पतन कमी भी नहीं हो सकता। हाँ तो मैं उस बुकानदार की बात कह रहा था। उसी समय एक व्यक्ति ने आ कर उस बुकानदार से कहा 'मुना भोगिया, योमे दरवाजे के बाहर एक महान योपी धाया हुआ है। वह नौ दिन से समाधि लगाए है। उस के दोनों हाथों में पुष्पार उप धाया है। जसो हम भी बर्बन कर घाएँ।'

जकर, जकर। ऐसे महारमाओं के दर्शन दृग कमिवास में बहो होते हैं। मैं अभी बुकान बन्द करके तुम्हारे साथ चलता हूँ।"

भारवजी ने कहा 'मेरी भी जिज्ञासा जाग्रत हुई। मैं भी उस घोर पीडता से चरण उगता हुआ चल पड़ा।"

योमे दरवाजे के बाहर एक बयीबी थी जहाँ मुख्य रूप से मोग मुबह घाम चौबारि से निवृत्त होने जाते हैं। जहाँ एक घुका में महारमा ने डेरा बसा रखा था। उसके हाथ में वास्तव में पुष्पार उप धाया था। एक घामे में शीया जल रहा था उसका प्रकाश सीधे महारमा के मास पर पड़ रहा था। जमकता हुआ ज्ञान उसके लप की महिमा का रहा था। उसकी समाधिस्व काया के सम्मुख माया को एवचित्त करने के हेतु एक बड़ी घामो रखी हुई थी जिसमें माया जमक रही थी।

'उस घुष्य में दो दो व्यक्ति पुसते थे घोर पीड ही उन्हें बापस नीट धाना पड़ता था। मैं उस महान धारवा की सीता का घबिक काम तक घुष्य उठाना चाहता था। इसलिए मैं न जिबजी को दो हुई जम लारी घंडूठी मुँह में रख ली। जब मैं किसी को नहीं पीछ रहा था घोर मुझ सब दिमाई पड़ रहे थे।

"घोड़ी देर बाद मेरी हृष्टि एक धापन्त रूपवती गजपामिनी मन भावनी पर पड़ी जतने रीघामी पीठ बस्त्र बहन गौं से उन पीठ बस्त्रों में उचका पीठ रंज इस भांति जिन गया था जसे नीर में शीर। उसके

पावों के त्रुणुरों से मञ्जुर संकीर्त-मञ्जरी उत्पन्न हो रही थी। संजन-से मयमो में रति के साधनों-सी मादकता नामुनों पर अद्विष्टिमा का सेपन, क्या कहें महाराज वेगकर अपना मन श्री पाप में पड़ गया।

ब्रह्माजी ने व्यस्य किया "इस बार संनूर बनने की इच्छा थीक्या ?

नारदजी भ्रों पए पर यह सौक कर कि पुरानी बातें पुन तुम न पा जाएं उग्रोंने कहना आी किया "बहु सुबती अत्यंत भावभक्ति से योगीराज के दृष्टन करते-करते उसने ज्यों ही उसके पांश छुए त्यों ही योगी ने अपनी धाँसों सोन डी।"

धा-बर्ब ! निरेव नारदजी की घोर फटी हुई धाँसों ने देस कर छाप बोसे। "पासंडी कही का !"

'यह पारोप उत पर मन लगाइए। यह तो उसके जन्मजात सस्कारों का प्रभाव है।"

कसे ? बिप्लु ने पूछा।

'पहले पूरी घटना तो सुनिए।" नारदजी धा-बस्त हो कर बोसे। "उम समय पुपा में कोई अण्य प्राणी नहीं था। बुबती जन अनीकिक धारमा के चरणों को दबाती रही। तब साधु ने नामुबासी स्वर में कहा 'देवी ! मैं ब्रह्माजी हूँ साक्षात् ईश्वर हूँ। अभी मेरा मन स्वर्ग में विचरतु कर रहा था पर तुम्हारे हृदय की कामना ने हमारी समाधि को भन कर दिया है तुम्हें क्या हुआ है ?

'सुबती का अंम प्रारंभक पुमकिन हा उठा। अचरों पर भेद मुगवान भाती हुई बहु पीरे रा बोसो 'अमु में एक मगपती की अरंभ नानडी बहु हैं। जीवन का हर मुग सुभे है पर न जाने किस पर के कारण मैं बीम्ह हूँ। भगवान मैं पुन का मुह देखना चाहती हूँ। उसके जिना मेरा जीवन नरक के समान है।"

"धारधर्य ! योगी ने अपनी बड़ी-बड़ी धाँसों धड़ कर फटे स्वर में कहा— तुम जैनी सती नापी के संवाग न होना महान धारधर्य की बाग

है। बेबी, मैं अपना बड़ा-तेज से कुराधारिणी के भी संतान उत्पन्न करा सकता हूँ।'

'महाराज यदि मेरे संतान हो गई तो मैं आपकी मांगामान कर दूँगी। अपने पुत्र का नाम आपके नाम आपके नाम पर गावू ही रावू थी।' यह कर मुक्ती साधू के चरणों के दबाने लगी। साधू को रोमांच हो रहा था। उसे मुकमुक्ती भी हो रही थी।

'जरा धीरे धीरे से दबानो तुम्हारा कर्जाग होना बर्याण होना बर्याणी जायो। उलझना के मारे योगी की धारणा बर्न रही थी मुक्ती उस विचित्र दृष्टि से देख रही थी बड़ी मुश्किल से योगी ने अपने को संभाला जरा हट जाओ हूँ अब ध्यान र कर गुना मैं यह प्रबंध तेज बाधा छुपि है, जिसने एक छप्परा को जिस भावकस बेरना कहते हैं एक ऐसी पुत्रों का बरदान दिया जिसका भटा बरदान सन्नाट बना।

'सारी मुक्ती का राजा। मुक्ती की धारणा धारण से स्थिर हो गई। हूँ।

'यह छप्परा कीन थी महाराज ?

'योगी ने यह से कहा 'यह छप्परा मेनका थी—इन्द्र की छप्परा। उसी का मङ्क्रे के नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष पडा देशी

संकर ने कहा "पहचान गए नाग पहचान गए उस निठले को।"

ब्रह्मा ने तेज स्वर में कहा, "मैं तो पहचान ही जानता था कि यह किसी मुक्ती के बरदान में होगा।"

नारदजी ने उन दोनों को चुप कर के कहा जिन्वामित्र ने कहा 'हे मुन्दरी धारणा को जब समस्त भक्त धारणा बंद कर दें तो तुम धारणा। हूँ एक बात का ध्यान रखना कि जिन्वामित्र की कथा को गम्भीरतापूर्वक पढ़ कर धारणा।' इनके बाद जिन्वामित्र ने उसे धारणाकी दी 'यदि तुमने किसी से भी यह कह दिया कि योगीधर के मुक ग

वार्ता की है तो हम तुम्हें भयंकर धाप दे देंगे बिनासे तुम्हारे कभी भी सतान नहीं होगी।

“सुबती ने एक बार ठिठर उसके पैर बचाए धीर बली गई।”

इस कथा में सबको मानन्द धा रहा था घट. विरेव अपने मन के भ्रंभा को रोके कथा सुन रहे थे, मारबबी सिपरेट कतम कर चुके थे उसे बुझाते हुए उम्हने पुन कहना प्रारंभ किया

“मैं अपने हृदय के बबडर को नहीं रोक सका। मैं ने उस धंठूठी को मुंह से बाहर निकाला धीर विरबामिभ का कंभा पकड़ कर प्यार से पूछा ‘महामुनि’ इस सेवक को पहचाना ?” धीक कर विरबामिभ बोले, “कौन—मारब भाई ! तुम यहाँ कैसे ?”

“भाई, तुम्हें खोजने। तुपके से कहीं मौप हो गये थे ?”

“खो ! मैं तो जहाँ लीग्यर्भ देखता हूँ वहाँ सर्वस्व विस्मृत कर क नाम उगता है तुम तो जानते हो बंधु—यश हूँ न अपने संस्कारों को धीम नहीं रपाग सकता।”

“पर, भैया, तुम यह कैसे जान जाते हो कि घाने वाली सुबती तुम्हरे है वा नहीं ?” मैंने उरमुकता से पूछा। “तुम्हारी तो धाँके बम्ब थी।

विरबामिभ ने बिहस कर कहा ‘मेरी परमपालकी के बोले एक रस्ती बंधी हुई है। उस रस्ती को बाहर मेरा नेता जब दो बार धीबता है तो मैं इस रहस्य को जान जाता हूँ।”

“बाह भाई बाह ! क्या ठग है तुम्हारे !”

“तमी तीन सुबकों ने कुफा में प्रवेद्य किया। मैंने तुरन्त धंठूठी अपने मुंह में रबी धीर मौप हो गया। विरबामिभ ने तुरन्त समाधि सपाई। ये सड़के बड़े उद्द धीर धाबारा जाल पड़ते थे। रहने उन तीनों के धोवीराड को पार्यंठी जूल बडभाज डीपी की उभमाएँ प्रधान की धीर घन्ठ में उम्हने तप किया कि इस की बाड़ी में घाग लना बेनी चाहिए।

“यह सुनकर मैं तो सिर से पाँव तक काँप गया— भाव योपीराज की खैर नहीं।

‘बिस्वामित्र घोर जड़ बनकर बैठ गए। लड़के धर्म-विद्वद् बर्षा कर रहे थे। एक लड़के ने बड़ कर बाली में से दस-दस रु पाँच मोट चठाकर अपनी जेब में रख लिए। फिर बोला ‘भाव तकरीह जरा प्र म से बरोगे।

‘तभी कुमरे ने इधर उधर ठाक कर बिस्वामित्र की दाढ़ी को माथिस दिन्ना ही बस फिर क्या था। पुष्पार फेंक कर साधू बाबा भागे लोयों ने समझा कि यह कोई साधू बाबा का जमत्कार है, इसलिये वे घाग कुम्भन की बिन्ता छोड़ हाथ जोड़ कर जनकी बिगती करने लगे पर दाढ़ी देर तक जब योगीराज का रोना चीखना बन्द नहीं हुआ तो लोग सत्य के सत्य से परिचित हुए।

मारद जी ने बिदेव की दृष्टि बचाकर अपने गालों पर झूठ मगाकर साँसुओं का प्रदर्शन किया। फिर बोले ‘डाक्टरों ने कहा है कि घब साधुजी की दाढ़ी में बीच-बीच में मड़ने रहेंगे यह सुनकर बिस्वामित्र बन्धे की तरह बिलस पड़े।”

‘रोने दो रोने दो जैसा कर्म करोगे जमा ही फम पाएंगे।”

‘यह कितनी हेय बात है कि जहाँ मारी देखो वहाँ जप-तप भूमकर बापाचार करने उतर पड़े। हे राम !” बह्या ने परजाताप प्रकट किया।

बिष्णु ने कुछ कहने के लिए अपना मुँह जोसा ही वा कि नीचे से ओर की घाब जै धाई। ‘पत्रह प्रपस्त त्रिदावार।” ‘महात्मा पापी पी जय। “हमारे शैता त्रिदावार।”

बिष्णु भयबाग म भी जी की जय सुनकर पाँव पटक कर बोले ‘हजार प्रपमान ! हमारे होठे हुए पृथ्वी के प्राणी की जयजयकार ! हम माँधीखी पर मानहानि का मामला स्वर्ग में जमायेंगे कि देवताओं के होठे हुए जनकी जयकार क्यों ?”

पार्श्व की है तो हम तुम्हें मरकर घायल से बँधे बिनासे तुम्हारे कमी भी संतान नहीं होगी ।'

'बुबली ने एक बार फिर उसके पैर दबाए धीरे जमी गई ।'

इस कथा में सबको ध्यानपूर्वक ध्याया जाता था कि जिस धन के अभाव में रोके कथा सुन रहे थे मारवाड़ी सिगरेट खत्म कर चुके थे उसे बुझाते हुए उन्होंने पुनः कहना प्रारंभ किया

मैं अपने हृदय के बाँधों को नहीं रोक सकता । मैं ने उस घेनु की जो मुझे बाहर निकाला धीरे बिस्वामित्र का कथा पढ़कर ध्यान से पूछा 'महामुनि' इस सेबक को पहचाना ?' चौंक कर बिस्वामित्र बोले 'शौन—नारद भाई ! तुम यहाँ कैसे ?'

'भाई, तुम्हें सोचने । तुमसे से कहीं सोप हो गये थे ?'

'शौन ! मैं तो यहाँ सौम्य रहता हूँ यहाँ सर्वस्व विस्मृत कर के मर चुका हूँ तुम तो यहाँ हो बँधु—यहाँ हैं न अपने संस्कारों को धीरे नहीं त्याग सकता ।'

'पर, क्या तुम यह कैसे जान जाते हो कि जाने वाली बुबली सुन्दर है या नहीं ?' मैंने उत्सुकता से पूछा । 'तुम्हारी तो धारें बन्द थी ।

'बिस्वामित्र ने बिहस कर कहा 'मेरी परमपत्नी के नीचे एक रस्मी बँधी हुई है । उस रस्मी को बाहर निकालने का जब दो बार पीछता है तो मैं इन चहस्य को जान जाता हूँ ।'

'बाहू भाई बाहू ! क्या ठाठ है तुम्हारे !'

'तभी तीन मुन्नों ने कुपल में प्रवेश किया । मैंने तुरन्त घेनु की धपने मुँह में रानी धीरे पीप हो गया । बिस्वामित्र ने तुरन्त समाधि समाई । वे लड़के बड़े उड़ते धीरे पाबायल जान पड़ते थे । पहले उन तीनों ने योगीश्वर को पार्श्वी कुर्न बचसाय डीमी की उपमाएँ प्रदान की धीरे धमक में उन्होंने तब किया कि इस की बाड़ी में पाप तथा वेनी चाहिए ।

“यह सुनकर मैं तो सिर से पाँव तक काँप गया— घाब मोपीराब की खेर नहीं।

‘बिस्वामित्र घोर जड़ बनकर बैठ गए। लड़के भ्रम-विस्तृत चर्चा कर रहे थे। एक लड़के ने बड़ कर घानी में से बस-दस के पाँच नोट उठाकर अपनी जेब में रख लिए। फिर बोला आज तकरीबु जरा प्रम से करेंगे।

‘ठमी कुनर ने इधर-उधर ताक कर बिस्वामित्र की दाढ़ी को माथिम दिना की बस फिर क्या था ! पुप्रार फेंक कर साधु बाबा भाये लोपों न समझा कि यह कोई साधु बाबा का चमत्कार है इसलिये वे आज बुझान की पिन्टा छोड़ हाथ जोड़ कर उनकी बिनती करने लगे, पर दाढ़ी बेर तक जब योगोराब का रोना चीखना बन्द नहीं हुआ तो मोय सत्य के तम्य में परिचित हुए।

नारद जी ने बिदेव की दृष्टि बचाकर अपने गामों पर झुक लयाकर धीमुधों का प्रदर्शन किया। फिर बोले ‘डाक्टरों ने कहा है कि अब साधुजी की दाढ़ी में बीप-बीप में यह रहने यह सुनकर बिस्वामित्र बच्चे की तरह बिमल पड़े।’

“रोने दो रोने दो जैसा कर्म करेंगे वैसा ही फल पाएँगे।

‘यह जितनी हैस बात है कि जहाँ नारी देखो वहाँ जप-तप भूलकर पापाचार करने उतर पड़े ! हे राम !’ ब्रह्मा ने पदधाताप प्रकट किया।

बिष्णु ने कुछ बहने के लिए अपना मँह खोला ही था कि नीच से खोर की घाब जें घाई। ‘पन्द्रह अपस्त त्रिदाबाद !’ ‘महात्मा गाँधी जी जय !’ ‘हमारे नेता त्रिदाबाद !’

बिष्णु भगवान य भी भी की जय सुनकर पाँव पटक कर बोले, ‘हमारा अपमान ! हमारे होते हुए पृथ्वी के प्राणी भी जयजयकार ! हम गाँधीजी पर मानहानि का कामला स्वयं में बनायेंगे कि देवताओं के होते हुए उनकी जयकार क्यों ?’



नारदजी ने बायसन के तारों को झनझना कर निवेदन किया। सब  
 पुम बदन चुका है। सब उसकी जयकार होगी जो पनटाजनार्दन में सम्ये  
 भाषण देना जानता है। मुन्दर योजनार्ण बनाना जानता। सहीशों के नाम  
 की पुहार्य देकर घपना उम्बू सीना करना जानता है। यह घपना भारत  
 वष है। जहाँ नाम में पुमार उगा कर बोंपी सब को चपना दे सकता है।  
 बही जय-जयनार कराना बिलुप्त सरल बात है। प्रच्छा बंदे को प्राज्ञा  
 दीजिए, घबर हो रही है। प्रणाम।" नारदजी बायसन पर "ए मेरे दिन  
 बही घोर नम गम की दृमियाँ से दिन भर गया। की बुन बजाव  
 बजाने बिड़ता मन्दिर की घोर प्रस्थान कर गए।

